प्रश्न हमारे उत्तर दादी जी के

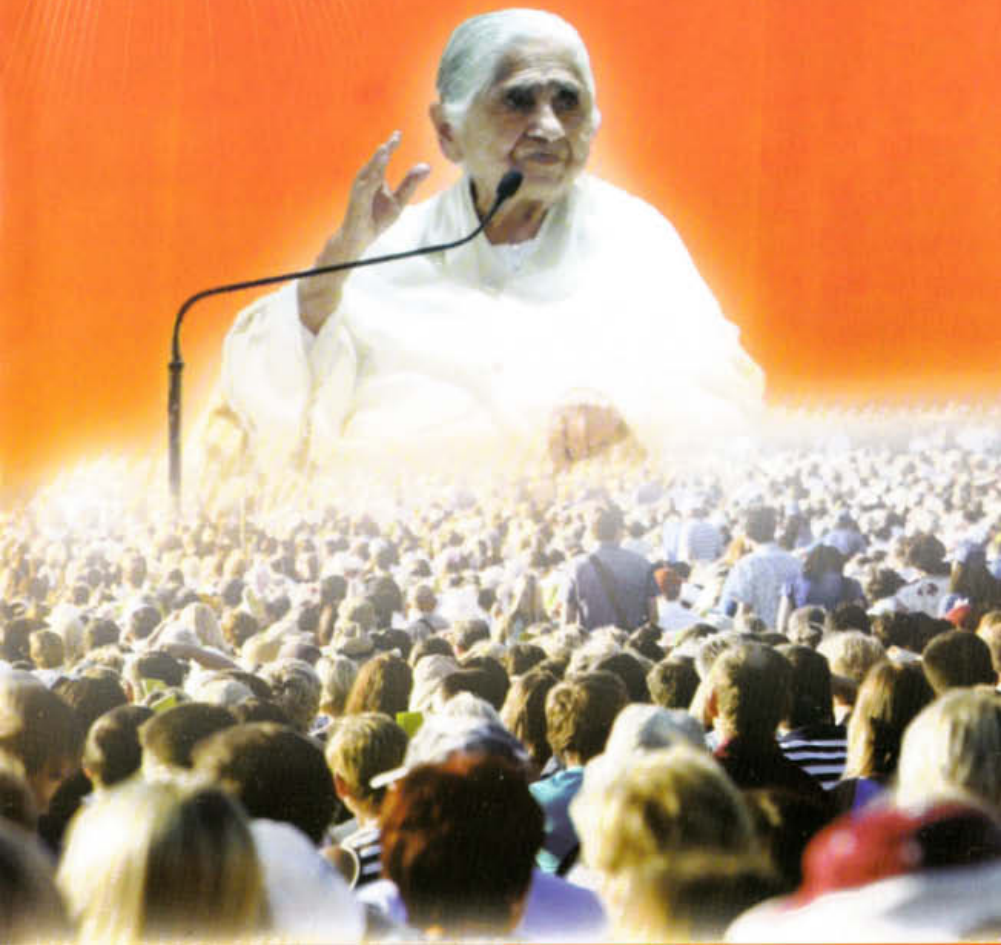

प्रश्न हमारे,
उत्तर दादीजी के

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: पाण्डव भवन, आबू पर्वत,
राजस्थान, भारत

प्रकाशक की ओर से

परमात्मा पिता से अनेक वरदान प्राप्त, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के पास अनुभव रूपी मोतियों का ऐसा खज़ाना है कि वे कैसे भी प्रश्न और कैसी भी समस्या का समाधान चन्द शब्दों में तुरन्त कर देती हैं। आप परमात्मा शिव के दिल की दुलारी, सदा एकाग्र मन और एकरस स्थिति में रहने वाली हैं। ईश्वरीय महावाक्यों से दिल का प्रेम तथा मन की शक्ति की विशेषता के कारण आप में एक्स्ट्रा ऊर्जा दिखाई देती है।

आप निमित्त भाव, निर्माण भावना तथा निर्मल वाणी की धनी हैं, सहज सफलतामूर्त हैं। सर्व व्यक्त बातों से मुक्त, विश्व की आधारमूर्त हैं। हर संकल्प सफल करने वाली, जमा का खाता भरपूर करने वाली, अपने स्नेह में परमात्मा को भी बांधने वाली हैं।

आप जब भी ज्ञान-सभा में आती हैं तो भाई-बहनों से कुछ पूछने के लिए अवश्य कहती हैं। आपको दोनों तरफ से संवाद हो, यह बहुत अच्छा लगता है। भाई-बहनें भी आपके उत्तरों से हर्षित और सन्तुष्ट हो जाते हैं और जीवन-भर के लिए उस शिक्षा-समझानी को सम्भाल कर रख लेते हैं।

'ज्ञानामृत' पत्रिका में जनवरी, 2010 से लगातार आपके प्रश्न-उत्तर प्रकाशित होते आ रहे हैं। भाई-बहनों की माँग रही है कि इन प्रश्न-उत्तरों को पुस्तक का आकार दिया जाए तो आध्यात्मिक उन्नति में काफी मदद मिलेगी। इसी उद्देश्य से 'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। ज्ञान-योग-धारण-सेवा – ईश्वरीय ज्ञान के इन चारों ही विषयों की गहराई को इनमें छुआ गया है। अधिकतर उत्तर जीवन को ऊँचा और धारणामूर्त बनाने की ओर इशारा करते हैं। ऐसे उत्तर भी हैं जो निर्मल ईश्वरीय प्रेम का झरना-सा बहाते हैं जिसमें उतरकर आत्मन् ताजगी और शक्ति से भर उठती है।

परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का रस, समय का सदुपयोग, चार्ट रखने की विधि, उड़ती कला, ज्वालामुखी योग, निराशा से मुक्ति, मनसा सेवा, रूहानी नशा, मायाजीत, तीव्र पुरुषार्थ, अन्तर्मुखता, सच्चाई, निर्भयता, विचार सागर मंथन, विकर्म विनाश, बुद्धि का समर्पण, एकव्रता, एकता, आत्म अभिमानी स्थिति, दुआएँ, सन्तुष्टता, क्षमा, बीती को भूलना, लगावमुक्त, अशरीरी स्थिति, व्यर्थ से मुक्ति, पुण्य का खाता, महीन बुद्धि, सूक्ष्म पाप, माया, संस्कार परिवर्तन, साइलेन्स की शक्ति, सफलता के सूत्र आदि अनेक विषयों को इनमें शामिल किया है। ज्ञान मार्ग पर चलते हुए मंजिल तक सुरक्षित पहुँचाने में उनके ये अनुभवयुक्त उत्तर बहुत मदद करते हैं।

कई भावना प्रधान भक्त आंखें बन्द करके अपने धर्मग्रन्थ को खोलते हैं और जो पन्ना निकले उसे ही उस दिन के लिए भगवान का अपने प्रति आदेश मान उसका पालन करते हैं। पाठकगण यह युक्ति इस पुस्तक के लिए भी अपना सकते हैं। पुस्तक को खोलने पर जो उत्तर निकले उसे अपने प्रति ईश्वरीय मार्गदर्शन समझकर अपने को धन्य-धन्य महसूस कर सकते हैं।

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि इस सुरुचिपूर्ण पुस्तक को पढ़ने में भाई-बहनों को आनन्द के साथ-साथ शक्ति भी अवश्य मिलेगी। वे आध्यात्मिक मार्ग पर निर्विघ्न रूप से तीव्र गति से आगे बढ़ सकेंगे और बापदादा का नाम बाला करेंगे।

– ब्र.कु.आत्मप्रकाश

प्रश्न:1- बाबा कहते, अनुभूति कराओ, इसके लिए क्या कदम उठाएँ?

उत्तर:1- जब तक खुद को अनुभव नहीं, दूसरों को करा नहीं सकते। इसलिए अंदर से इस बात का शौक होना चाहिए कि जो बाबा सिखाता है, मनन करके उसका मैं स्वयं अनुभव करूँ। हमको अपना बचपन याद आता है। जब आत्मा का ज्ञान पहले-पहले मिला तो बात अंदर जँच गई कि मैं भी आत्मा हूँ, अन्य भी आत्मा हैं। इससे दृष्टिकोण बदल गया। फिर दूसरों को मेरे से अनुभव होने लगा। देहभान की सोच दूसरी होती है। बिना ज्ञान के, दृष्टि में देह, दुनिया, संबंध और पदार्थ ही रहते हैं। आत्मा रूप में स्थित होने से दृष्टि बदल जाती है। जब स्वयं को अनुभव हुआ तो सोचा, औरों को कराएँ।

उन दिनों, कोई स्टूडेन्ट सेन्टर पर आया, कोर्स कराया, यह सब होता ही नहीं था। तो अकेले में दीवार के सामने बैठकर निज आत्मा का ज्ञान देती थी। कभी छत पर ऐसा करती थी। जैसे मैं अनुभव कर रही हूँ, आत्मा क्या है, मैं अच्छी तरह समझ रही हूँ, मन-बुद्धि-संस्कार सहित है, फिर ऐसे है। आत्मा देह

से न्यारी होती है, कितना अच्छा लग रहा है। तो मैं साक्षी होकर कर्म करते इसका अनुभव करती थी। अपने को समझा-समझाकर के किसी दूसरे को दीवार में इमर्ज करके समझाती थी। समझाते-समझाते फीलिंग आने लगी कि दीवार को शान्ति हो रही है। गुम्बज की तरह, हममें से जो आवाज़ निकलता है, सुनाई तो पड़ता है ना! जो हमारा अपना अनुभव है, दूसरों को होगा ज़रूर। आत्माभिमानी होने से यह अनुभूति भी होती है कि पाँच तत्वों वाले शरीर में थी तो मैं भारी थी, आत्म-अभिमानी होने से हलकी हो गई हूँ। हलकी हो गई तो फिर लगता है, मैं चेतन आत्मा सत् हूँ, शान्त हूँ।

जैसे आँख में ज्योति देखने के लिए है, ऐसे ही आत्म-अभिमानी स्थिति में स्थित होते ही आत्मा में रोशनी आ जाती है। यह समझ में आ गया कि इन आँखों से जो कुछ देखती हूँ, वह विनाशी है इसलिए उससे प्रीत नहीं होती है। हमारे मन में जो होता है, चेहरे पर वही आता है और वैसा ही वायुमंडल बन जाता है, दूसरे के अंदर भी वही पहुँचता है। तो एक, मैं आत्मा क्या हूँ, यह अनुभव करना और दूसरा, बाबा के द्वारा प्राप्ति का अनुभव करना। बाबा जो भी शिक्षायें दे रहे हैं कि बच्चे, स्वदर्शन चक्रधारी बनो, दैवी गुणों को धारण करो तो पहले ये सभी शिक्षायें मेरे जीवन में आ जायें, एक भी शिक्षा बाबा की मेरे जीवन से मिस न हो। अंदर से मेरी यह तीव्र इच्छा हो। बाबा की शिक्षायें हमारे जीवन में ऐसी हों जो देखने वाला पूछे, तुमको सिखलाने वाला कौन है और हम उन्हें बतलाएँ कि बाबा है। जीवन ऐसा किसने बनाया? बाबा की शिक्षाओं ने। बाबा मेरे से जो चाहते हैं, वो मैं पूरा करूँ। जब यह इच्छा होती है तो अनुभूति भी होती है। भक्ति में भी जो पक्के भक्त होते हैं, उनकी भावना पूरी होती है। ऐसे ही संगमयुग पर हम भगवान के बच्चे हैं। हम जो भावना अपने व दूसरों के कल्याण अर्थ रखते हैं, वह पूरी होती है। जब बाबा देखते हैं कि मेरा बच्चा अच्छी बातें सोचता है तो बहुत मदद करते हैं।

यदि अपने या दूसरे के प्रति मन में नेगेटिव ख्याल है या संदेह है कि मेरा

यह कार्य होगा या नहीं होगा तो दोनों ही स्थितियों में भगवान की मदद नहीं मिलेगी। माँगने से भी नहीं मिलेगी इसलिए माँगो नहीं पर अपने व दूसरों के लिए अच्छा करो। विश्वास से सोचो, होगा, क्यों नहीं होगा, अवश्य होगा, कोई प्रश्न नहीं है। कब होगा, यह प्रश्न भी नहीं है। भले कल होने वाला हो पर अंदर से मेरा विश्वास कहे कि आज ही होगा। बाबा कहते हैं, जो कल करना है वो आज कर ले और जो आज करना है वो अब कर ले, यह हमें करना है। बाबा कहते हैं, अब नहीं तो कब नहीं। ऐसे हमारे किए हुए अनुभव औरों को मदद करेंगे। बाबा कहते हैं, मुख से बोल कम हों, औरों को अनुभव हो। अनुभव से हम मूर्तियाँ बन जायेंगे। मूर्ति कुछ बोलेगी नहीं लेकिन चेहरा कार्य करेगा। पहले चिंतन चलता था कि औरों को कैसे समझायें पर अब चिंतन चलता है कि अपने को कैसे समझाऊँ। बाबा हमको इशारे से समझा रहे हैं, मैं भी अपने को इशारे से समझाऊँ। इशारे से समझने वाला देवता बन जाता है। समय अनुसार हमको अनुभव होना चाहिए कि हम सो देवता थे और अभी फिर से बन रहे हैं।

प्रश्न:2- मधुबन में रहते ग्रुप की कैसे संभाल करें और संभाल करते भी न्यारे कैसे रहें?

उत्तर:2- हमारा फर्ज कहता है कि मधुबन में अपने ग्रुप का तो ध्यान रखें लेकिन बाबा के जो भी बच्चे आते हैं, वे एक-दो से फायदा ज़रूर उठायें। एक-दो का ध्यान भी ज़रूर रखें और लाभ भी पूरा उठाएँ। ऐसा ध्यान ना रखें कि मेरा ग्रुप है, मुझे बहुत चिंता है। चिंता वाला, फ़िक्र वाला कोई काम न करें। उनको यह हो कि हमारी संभाल पर इतना ध्यान दिया जा रहा है तो हम अपना समय खराब ना करें। अगर किसी को कोई तकलीफ हो तो तुरंत उसका निवारण करें, ऐसे नहीं कि आठ दिन बीत गए, जाने का दिन आया तब उसको सेलवेशन दें। जब हम ग्रुप संभालते थे तो सुबह-शाम पूछते थे, तुम्हें खाने की, पीने की, सोने की कोई तकलीफ तो नहीं है।

बाबा भी चक्कर लगाते थे कि किसी के पास रजाई, तकिया, खटिया की कमी तो नहीं है। एक बार बाबा हिस्ट्री हॉल में मुरली चला रहे थे। मैं आकर बैठी। बाबा मुझे देख रहे थे। मुझे लगा, बाबा मुझे दृष्टि नहीं दे रहे, देख रहे हैं। बाबा ने कहा, यहाँ क्यों बैठी हो? जो यहाँ आये हैं, वे क्लास में बैठे हैं? मैंने देखा, मेरे साथ आये हुए तो बैठे ही नहीं थे। तब से लेकर आज तक ध्यान रखती हूँ कि क्लास में सब हाज़िर हैं या नहीं, नहीं तो बाबा की दृष्टि याद आती है। जब हम स्वयं क्लास में रेग्यूलर रहते हैं तो दूसरों की भी ऐसी संभाल करते हैं। डिटेच रहना माना घूमना-फिरना नहीं, खुद एक्यूरेट रहना। जो मधुबन में आते हैं, वे भी एलर्ट और एक्यूरेट रहकर अच्छी तरह सीखें। इस तरह ध्यान रखना ज़रूरी है। ऐसे भी नहीं कि किसी को डाँट लगाएँ कि क्लास में आता क्यों नहीं, फिर वह भाग जायेगा। प्यार से, अटेन्शन से समझाना है ताकि वो अलबेला ना रहे। कइयों का अलबेलेपन का संस्कार बहुत पक्का है। ज्ञान-योग का इतना अच्छा प्रोग्राम चल रहा है तो बाहर घूमने चले जायेंगे। हमारा काम है, कहो कम पर हम खुद ख्याल रखें कि हमें खुद मिस नहीं करना है।

प्रश्न:3- दूसरों के पार्ट, उन्नति और उनके संबंधों को देखकर ईर्ष्या होती है, उसे कैसे खत्म करें?

उत्तर:3- दूसरों से भेंट करके हम कभी भी अपना भाग्य नहीं बना सकते। हमारे गुणों और कर्मों से हमारा भाग्य बनता है लेकिन ईर्ष्या हमें ऐसे कर्म करने नहीं देती, गुणवान बनने नहीं देती। अच्छे कर्मों और गुणों से कोई भाग्य बना रहा है तो उसे देखकर खुश होने नहीं देती। कोई भाग्य बना रहा है, उसमें गुण हैं, विशेषतायें हैं, बाबा के यज्ञ की सेवा कर रहा है तो मुझे खुशी है। उसको आगे बढ़ता देख अगर मुझे खुशी नहीं होती है तो इसका कारण ईर्ष्या है। मैं अपना भाग्य नहीं बना सकती तो कम से कम दूसरों को भाग्य बनाते देख खुश तो रहूँ। मैं सोचती हूँ, यह काम तो कर रहा है पर इसके अवगुणों को कोई देखता

नहीं, ऐसी क्रिटिकल नेचर ईर्ष्या ले आती है। फिर उसको गिराने की इच्छा होती है। ईर्ष्या वाला कहेगा, मेरे को सब सहयोग दें, माँगने में आगे, देने में कंजूस।

सिंगापुर में एक मैगज़ीन वाले ने इंटरव्यू लेते समय प्रश्न पूछा, क्या तुमको किसी से ईर्ष्या नहीं होती? मैंने कहा, भगवान ने इस जेल से हमें फ्री कर दिया है। मैं भगवान का बहुत शुक्रिया मानती हूँ। अभी तो हमें ज्ञान है पर भक्ति मार्ग में भी हमने यही सोचा कि हरेक अपना कर्म करता है और अपना भाग्य खाता है। भगवान सबका भला करे। तो सबके प्रति अच्छी भावना रखने से अपना भी भला और दूसरों का भी भला हो जाता है। फिर पूछा, क्या तुम्हारे लिए कोई ईर्ष्या रखता है? इस प्रश्न के लिए यह उत्तर आया कि हमारे लिए कोई क्यों ईर्ष्या रखेगा? अगर रखता है तो उसे हमसे जो चाहिए, ले ले। बाबा दाता बैठे हैं। अगर किसी को मेरे वाली कुर्सी चाहिए तो आकर बैठ जाए, मैं पट में बैठ जाऊँगी। सेन्टर चाहिए, ले ले। भाषण के लिए स्टेज चाहिए तो ले ले, कोई बड़ी बात नहीं है, मैं साइलेन्स में बैठ जाऊँगी, बाबा के दिल में बैठ जाऊँगी। जिसको दस-बीस सेन्टर चाहिएँ, स्टूडेन्ट चाहिएँ, ले ले। इसमें ईर्ष्या किस बात की? मैं खुद ही बाबा की स्टूडेन्ट हूँ। जब तक संपूर्ण नहीं बने, स्टडी हमारी पूर्ण नहीं हुई है। ऊँची-ऊँची बातों को छोड़कर, चीप बातों की जेल में अपने को बाँधें, क्यों? अगर ऐसा होगा तो हम आध्यात्मिक रूप से ऊँचा नहीं उठ सकते। इसको चांस मिलता, मुझे नहीं, यह सोचना भी चीप क्वालिटी है। ईर्ष्या वाला सतयुग में आयेगा नहीं। थोड़ी परसेन्ट वाला भी नहीं आयेगा। अभी भले खुश हो जाये अल्पकाल के लिए पर सतयुगी राजाई का अधिकारी नहीं बन पायेगा। किसी से ईर्ष्या करके हम राजाई नहीं ले सकते। सतयुगी राजाई है ही सत्य से राज्य करने के लिए। बाबा कहते हैं, बच्चे, पहले स्व पर राज्य करो। हमारे अंदर घटिया क्वालिटी का संस्कार एक परसेन्ट भी न रहे। अगर कोई मेरे से ईर्ष्या करता, उसे देख दुखी होना, यह भी घटिया क्वालिटी

है। अपने पुरुषार्थ की क्वालिटी फर्स्टक्लास बनानी है। चेक करना है, मेरे पुरुषार्थ की क्वालिटी कैसी है? फर्स्ट, सेकेण्ड या थर्ड? किसी से भेंट करके पुरुषार्थ करेंगे तो सेकेण्ड, थर्ड में चले जायेंगे। फालो ब्रह्मा बाबा को और शिव बाबा को। और बातें बुद्धि में रखनी नहीं हैं। जो सच्चाई-सफाई से पुरुषार्थ करता है, वह इन सब बातों से मुक्त हो जाता है। ईर्ष्या का बंधन सबसे कड़ा है, जो संबंध में रूहानियत व स्नेह से वंचित कर देता है। ईर्ष्या, ना स्नेह देने देती, ना लेने देती। मुझे बाबा से जो मिला है, वह देना है। सतयुग तो बाद की बात है, अभी जीवनमुक्त रहें, जीवन में किसी बात का बंधन ना बाँधें, कोई इच्छा, ममता न हो।

प्रश्न:4- यदि संगमयुग पर कोई काम विकार को नहीं जीतता पर अन्य गुण अपनाता है और सेवा भी बहुत करता है तो क्या वह सतयुग में जायेगा?

उत्तर:4- असंभव। जो निर्विकारी नहीं बनता, वह सर्वगुणसंपन्न कैसे बनेगा? निर्विकारी माना किसी भी विकार का अंश ना रहे, उसमें भी काम तो महान शत्रु है। अगर महान शत्रु पर जीत नहीं पाई तो क्रोध, लोभ, मोह भी नहीं छोड़ सकता। काम को नहीं जीत सकता लेकिन सोचता है, मैंने क्रोध, मोह को जीत लिया, वास्तव में जीता नहीं, वे बैठे हैं। बाबा कहता है, काम बादशाह है और क्रोध वज़ीर है। बच्चू बादशाह, पीरू वज़ीर। जब राज्य चल रहा है मुख्य विकार रूपी शत्रु का तो वह सतयुग में आने कैसे देगा। सतयुग वाले भी उसे आने नहीं देंगे। कहेंगे, वहीं बैठ। पहले शत्रु को, पहले मार तभी देही अभिमानी स्थिति बनेगी। अगर इसको नहीं जीत सकता तो इसका अर्थ है देह-अभिमान है। देह-अभिमान को छोड़ो, देही अभिमानी स्थिति में रहकर सर्वगुणों को धारण करो। मान लो, वह गुस्सा नहीं करता, मीठा बोलता है पर अंदर शत्रु बैठा है तो ये गुण किस काम के? ये गुण स्वयं को खुश करने के लिए हैं पर बाबा को खुश करने के लिए नहीं। बाबा को खुश करने के लिए योगी बनो, पवित्र बनो। पहले पवित्र बनो तो योगी बनेंगे।

प्रश्न:5- किसी के साथ संबंध ठीक नहीं, उसका कारण और परिणाम क्या है?

उत्तर:5- अगर किसी के साथ संबंध ठीक नहीं तो समझ की कमी है। उसका योग पाई भी नहीं लग सकता। जिसका एक के साथ भी थोड़ा शत्रुता भाव है, वो आत्मा अपनी शत्रु है, वो भगवान को अपना मित्र बना नहीं सकती है। किसी के साथ शत्रुता हो, भले मुख में ना हो, मन में हो, दिल में उसका दर्द हो, उसका नाम सुनते ही घबराहट हो जाये, उसका मुँह देखने से घबराहट हो जाए, ऐसा कोई महान योगी हो तो हाथ उठाए। कोई नहीं है ना।

प्रश्न:6- देह का भान पूरा-पूरा त्याग हो जाये, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए?

उत्तर:6- बाबा ने थोड़े शब्दों में इशारा दे दिया है। बाबा के समर्पित बच्चों ने बहुत त्याग किया है। जब अज्ञानता है तब होता है अहंकार, जब ज्ञान में आते हैं तो अभिमान, जो बहुत काल का है, वो दुख-सुख, मान-अपमान में समान रहने नहीं देता। अभिमानवश फीलिंग आ जाती है दुख की या अल्पकाल के सुख के आकर्षण की। जब देहभान से परे रहने के बहुतकाल के अभ्यासी होंगे तो समझ में आयेगा कि यह अभिमान है, अभिमान किस प्रकार का होता है, यह अनुभव होता है अच्छी तरह से। फिर अटेन्शन रखते हैं। जब देह के भान से परे हुए तो देह से ताल्लुक रखने वाली सब बातें जैसेकि कर्मेन्द्रियों की आकर्षण अपने आप खत्म हो गई। मन में इच्छा जो पैदा होती है वो भी खत्म हो गई। जब समर्पित होते हैं तो कहते हैं, तन-मन-धन से समर्पित। जब तन से कहा माना मन भी बाबा का हो गया। मन से कहा, मन ने माना कि मुझे तन से समर्पित होना है। ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को तन दिया, फिर इसे अमानत समझा। जो सच्चा है वो अमानत में ख्यानत नहीं करेगा। दिया या छोड़ा तो वापस नहीं लेंगा। पवित्रता, सत्यता, दिव्यता अपनाई तो अशुद्धि को ना यूज कर सकते हैं, ना वो हमारे पास आ सकती है। हर मुरली में सच्चे पुरुषार्थी को कोई न कोई ऐसी बात अवश्य मिलती है, रोज़ मिलती है इसलिए अच्छी तरह

मुरली सुनें, मुरली पर रोज़ ध्यान दें, पढ़ें। दिन-भर ध्यान दें तो जो बाबा चाहते, हो सकता है। यह कभी मत सोचो कि कैसे करूँ, हर मुरली में बाबा कहते हैं, ऐसे करो। कैसे शब्द, सच्चे पुरुषार्थी को कहना नहीं है। जिसको नहीं करना है वो कहता है, कैसे करूँ? जिसको करना है वो समझता है कि जो बाबा कहते हैं, वो हो सकता है।

प्रश्न:7- पुरुषार्थ में सफलता के लिए योग के साथ क्या मनन करना भी ज़रूरी है?

उत्तर:7- योग हम क्यों लगा रहे हैं, पूछो अपने से? योग लगा रहे हैं दिव्य बुद्धि दाता के साथ। यदि बुद्धि मेरी दिव्य नहीं है तो योग क्या है, क्या मैंने योग को समझा? योग सिर्फ (थ्योरी रूप में) समझने के लिए नहीं है परन्तु जिसकी हम संतान हैं, उसके साथ हमारे सर्व संबंध हैं। उन सर्व संबंधों की प्राप्ति मुझे योग में होनी चाहिए। सिर्फ शान्ति मुझे मिले, इसलिए योग नहीं लगा रही हूँ। शान्ति तो मेरा स्वधर्म है। अशान्त होने की आवश्यकता नहीं है। बाबा को कहेंगे, बाबा, मुझे शान्ति दो। बाबा कहेगा, बच्ची, शान्ति तो तुम्हारा स्वधर्म है। फिर प्रश्न है कि बाबा को क्यों याद करते हैं, तो इसके लिए बाबा कहते, बाप समान बनो। अंदर विदेही रहने की गुप्त प्रैक्टिस हो तो बाबा से सर्व संबंधों की शक्ति मिलती है जिससे महसूस होता है, मैं विजयी बनती जा रही हूँ, सफलता मिलती जा रही है। ऐसे नहीं लगता, सफलता कब होगी, अभी तक विजय नज़र नहीं आ रही है। यदि विजय नज़र नहीं आती तो उसका सूक्ष्म कारण है, सर्व संबंधों की शक्ति अंदर जमा नहीं है और वो काम भी नहीं कर रही है। दूसरा, जो हमारी वृत्ति और दृष्टि है, ज्ञान के आधार से, उसकी चेकिंग की आवश्यकता है, तभी सफलता है। सूक्ष्म वृत्ति-दृष्टि से समझ लिया कि मैं मेहमान हूँ और महान आत्मा हूँ। शुरू-शुरू में जब कई बार छोटी-सी भूल भी करते थे तो बाबा कहते थे, बच्चे, तुम योगयुक्त नहीं हो और हम सचमुच बाबा की इस शिक्षा को महसूस करते थे क्योंकि योगयुक्त माना युक्तियुक्त।

योगयुक्त माना पहले ज्ञानयुक्त। बाबा से संबंध पूरा है तो हर बात में युक्तियुक्त होने चाहिएँ। हर बात के राज़ को पूरा समझा हुआ होना चाहिए। मूँझने या घबराने वाला चेहरा हुआ माना राज़ को समझा नहीं है। योग माना बाबा से जो प्राप्ति या संबंध है, उसकी समझ और वह समझ काम में आए। पुरुषार्थ में सफलता का अर्थ है कि बाबा हमें साथ दे रहे हैं पर हम भी अटेन्शन से साथ ले रहे हैं। सूक्ष्म अभिमान को छोड़, देह के भान से परे रहकर अंदर की स्थिति हमें साथ दे रही है।

प्रश्न:8- जो बात जैसी है, वैसी दिखाई तो पड़ती है, इस अनुसार झूठी बात, झूठी तो दिखाई देगी ही, फिर क्या करें?

उत्तर:8- क्यों दिखाई देगी? ये आँखें किसलिए हैं, ब्रह्मा बाबा की आँखें किसलिए हैं? मैंने शरीर दिया बाबा को, तो आँखें किसलिए हैं? जब आप योग में बैठते हो तो सबको कैसे देखते हो, उस समय देखेंगे क्या कि यह ऐसा है, यह वैसा है। नहीं देखेंगे ना। फिर कहते हैं, उस समय तो वह अच्छे से बैठे हैं, तो अच्छे ही दिखेंगे। जब आप अपने को अच्छा देखेंगे तो अन्य भी आपको अच्छे दिखाई देंगे। सन् *1981* में दीदी हमारे पास लंदन आई थी। मुझे बीमारी के कारण ब्रश करना भी मुश्किल था। फिर भी चेहरे पर खुशी थी। अंदर चिन्तन था, मैं आत्मा बाबा की हूँ, लगता नहीं था, कैसे करूँ, सब हो जाता था। बाबा की मदद मिल जाती थी। जब बाबा दृष्टि देते हैं, उस घड़ी हमारी सबकी स्थिति कितनी अच्छी होती है। मैं भी सबको बाबा जैसी दृष्टि से देखूँ – ये सब बाबा के बच्चे हैं, समर्पित हैं, ब्राह्मण हैं। मेरे को एक-एक के लिए रिस्पेक्ट हो। चमड़ी को देखने की खराब आदत है। जब तक आत्मा को देखने की आदत नहीं है, तो समझो आत्म-दृष्टि नहीं बनी है। चलते-फिरते, खाते-पीते उसका चेहरा और नाम-रूप याद आयेगा। फिर सोचो, मेरा योग कैसा है? योग क्या करती हूँ? उससे मेरा क्या कल्याण है? क्या वो घड़ी मेरी सफल है? बाबा कहते, समझ के आधार से वैराग चाहिए। यह मेरे काम की बात नहीं, मुझे नहीं

देखनी है। जरूरत ही नहीं है, फुर्सत ही नहीं है।

प्रश्न:9- किसी से शत्रुता ना भी हो पर व्यवहार काम चलाऊ हो, क्या तब भी योग नहीं लगता?

उत्तर:9- यह भी क्या है? मैं आपसे काम चलाऊ होऊँगी तो बाबा भी मेरे साथ काम चलाऊ होंगे। मुझे डर लगता है, मैं जैसा इसके साथ करूँगी, बाबा भी मेरे साथ ऐसा ही करेंगे। बाबा का जितना मेरे प्रति प्यार है, जितना मुझे दे रहे हैं, मैं अंदर से सोचूँ, इनको भी इतना ही मिले तो बाबा गुप्त मेरे से प्यार करेंगे कि बच्ची का दिल तो साफ है ना। दया दृष्टि तो इसमें है ना। दया के बिना लव कैसे हो सकता है? दया का अंश नहीं है तो अपनी उन्नति के लिए अपने पर भी दया नहीं करते। अपने प्रति भी बड़े कठोर हैं।

प्रश्न:10- चिड़चिड़ेपन का, गुस्से का कारण कई बार अंदर भरी हुई कोई पुरानी बात या पुराना दुख होता है, उसे निकालने की विधि क्या है?

उत्तर:10- एकांतवासी और अंतर्मुखी बनकर, अनुभूति द्वारा अपने को परिवर्तन करने का पुरुषार्थ किया ही नहीं है जो अपने को देखें। मुझ आत्मा में अनेक जन्मों का विकारी कर्मबंधनों का दुख भरा पड़ा है, वो ज्ञान, समझ, योग तथा भगवान के प्यार से खत्म नहीं किया है। अपने पर मेहनत नहीं की है इसलिए अंदर सफलता नहीं, खुशी नहीं इस कारण चिड़चिड़ापन छूटता नहीं। वाणी में रूहानियत और मधुरता हो तो रूह में खुशी है ना। अगर रूह की सफाई नहीं हुई है, तो असली शान्ति और प्रेम इमर्ज नहीं होता है। कई पूछते हैं, समय, भाग्य और भगवान – तीनों में से किसने मुझे शान्ति का अनुभव कराया। एक नहीं, तीनों बातों की जिसे अच्छी तरह कद्र हो वो अपने को अंदर से शुद्ध, शान्त बना लेता है। बीती बातें क्यों घटी थीं? देहभान आया था, माया का वार हुआ था पर अब वो पार्ट पूरा हुआ है, मैं मरजीवा हो गई, अब आत्मा का परमात्मा से मिलन हुआ है तो खुशी, शक्ति आ गई। खुशी और शक्ति जिसके पास है, उसके पास चिड़चिड़ापन और थकावट नहीं आ सकती। थकावट प्रेमस्वरूप,

शान्तस्वरूप बनने नहीं देती। थकावट अब के कामों से नहीं हुई है, यह बहुत पुरानी है। अंदर से महसूसता हो, मुझे इसे मिटाना है। मिटाने में समय क्यों लगता है? दूसरों का जो व्यवहार है ना, उस पर टीका करते हैं जैसे कि मैं बड़ी हूँ, इनको मेरे साथ ऐसे नहीं चलना चाहिए। इसी प्रकार के ख्यालों में हूँ ना तो समय तो इन बातों में दे दिया, अपने आपको देखा ही नहीं। ये छोटे या बड़े क्या कर रहे हैं – यदि मैं इन्हीं ख्यालों में हूँ तो गुस्सा ही काम करेगा।

गुस्से के कारण बड़ों का नुक्स निकालेंगे। समान वाले को आगे बढ़ता देख सहन नहीं करेंगे, छोटों को कहेंगे, ऐसे नहीं, वैसे करना चाहिए। फिर क्या हाल होगा? यज्ञ में चाहे छोटे हैं, चाहे निमित्त बड़े हैं, सबके लिए सावधानी है। बड़े हों या बीच वाले हों, किसी की गलतियों को सुनना, देखना, वर्णन करना या गलतफहमी में खुद भी रहना – यह नहीं हो। पूरा समझने से पहले ही सोच लेना कि इसने जो बोला, वह रांग ही बोला है – यह ठीक नहीं। अरे, आप पूछो तो सही ना। अंदर की धरनी की सफाई नहीं है, किचड़ा धरती में पड़ा ही हुआ है, वो साफ किया ही नहीं है, तो बीज क्या बोयेंगे, फल क्या निकलेगा। बाबा ने कहा है, संकल्प है बीज। सीज़न है अच्छा बीज डालने का। पुराना खत्म कर धरती को साफ कर अच्छा बीज डालना है। इतना तो मैं सोचूँ ना। भले 8 घंटे भी बाबा के कमरे में बैठकर योग करो। कहेंगे, योग अच्छा लगा। अच्छा है परंतु अंदर सफाई करना ज़रूरी है। पहले सफाई, फिर बाबा के साथ सच्चाई भरा स्नेहयुक्त संबंध। व्यवहार और संकल्प में शुद्धि है तो सत्यता काम करेगी। योग माना ही हर समय अपनी चेकिंग। बाबा के पास आकर बैठो, हमारे व्यवहार में किसी के भाव स्वभाव का प्रभाव न हो। बाबा समान तो दूर की बात, पहले तो मेरे में कोई कमज़ोरी ना रहे, अपने पर अटेन्शन रखकर इतना अच्छा मैं परिवर्तन लाऊँ। दूसरे क्या सोचते, बोलते – उन बातों पर मैं ध्यान न दूँ। थोड़ा गंभीरतापूर्वक, सच्चाई वाला पुरुषार्थ चाहिए।

प्रश्न:11- हम योगाभ्यास अच्छे-से करते हैं परंतु फिर भी व्यवहार में आते कई बातें ऊपर-नीचे हो जाती हैं, बोल ऐसा निकल जाता है, तो क्या इसे योग में सफलता की कमी कहेंगे?

उत्तर:11- अभिमान हमें स्वीट बनने नहीं देता। संबंध में आते दूसरे की कमी जो बहुतकाल से देखी है ना, हम उसे भुलाते नहीं हैं। उसी अनुसार व्यवहार करते हैं, यह हमारी कमी है। जैसे मैं कहूँगी, मैं 10 साल से या 5 साल से इनके साथ रहती हूँ, मैंने इनको देखा है। देखा है तो क्या देखा है? मैंने भी दादियों को कई वर्षों से देखा है। यदि मैं किसकी भी कमी देखती हूँ, चाहे 30 साल वाला या दो साल वाला या 10 दिन वाला, कमी देखने की आदत है तो रूहानियत, सच्चाई, प्रेम मेरे पास होगा ही नहीं। मुझे सच्चाई, रूहानियत, प्रेम से संपन्न और संपूर्ण बनना है। और सब भी संपन्न बन जाएँ, यही मेरी भावना हो। इसके अलावा और कुछ सोचना, देखना उससे पाप कटेंगे नहीं पर पाप बनेंगे। पुराने पाप याद से कटेंगे। हम 77 साल से इकट्ठे हैं पर किसी की भी कमी मेरे को पता ही नहीं है। न पता रखने की ज़रूरत है। पता रखने से और ही पाप बन जाते हैं। भूल दूसरे की, देखूँ मैं, वह मेरे में आ जायेगी। फिर मेरे व्यवहार में न रूहानियत रहेगी, न प्रेम, न सच्चाई।

प्रश्न:12- सच्चाई वाले पुरुषार्थ से आपका क्या मतलब है?

उत्तर:12- भावना बड़ी अच्छी, वृत्ति बड़ी शुद्ध, व्यर्थ संकल्प किसी के लिए उत्पन्न ही ना हो। जैसे मैं कहती हूँ, यह बहुत अच्छी है परंतु इसमें यह है। 'यह है' मैंने क्यों बोला, क्या जरूरत थी? यह भी एक आदत है। कई प्रकार के सोच और बोल की आदत पड़ गई है। जब तक उस आदत को नहीं बदला है तब तक रूहानियत में रहने की और अव्यक्त व्यवहार में आने की आदत नहीं पड़ती है। कुछ भी किचड़ा इकट्ठा करेंगे, तो मच्छर पैदा होंगे। फिर तुमको ही काटेंगे। संकल्प ही अपने को काटते हैं। दुखी हम ही होते, योग नहीं लगता, रोना भी आता है। कई हैं जो कहते हैं, हमें कुछ नहीं है, फिर भी पता नहीं रोना

क्यों आता है? क्योंकि मच्छर काटते हैं। मुझे कभी रोना ना आए। रोना आए, यह शोभता नहीं है। कई कहते, दबाने से अच्छा है, रो लेना चाहिए। ठीक है, दबाने के बजाय भले रोओ परंतु ज्ञानी तू आत्मा सयाना-समझदार, बात को समझकर समाप्त करे, अंदर दबाए क्यों? दबाना नुकसानकारक है। दबा हुआ होगा, तो बाहर से आप अच्छी दिखेंगी, अंदर से मन खायेगा। मुख्य बात है, एक-दो को हमसे खुशी की प्राप्ति हो। हमारी सच्चाई वाली भावना दूसरे को अवश्य पहुँचेगी, आज नहीं तो 10 वर्ष बाद पहुँचेगी पर मैं भावना चेंज न करूँ, यह व्रत रखूँ। बाबा ने सदा कल्याण की भावना रखी, चाहे कैसा भी बच्चा रहा हो। स्नेह और कल्याण की भावना में फर्क ना पड़े, यह ध्यान हमको भी रखना है।

प्रश्न:13- कभी हमसे भूल हो जाती है, फिर हम उस व्यक्ति से माफी माँग लेते हैं या रात को सोने से पहले बाबा को लिख देते हैं, तो क्या हमारी गलती माफ हो जाती है?

उत्तर:13- कई लोग भूल हो जाने पर असल में महसूस नहीं करेंगे, कारण बतायेंगे कि इस कारण से मैंने बोला। यह गलत है। एक बार मेरे से किसी ने प्रश्न पूछा, "किसी ने मेरे से राय पूछी थी, मैंने उसको जो राय दी, उससे उसको दुख मिला, धोखा मिला। अब मैं सोचता हूँ, मेरे कारण उसे दुख आया। फिर मैं सोचता हूँ, उससे जाके माफी माँगूँ, क्या मुझे वह माफ करेगा? फिर मैंने भगवान से माफी माँगी, भगवान भी मुझे माफ नहीं करता है, मैं क्या करूँ?" मैंने कहा, तुम असल महसूस करते हो कि तुमने जानबूझकर नहीं किया है। वो घड़ी कोई ऐसी थी जो तुम्हारे मुख से ऐसी बात निकल आई। तुम्हारी अंतरात्मा कहती है, ऐसा मैंने जानबूझकर नहीं किया था। अगर जानबूझकर किया तो हजार बार उससे माफी माँग। यदि जानबूझकर नहीं किया है तो उस आत्मा को स्वत: आयेगा कि इसने जानबूझकर नहीं किया है, मेरा ही कोई हिसाब-किताब था। परंतु वन्डर तो यह है कि इसके बाद उसने उस आत्मा से बात की। भगवान माफ कैसे करेगा, हिसाब-

किताब तो उनका आपस में है ना। खुद को वह माफ कैसे करे, जब देख रहा है, मेरे कारण उसे दुख मिला है। भगवान से माफी तब मिलती है जब मैं अंतरात्मा से पूछूँ और प्रण करूँ कि फिर से मेरे से ऐसी गलती ना हो। मम्मा कहती थी, फिर से भूल ना हो। फिर से की तो भगवान भी माफ नहीं करता है। भगवान से माफी तब है जब खुद को समझें और यह भी समझें कि यह रांग है, मुझे यह नहीं करने का है।

प्रश्न:14- अपने पर कृपा का क्या अर्थ है?

उत्तर:14- चार्ट अच्छा रखना माना अपने ऊपर कृपा करना। बाबा की हमारे ऊपर कृपा है तब तो पढ़ाते हैं। बाबा जो पढ़ाई पढ़ाते हैं उसको अमल में लाना यह हमारा काम है। अमल में लाने वाले के ऊपर बाबा की कृपा है। वह सदा सुखी रहता है, सुख देने बिगर रह नहीं सकता। संकल्प में भी, स्वप्न में भी यह है कि सबको सुख मिले। कौन-सा सुख मिले? दुखहर्त्ता, सुखदाता बाबा ने दुख को खत्म करने का जो सुख दिया है, वो सबको महसूस हो। इतना अंदर सुख हो जो दुखियों का दुख दूर हो जाये। तो हे आत्मा, अपने आपको देख। पास्ट इज़ पास्ट। पास्ट में जो हुआ था, वाणी, कर्म, संकल्प, चेहरे-चलन से, वह फिर से कभी भी न हो।

प्रश्न:15-भगवान कहते हैं, ब्राह्मणों में भी अर्थात् जिनको भगवान का ज्ञान है, उनमें भी विरले ही भगवान को जो है, जैसा है, वैसा जानते हैं, इसका भावार्थ क्या है?

उत्तर:15- पहले बुद्धि से जानना, फिर दिल से उसको मानना, फिर जितना पहचानना उतनी प्राप्ति। कइयों ने जाना है, भगवान एक है, भटकन छूटी है, इसलिए मुरली से प्यार है, ज्ञान अच्छा लगता है, जीवन में पवित्रता है, मन को शान्ति आई है परंतु जो बाबा कहते हैं, मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा पहचान, इसमें तीनों बाप को पहचानना होगा। हम कहते हैं, लौकिक पूरा हो गया, अब साकार, अव्यक्त, निराकार तीनों की पहचान चाहिए। ब्रह्मा बाबा को न सिर्फ दिल मानता है कि मेरा बाबा है बल्कि कर्म में भी कहती हूँ, जो मेरा बाबा करता है, वो मुझे करना है। कोई प्राइम मिनिस्टर का सेक्रेटरी है, उसे नशा

रहता है। यूँ तो सिक्योरिटी गार्ड भी होते हैं परंतु यह खास है। कम से कम ऐसे-वैसे को तो नहीं रखा होगा ना। भगवान को भी लगे कि यह मेरा पर्सनल बच्चा है। बाबा कहते, सूक्ष्मवतन तुम्हारे लिए है। तो फीलिंग आए सूक्ष्मवतन में मेरा बाबा है। वहाँ से स्नेह की शक्ति लेना, सूक्ष्म इशारों को समझना – पहचान वाला ही इशारे को समझता है।

प्रश्न:16- आजकल जो सेवा होती है, उसमें ब्राह्मण तो थोड़े ही निकलते हैं पर समय और धन तो बहुत लगता है, इसके पीछे क्या राज़ है?

उत्तर:16- लंदन में पहले-पहले ओलंपिया में प्रदर्शनी की थी। भारत से दस गुणा ज्यादा खर्चा वहाँ हुआ। पर हमारा फर्ज है सबको संदेश देना। सेवा भी हमारे विद्यालय की शान है। लोग कहते हैं, ब्रह्माकुमारियाँ जो सेवा उठाती हैं, दिल से करती हैं। हरेक संस्था को सेक्रेटरी रखना पड़ता है, पैसे देने पड़ते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ का पता नहीं, यहाँ पैसा कहाँ से आता है, मैन पावर कहाँ से आती है, चकित हो जाते हैं। यहाँ सेवाभाव है, अंदर है कि मैसेज सबको मिले। बाबा ने इशारा दिया था, वारिस और माइक निकालो। हजारों, लाखों ब्राह्मण बनाना बड़ी बात नहीं है। पहले ब्राह्मण बनाना मेहनत थी, आजकल एक-दो को देखकर कलम लग जाती है। कोई वारिस और माइक निकले, उसके लिए बड़े-बड़े कार्यक्रम या वर्गीकरण की सेवा है। आई.पी., वी.आई.पी. कहते, कार्य बहुत अच्छा है पर "बाबा आप ही सब कुछ हो, आपका ज्ञान ही सच्चा है" ऐसा आवाज उनके अंदर से निकले, इसमें अभी समय है। जो सेवायें हुई हैं, उनके पीछे बाबा का राज़ यही है। समय भागता जा रहा है, विनाशकाल के पहले ही सबको संदेश मिलना है ज़रूर।

प्रश्न:17- संपन्न और संपूर्ण बनने का क्या पुरुषार्थ करें?

उत्तर:17- सेकंड में फुलस्टाप, सेकंड में मुक्ति, फिर जीवनमुक्ति, मन शान्त, कर्मेन्द्रियाँ शीतल, दिल से देखो, बाबा सामने है, ऐसी रिहर्सल करते रहें। जिस संकल्प की जरूरत नहीं, उसकी उत्पत्ति ना हो, आया तो भी सेकंड

में शांत हो जाए। बिचारा न बनें, विचारवान बन सेकंड में अपने को फ्री कर दें। देखो, फ्री है आत्मा, ना बीती बात, ना आने वाली बात, वर्तमान शांत है, दिल में प्रसन्नता है, सर्वशक्तियाँ अच्छी तरह साथ दे रही हैं। समय पर जिस शक्ति की आवश्यकता है, वह काम कर रही है। यह भी शिकायत ना हो कि यह शक्ति काम नहीं कर रही है। यह भी शान नहीं है। शान यह है कि निशान सामने हो, पहुँचना है। बाबा कहते, हाथ लगाकर फिर आओ, ऐसा मेरी अटेन्शन निशान तक हो, यह मेरा शान है। जिगर से, प्यार से, अपने से राज़ी, सबसे राज़ी, तो सच्चे दिल पर साहेब भी है राज़ी। एक मिनट की है बाज़ी। खुद से काम चलाऊ राज़ी नहीं। अंदर से पूछो, किसी से नाराज़ तो नहीं हूँ। ऐसी स्वमान की स्थिति से सबको सम्मान दूँ। बाबा ने इतना जो समझाया है, उस अनुसार चलने को बाबा कहता है। जब दुनिया के आधारमूर्त हैं तो हमको कोई आधार नहीं चाहिए। बोल और स्थिति की समानता हो।

प्रश्न:18- राइट हैण्ड, लैफ्ट हैण्ड बच्चे किन्हें कहेंगे ?

उत्तर:18- कभी थोड़ा सोचने की स्थिति में हुआ मानो लेफ्ट हैण्ड में चला गया। काम में भारी हुआ, लेफ्ट हैण्ड में चला गया। एक काम, दूसरा, तीसरा, चौथा भी मेरे पर – ऐसा सोचा, लेफ्ट हैण्ड में चला गया। संकल्प में थोड़ी-भी स्वच्छता की कमी हुई, लेफ्ट हैण्ड में चला गया। एक बार बाबा बैठे थे, कहा, मेरा कोई राइट हैण्ड नहीं है अभी, बच्ची। मुझे उस समय लग गया कि भगवाऩ को क्या चाहिए। बाबा ने प्रेरणाएँ दी हैं सेवा के लिए, शिक्षायें दी हैं हमारे लिए। राइट हैण्ड वही होगा जो शिक्षाओं को धारण करेगा, उससे स्वत: शिक्षायें काम करायेंगी। शिक्षक बनकर काम नहीं कर सकते हैं, शिक्षायें काम कराती हैं। राइट हैण्ड के संकल्प में सफाई होती है जैसे जादूगर के भी हाथ में सफाई होती है। दानी कोई सोचता नहीं है कि मुझे दान करना है, अपने आप उसका जी चाहता है कि जो मुझे मिला है, वह औरों को मिले। रात को एक भाई ने कहा, दुनिया में लोग कहते हैं, जो इनके पास है वो मेरे पास आए। भगवान का

बच्चा सोचेगा, जो मेरे पास है, वो सबके पास जाए। कितना अंतर हो गया। कराने वाला करा रहा है, जी चाहता है, सब ऐसी स्मृति में रहें। उमंग-उत्साह सदा है, मैं नहीं करूँगा, तो कौन करेगा। "हाँ जी" कहने वाले के सामने हज़ूर भी हाज़िर हो जाता है।

प्रश्न:19- मनसा सेवा की विधि क्या है?

उत्तर:19- अभी मनसा सेवा से आटोमेटिकली सब लेन-देन होगी। पहले मेरा ही मन मेरी सेवा करे। पहले हम मन के गुलाम थे, अभी मन को बाबा में लगा दिया है, तो मन बड़ा साथ दे रहा है, हमारे कंट्रोल में, ऑर्डर में रहता है, औरों की सेवा पीछे करेगा, पहले मन मेरा ऐसा लायक बने। फिर मन के साथ कनेक्शन है दिल का। दिल सेवा नहीं कहते हैं, मनसा सेवा कहते हैं। तो पहले दिल से पूछना है कि दिल कोई इच्छा-ममता रखकर तो नहीं बैठा है? मन सेवा करना चाहता है पर दिल कोई इच्छा-ममता में फँसा हुआ है। मनसा सेवा के लिए बुद्धि शुद्ध संकल्पों वाली चाहिए। शुद्ध संकल्पों का हमारे पास स्टॉक हो, जैसे खाने-पीने की चीज़ों का, पानी का स्टॉक चाहिए। जो स्टॉक का ध्यान रखते हैं, वे ही यज्ञ के रक्षक हैं। ऐसे नहीं स्टॉक संभालने वाले थोड़े अलबेले हो जायें, शान नहीं है। भले इतने सब खाते जायें और भरता जाये। ध्यान रखना है, कम न हो जाये। पता रहे कि इतने खा रहे हैं, छह महीने का, बारह महीने का स्टॉक रखा हो। ऐसे मन में भी शुभ भावना का स्टॉक चाहिए। उसके लिए सदा मन शुभ चिंतन में, मनन-चिंतन में रहे। दूसरी जगह न चला जाये।

मनसा सेवा करना बिल्कुल सिम्पल है। सिर्फ सपूत बन सबूत देना है। सपूत बनने में ही सबूत है। कभी एक पेनी भी अलमारी में रखना, पर्स में रखना ऑनेस्टी नहीं है। मेरे पास कुछ भी नहीं है। थैला, पर्स उठाने का अक्ल ही नहीं है। क्या करेंगे? मनसा फ्री है, अगर कोई चीज़ होगी तो अटेन्शन जायेगा कि यह गुम न हो जाये। याद करना नहीं है पर और कोई बात याद न आवे। कोई कहते हैं, दो महीना पहले यह बात तुमको सुनाई थी, अरे, वह मुझे

याद नहीं है। अच्छी-अच्छी बातें, मम्मा-बाबा, दीदी-दादी की याद हैं, शिक्षायें याद हैं, बातें याद नहीं हैं। असुल याद नहीं आती हैं। कोई अच्छा है, अच्छा सेवा-साथी है उसकी याद आना भी भूल है। कोई अच्छा नहीं करता है, खराब है, यह भी याद आया तो मेरी मनसा कैसी हुई। पहले अच्छा था, अभी अच्छा नहीं है, यह ख्याल आया तो भी मनसा सेवा कैसे करेंगे।

मनसा सेवा करने के लिए मन बड़ा खुश और शुद्ध चाहिए। शुभ भावना रखो तो आपेही पहुंचती है। ईर्ष्या-द्वेष अति सूक्ष्म हैं। पता नहीं पड़ता है, मेरे में ईर्ष्या है, पर कोई न कोई से है जो तन को भी बीमार कर देती है, मन-बुद्धि को भी बीमार कर देती है। ड्रामा बड़ा अच्छा है, बाबा ने सब बातों से छुड़ा करके त्याग से भाग्य बना दिया है। हमने त्याग नहीं किया है, आपेही छूट गया है। भाग्यवान हैं जो छूट गया।

अपने को कम्फर्ट में रहने की आदत डालना, तकिया भी अच्छा हो, ब्लैंकट भी अच्छा हो, खटिया भी अच्छी हो, प्लीज ऐसी आदतें नहीं डालो। अरे धरती पर सो करके खुश रहकर दिखाओ। बाबा की याद में अच्छी तरह सो जाओ। तो मनसा सेवा के लिए मनसा बड़ी अच्छी चाहिए। ड्रामा अच्छा है, बाबा अच्छे हैं, सब अच्छा है। दाता, वरदाता मेरे बाबा हैं ना, कितनी अच्छी-अच्छी बातें हैं। कभी चेहरे पर थकावट भी न आवे, चिड़चिड़ापन भी न आये, तो मनसा सेवा मन अपने आप करता है। सिर्फ कहता है, तुम शांत करके ऐसे बैठो जैसे तुम्हारा बाबा। बाबा को हम याद नहीं करती पर बाबा के सामने बैठती ज़रूर हूँ। जैसे मेरा बाबा, उसमें और हमारे में अंतर न रहे।

प्रश्न:20- बाबा के सूक्ष्म इशारे कब सुनाई पड़ते हैं?

उत्तर:20- बुद्धि को शांत होने की आदत हो तो बाबा के जो सूक्ष्म इशारे हैं वो सुनाई पड़ते हैं। सिर्फ एकाग्रता की शक्ति की ज़रूरत है। एकाग्रता की शक्ति हमको शांतप्रिय बनाती है। शान्ति ही हमारे गले का हार है। कार्य-व्यवहार में रहते किसी का भी स्वभाव-संस्कार हमको स्पर्श न करे तो

शान्ति गले का हार है, नहीं तो भाव-स्वभाव हार उतार देता है। स्वधर्म में रहने नहीं देता है। किसके बच्चे हैं, कौन-सा हमारा धर्म है, वो भूल जाते हैं। हमारा धर्म कौन-सा है, शान्ति धर्म है तो सत्यता, कर्म है। अगर शान्ति हमारा धर्म नहीं तो कर्म में सत्यता नहीं आ सकती, असत्यता मिक्स हो जाती है। शान्ति धर्म है, कर्म सत् है और संबंध श्रेष्ठ है। हमारे संकल्पों में भी इतनी पावर हो जो गरम वायुमण्डल को ठण्डा बना सकें। सहनशक्ति से ठण्डा बनना है। लेकिन अगर सिर्फ ठण्डे होंगे तो नेगेटिव वातावरण के फोर्स का दबाव होगा, इसलिए पुरुषार्थ में ठण्डा नहीं होना है, अटेन्शन पूरा हो। औरों की ग़लती देखने की ज़रूरत नहीं है, अपनी ग़लती जल्दी दिखाई पड़े। अपने को अच्छी तरह से देखने की रोशनी मिल रही है। बाबा कहते, विकल्प आया माना तूफान आया और जब आयेगा तो छोड़ेगा नहीं। कोई तूफान आता है तो पता नहीं चलता कि कहाँ से आया और कहाँ तक पहुँचेगा। तो संकल्प की बहुत अच्छी तरह देखभाल करनी है।

प्रश्न:21- महारथी किसे कहेंगे?

उत्तर:21- बाबा महारथी उसे कहते जो कोई भी बात अंदर ही अंदर खत्म कर दे, माइन्ड नहीं करे। घोड़ेसवार को माइन्ड हो जाता है। वह अपमान कर देता है या कोई उसका अपमान करता है तो सहन नहीं होता है। और सब बातें सहन हो सकती हैं, अपमान कोई कर दे तो सहन नहीं होता। स्वमान में रहने वाले को अपमान फील नहीं होता। इसलिए बाबा कहते हैं, स्वदर्शन चक्र फिराओ, स्वमान में रहो। ड्रामा अनादि बना-बनाया है, ड्रामा का ज्ञान संकल्पों को शांत बना देता है। संकल्प की उत्पत्ति की जो आदत है, पहले उत्पत्ति हो जाती फिर पालना करते, फिर विनाश करना मुश्किल हो जाता है। पालना की तो वह जायेगा नहीं, अपने वश कर लेगा। आखिर भी इसका हल होना चाहिए, ऐसा कब तक चलता रहेगा..यह आवाज़ कैसा है! वास्ट डिफरेन्ट है स्वदर्शन, परदर्शन में और स्वचिंतन, परचिंतन में।

प्रश्न:-22 सेवा के प्रति बहुत प्यार किसका होता है?

उत्तर:-22 जो अंदर से स्थिति पर ध्यान देता है, उसका सेवा से बहुत प्यार रहता है क्योंकि सेवा बहुत प्रकार की है और सबसे श्रेष्ठ सेवा मनसा सेवा है। मनसा सेवा कर्मसंबंध में दिखाई पड़ती है, छिपती नहीं है। कोई कोने में बैठ करके हम बाबा को याद नहीं कर सकते हैं परंतु याद में रहते जहाँ भी बैठें, उसमें सेवा समाई हुई है। दिन-प्रतिदिन चलन और चेहरे से सेवा सहज और स्वत: दिखाई देती है। अंदर की धारणा का आइना साफ है तो बुद्धि कहीं फालतू बातों में नहीं जाती है। यह भी नहीं कहते कि मेरा विचार तो ऐसे ही था, अभी जो हुआ सो अच्छा। सूक्ष्म में कोई भी प्रकार के संकल्प, जिनकी ज़रूरत नहीं है, उन्हें एलाऊ नहीं कर सकते। जो हो रहा है, उस पर ध्यान दें। जो हो गया है, उसको मन में रिपीट करने की ज़रूरत नहीं है, मन में सोचना ही नहीं है। कोई क्या करता है, वो हमको नहीं देखना है। कोई काम करता है और आप उसको बोलते रहो तो वो मूँझेगा। उसको छोड़ दो, वो अच्छा ही करेगा। किसी ने गलत काम किया तो दस को सुनायेंगे लेकिन इन बातों में खबरदार रहना है। अपने संकल्पों को स्वच्छ बनाने की बहुत सूक्ष्म चेकिंग है जिससे ही न्यारे बनते हैं।

प्रश्न:23- वर्तमान समय के प्रमाण हमारा माडर्न पुरुषार्थ वा तीव्र पुरुषार्थ क्या होना चाहिए?

उत्तर:23- जो जरूरी नहीं है, वह संकल्प भी न आये, संकल्प की क्वालिटी अच्छे से अच्छी हो। बाबा ने कहा, संकल्प और समय संगम के बहुत बड़े खज़ाने हैं। एक सेकंड में भी बहुत कमाई है। हमारा एक सेकंड भी व्यर्थ संकल्प चला तो इसमें बहुत-बहुत नुकसान है। जब व्यर्थ संकल्प चलते हैं, उस घड़ी महसूस नहीं होता है। अगर कोई महसूस करायेगा तो भी कहेगा कि यह मेरी बात नहीं समझता है। तो ऐसा अटेन्शन रखना वर्तमान समय का माडर्न पुरुषार्थ होना चाहिए।

वृत्तियाँ बनती हैं मन में, इसलिए कहते हैं मनोवृत्ति ऐसी है। हमारी मनोवृत्ति शुद्ध, शान्त हो, यह है माडर्न जमाने का पुरुषार्थ। परिस्थिति कैसी भी हो लेकिन हमारी स्व-स्थिति उससे ऊँची हो। अगर स्व-स्थिति ऊँची नहीं है तो परिस्थिति का प्रभाव पड़ जाता है।

कोई की भी बात साइलेन्स में रहकर सुनें, जवाब दें या न दें, समय पर उसे आपेही जवाब मिल जायेगा। हमें बात ऐसे करनी चाहिए जो सामने वाला समझकर कोई बात कहे। जैसे दादी गुलज़ार बाबा के दिन कितना ध्यान रखती हैं, पूरा समय साइलेन्स में रहती हैं। ऐसे हम भी साइलेन्स में रहना सीख जायें तो बाबा सब काम आपे ही करा लेंगे।

शिवबाबा आए तो ब्रह्मा बाबा को कितनी गालियाँ खानी पड़ीं। बाबा कहते, बच्चे उनका दोष नहीं है, पहचानते ही नहीं हैं। कोई फिर बातों में मिर्च-मसाला डालकर उन्हें खूब चटपटा बना देते हैं लेकिन उन बातों का प्रभाव हमारे ऊपर न पड़े। इतनी साइलेन्स की वा स्नेह की शक्ति हो जो अंदर ही अंदर उन्हें परिवर्तन कर लें।

कोई कल की बात है, कोई मास दो मास पहले वाली बात है, अगर वह भूली नहीं है तो हमारी स्वस्थिति कैसे बनेगी। परिस्थिति आई, मैं थोड़ा परेशान हुई तो स्वमान गंवाया। कोई भी पेपर आया, स्वमान में रहे तो पेपर पार हो गया। हम पास हो गये। अगर पास नहीं हुए तो मार्क्स कम हो जायेंगी। इतना पुरुषार्थ में खबरदार, होशियार, सावधान रहना है। पहले सिक्योरिटी वाले आवाज़ करते थे, खबरदार, होशियार। आज के ज़माने में रड़ी नहीं मारते हैं लेकिन अलर्ट ऐसे रहते हैं जो कोई की भी हिम्मत अंदर आने की न हो।

समर्पण है तन-मन-धन का। मेरा कुछ भी नहीं। अगर आइवेल के लिए कुछ जेबखर्च भी रख दिया है तो समर्पण कैसे हुए? हमारा मन-वचन-कर्म श्रेष्ठ हो, ऑनेस्टी भी बहुत चाहिए। ज़रा भी हेराफेरी न हो। जो बोलें, सच बोलें। एक बाबा के सिवाय दूसरा कोई याद न आये, ऐसा वफादार होकर रहना है।

कोई सामने बैठा हो या हज़ारों माइल दूर बैठा हो, उसको साइलेन्स की शक्ति मिलती रहे। अगर किसी कारण से मैं गिरी, चोट आई तो बाबा कहेंगे, इसका योग ठीक नहीं है। यह गफलत में है। कोई धक्का खाता है, हार्ट में पेन होता है तो ज़रूर दर्द का कोई तो कारण होगा। दिमाग में अगर डिप्रेशन आया तो उसका कारण भी वेस्ट थाट्स हैं। ऐसी कंडिशन मेरी न हो, इसमें बहुत खबरदार, होशियार रहना है – यह है माडर्न जमाने का पुरुषार्थ

प्रश्न:24- सिमरणी (108 की माला) में आने के लिए ध्यान देने योग्य मुख्य बातें कौन-सी हैं?

उत्तर:24- हमें सतयुगी स्वराज्य में आने का अधिकार लेना है तो हमारी पर्सनैलिटी में सौ प्रतिशत प्यूरिटी हो। अगर वह नहीं है तो क्वेश्चन उठता है, पता नहीं कब आयेंगे? आगे आयेंगे या पीछे आयेंगे? हम ही कल्प पहले विजयी माला में आये थे, अभी भी 108 की विजयी माला के दाने हैं और फिर-फिर होंगे, यह सदा स्मृति रहे।

सिमरणी में आना है तो सदा सिमरण चलता रहे। सिमरण बुद्धि से करेंगे, मन को कहेंगे शांत कर। मन को दबाते नहीं हैं, उसको प्यार से लोरी देकर सुला देते हैं। बुद्धि से योग भी लगायें, धारणा भी करें फिर सेवा में बुद्धि का अभिमान न हो। देही-अभिमानी स्थिति में रहकर सेवा करनी है। बुद्धि कहती है, तू देही-अभिमानी बन।

सिमरणी में आने के लिए कम से कम 108 बातें ध्यान पर रहनी चाहिएँ। उनमें अगर 8 बातें भी मुख्य सिमरण में आ गईं तो देह-अभिमान खत्म हो जायेगा, नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप बन जायेंगे। ज्ञान का सिमरण ज्ञान देने वाले की याद दिलाता है। ज्ञान देने वाला दाता अगर याद नहीं है तो ज्ञान का तीर लग नहीं सकता।

जो ज्ञान के महत्त्व को समझते हैं, वे अपने पार्ट को भी समझ सकते हैं। ऐसे नहीं, पता नहीं मेरा पार्ट क्या है! कोई-कोई अपनी कमज़ोरी को देख

दिलशिकस्त हो जाते हैं लेकिन बाबा कहते, जो अच्छी सीनरीज़ पास हुई हैं, वे सब स्मृति में रहें। सेवा में सेन्स भी हो तो इसेन्स भी हो तब सफलता मिलती है। बाबा सेन्सीबुल उसे कहते, जो त्रिकालदर्शी होकर हर कर्म करते हैं।

ज्ञान चिंतन और सिमरण में बहुत फर्क है। प्रभुचिंतन में जाने से पहले अगर पास्ट का चिंतन या परचिंतन अंदर घुस जाता है तो पुरुषार्थ में हलचल आ जाती है। कोई न कोई व्यर्थ का चिंतन हमारी स्थिति को डगमग कर देता है। हमारे स्व-चिंतन में ईश्वरीय चिंतन रहना चाहिए, उसके बीच में फिर सिमरण ज़रूर हो। भजन मुख से गाते हैं, माला फेरते सिमरण में रहते हैं।

प्रश्न:25- तड़पती हुई आत्माओं की आवाज़ क्यों नहीं सुनाई देती? स्पष्ट सुनाई दे, इसके लिए क्या पुरुषार्थ चाहिए?

उत्तर:25- 1. इस दुनिया से ऊपर रहेंगे तो उन तड़पती हुई आत्माओं की आवाज सुन सकेंगे। बाबा ने सन्देश में भी कहा कि ऊंची पहाड़ी पर ले गया तो तड़पती हुई आत्माओं की आवाज़ सुनाई दी। जैसे ब्रह्मा बाबा को देखा, यहाँ है ही नहीं, कहाँ है, पता ही नहीं। बाबा का काम है सारी दुनिया को दृष्टि देना, वो केवल हमको ही दृष्टि नहीं देते हैं, सबको दृष्टि देते हैं। वो जगतपिता हैं। एक है परमपिता और दूसरे हैं जगत पिता, हम भी जगतपिता और परमपिता के बच्चे हैं तो केवल यहाँ ही नहीं देखेंगे, ऐसी स्मृति होगी तो हमें तपड़ती हुई आत्माओं की आवाज़ सुनाई देगी।

2. जिनकी बुद्धि दूरांदेशी है, उनका कारोबार भी अच्छा चलता रहेगा और वो इज़ी भी रहेंगे। सच्चाई और प्रेम से, बेहद में रहने से मनसा सेवा कर सकते हैं। जब तक कहाँ न कहाँ शरीर और सम्बन्ध में भाव-स्वभाव है तो मनसा सेवा नहीं हो सकती। इन आवाज़ों से पार जायें तो उनकी आवाज़ें सुनाई दे सकती हैं। यह काम बाबा को हम से ही कराना है। जब सब बन्धनों से मुक्त, बन्धनमुक्त-जीवनमुक्त बनेंगे तब दु:खियों की आवाज़ सुनाई देगी। सुनने की भावना होगी तो बाबा अपने आप भासना देंगे।

प्रश्न:26- बेहद विहंग मार्ग की सेवा में मम्मा का पार्ट क्यों नहीं है?

उत्तर:26- पार्ट है ना! बाबा ने कहा था, मम्मा जहाँ जन्म लेंगी वहाँ उनसे बहुत सेवायें होंगी। बाकी वो कहाँ है, क्या सेवा कर रही हैं, इसके लिए बाबा कहते, वह गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। बाकी संगमयुग का समय थोड़ा है इसमें हम पुरुषार्थ करके सम्पन्न बनें। अगर आज भी विनाश आ जाये तो! तो बाबा कहते हैं, एवररेडी रहो।

प्रश्न:27- वृत्ति क्या चीज़ है, वृत्ति का क्या प्रभाव पड़ता है? प्रवृत्ति में पर-वृत्ति कैसे रहे?

उत्तर:27- मेरी प्रवृत्ति बहुत बड़ी है, ऐसा सोचेंगे तो फंसे रहेंगे। भले लौकिक में रहते हैं या यहाँ रहते हैं तो भी कई प्रकार की प्रवृत्ति में फंसे रहते हैं। प्रवृत्ति माना लौकिक कारोबार, पर-वृत्ति माना त्याग वृत्ति, वैराग्य वृत्ति। मन में जो संकल्प बार-बार चलते हैं उसकी वृत्ति बनती है। जैसी दृष्टि होती है वैसी वृत्ति बन जाती है। वृत्ति में सूक्ष्म अहंकार भी है, लोभ भी है तो मोह भी है। वृत्ति में कोई बात आ गई तो गुस्सा भी है। तो वृत्ति से दृष्टि ऐसी बनती है और दृष्टि से वृत्ति बनती है। फिर उसका संबंध है स्मृति से। मैं आत्मा हूँ, सब बाबा के बच्चे हैं, इस शुभचिन्तन में रहने से शुभचिन्तक बनते हैं। शुभचिन्तक में अहम् भाव, वहम भाव नहीं होगा, दोनों ही नुकसानकारक हैं। मेरा भाव या स्वभाव श्रेष्ठ है, कल्याण का है तो वृत्ति भी श्रेष्ठ, दृष्टि भी श्रेष्ठ बन जाती है। परन्तु स्मृति श्रेष्ठ तब बनती है जब पुरानी स्मृति भूल जाती है। अभी इस संगमयुग पर जो पुरानी स्मृति भरी है, उसे मिटा करके नयी स्मृति भर लो। किसी का स्वभाव, संस्कार वृत्ति में आ गया है। तो पुरुषार्थ में वृत्ति को चेक करो कि वैराग्य है? कोई खींच तो नहीं होती है? मन शान्त है तो बुद्धि अच्छा सोचती है। त्याग है तो कहीं आंख नहीं डूबती है। भगवान ने जो दिया है उसे अपना समझना, यह भी अमानत में ख्यानत है। तो वैराग्य से त्याग, फिर अनासक्त, विदेही और

ट्रस्टी। वृत्ति से दृष्टि और दृष्टि से वृत्ति बनती है। गीता में भगवान कहते हैं, मेरे को जानने के लिए, देखने के लिए दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि चाहिए। तो दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि के लिए पहले दिव्य वृत्ति चाहिए। भगवान का बनने से दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि बन जाती है।

प्रश्न:28- बाबा ने मम्मा और भाऊ को अपने से पहले क्यों बुलाया? मम्मा को जल्दी बुलाने का राज़ क्या है?

उत्तर:28- जब हम छोटे थे तो मम्मा ने माता रूप से हम सबकी पालना की। परन्तु मम्मा ने सदा अपनी स्थिति ऊंची रखने का ध्यान रखा। यज्ञ माता होते हुए भी कोई भी प्रकार का टेन्शन नहीं था। सभी को मातृ स्नेह दिया। ऐसा मातृ स्नेह देकर सबको मज़बूत बना दिया। मम्मा हमारे आगे मिसाल थी कि स्थिति कैसी हो। जब मम्मा ने शरीर छोड़ा, उस दिन से लेकर बाबा ने मात-पिता का पार्ट बजाया। बाबा को पूछा, माँ कहां चली गई बताओ ना? तो कहा, देख करके क्या करेंगी? उससे मिलने जायेंगी क्या? वो अपना पार्ट बजा रही हैं सारे विश्व की आत्माओं की पालना कर रही हैं। बाकी वे बाबा से पहले क्यों गई, क्यों, क्या का तो प्रश्न ही नहीं है। हर एक का अपना-अपना विशेष पार्ट है, नई दुनिया की स्थापना में किसी न किसी रूप से विशेष आत्माओं को बाबा निमित्त बनाते हैं। सारे विश्व की सेवा का, यज्ञ सेवा का आधार भाऊ पर था। सेवा करते हुए पढ़ाई और योग से प्यार था। एकाउन्ट और यज्ञ का हर कारोबार इतना अच्छा सम्भालते थे, बाबा को निश्चिन्त करके रखा था। उसकी परखने की, देखने की शक्ति बहुत तेज़ थी। तो गुप्त रूप में, झाड़ की जड़ें बहुत मज़बूत हैं। जिनका जो पार्ट है, वही चल रहा है, प्रश्न करने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्न:29- साकार बाबा ने कहा था - सतयुग में गद्दी पर बैठने वाले यहाँ भी नम्बरवार बैठेंगे, तो अभी बाकी कौन-कौन हैं?

उत्तर:29- बाबा सतयुग की थोड़ी बात सुना करके कहते थे, मनमनाभव। इन बातों के विस्तार में नहीं जाओ। अपनी शक्ल देखो कि नारायण जैसी है?

अभी तक केवल बाबा-मम्मा दो ही फिक्स हैं। पर मैं कहती हूँ, विश्वकिशोर बाबा का बच्चा फिक्स है। ऐसा सुपात्र बेटा, अभी तक यज्ञ में कोई और है नहीं जो गद्दी पर बैठने लायक हो। बाकी कौन-कौन गद्दी पर बैठेंगे, यह बाबा ने नहीं बताया है। पहले हम ऐसी चिटचैट करते थे। अगर कभी कोई उदास हो जाता था, तो बाबा कहते थे कि यह दासी बनेगी। फिर बाबा ने यह सब बन्द करा दिया।

प्रश्न:30- बाबा को कौन-से बच्चे अच्छे लगते हैं?

उत्तर:30- बाबा को ऐसे बच्चे अच्छे लगते हैं जिनको बाबा अच्छा लगता है, बाबा को वो अच्छे लगते हैं। बीच में किसी कारण से भी बाबा को पीठ न करें, बड़ा नुकसान है। उसके डायरेक्शन को अमल न करे, श्रीमत को माथे पर न रखे – बड़ा नुकसान है। बाबा ने जो मर्यादायें बताई हैं, उन पर चलने से बड़ी शक्ति मिलती है। अमृतवेले से रात्रि तक नियम बनाकर दिए हैं। तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से सुनूँ..बाबा को सब पता है, क्या बताऊँ, बाबा इशारा करेंगे, तुम सोचो मत, हो जायेगा। तन से हो, धन से हो, संबंध से हो – करा देते हैं। मेरे को थोड़े ही करना है। इसमें भाऊ विश्व किशोर नंबरवन थे। कभी नहीं कहा, मैंने किया, बाबा ने कराया। तुम्हीं संग रहूँ, तुम्हीं संग खाऊँ इसका सुख बहुत है, कोई क्वेश्चन नहीं। थोड़ा याद की गहराई में जायेंगे तो न कोई मित्र, न कोई संबंधी। इतना प्यार करेगा कौन! संगमयुग पर परमात्मा का जिसने प्यार पाया है वो सारे कल्प में बहुत काम आया है। सारे कल्प में किसी मनुष्यात्मा के प्यार की इच्छा नहीं होगी। ऐसा अनुभव करो तो आपके अनुभव की शक्ति औरों को मिले।

अरे कान खोलकर भगवान की बातें सुनना, दिल में समाना और जीवन-यात्रा का एक-एक मिनट सफल करना – भगवान इसमें खुश है। समय को सफल करो जिससे आपको देख और भी सीख जायें। बाबा ने सेवा करने के लिए सारी विश्व हाथ में दी है, हर एक को परमात्मा से मिले हुए खज़ाने

दिलाने में साथी बनो। सच्ची दिल से, वृत्ति से, दृष्टि से साथी बनो। अभी समय है सफल करने और कराने का। भगवान जिसमें खुश है मुझे वो ही करने का है। वो हमारे कारण ही सृष्टि पर आते हैं, हमको ऊँचा पावन बनाने के लिए। ऐसे बाबा को क्यों ना याद करें! खुशी में प्यार करते हैं। कहाँ से खुशी नहीं मिलेगी तो प्यार करेंगे क्या? कुछ मिला तो कहेंगे ना, आओ-आओ। सब मनुष्य झूठ से थके हुए हैं, अभी हम और कुछ न करें, सिर्फ सच्चे बनें, बस। तो भगवान के काम के बन जायेंगे। यह धुन लगी रहनी चाहिए – सच्चा बनना है, सच्चा बनेंगे तो साथी भी सच्चे बन जायेंगे।

प्रश्न:31-दादीजी, मम्मा में आपने क्या-क्या विशेषताएँ देखी?

उत्तर:31- मम्मा मीठी कैसे बनी? यज्ञ में आई तब मम्मा थी 17 साल की। कितनी मीठी बन गई। कुमारी को हम माँ कहने लगे, फिर ओम राधे और फिर सरस्वती बन गई। यज्ञमाता फिर जगतमाता बन गई, फिर बनी लक्ष्मी। पुष्पशान्ता दादी को मम्मा से लक्ष्मी का साक्षात्कार हुआ। उस रूप को देख दादी पुष्पशान्ता समर्पित हो गई। मम्मा की बातें दिल में छपी पड़ी हैं। जब समर्पण हुई, धक से हुई।

मैं तो आई थी मम्मा के पास रहने के लिए लेकिन रख दिया बच्चों के साथ। बेबी भवन में मुझे रखा, 40 बच्चे संभाल के लिए दिये। एक रात दस बजे देखा, सभी दादियाँ मम्मा से रूहरूहान कर रही थीं। मैंने मम्मा से कहा, मुझे बेबी भवन में क्यों रखा, अपने पास क्यों नहीं? मम्मा ने कहा, तुम जनक हो ना, यह क्यों कहा, मुझे यहाँ क्यों रखा? मम्मा ने मुझे मेरा स्वमान याद कराया। डेढ़ साल बच्चों के साथ रही, बहुत उन्नति हुई। मम्मा ने ही सबसे पहले मुझे जनक कहा। जब यज्ञ में आई थी तब लौकिक घर की एक शॉल मेरे पास थी। फिर मैंने लौकिक घर वाली शॉल उतार फेंकी। आज मेरा परिचय देते हैं कि मोस्ट स्टेबल माइन्ड इन द वर्ल्ड (संसार में स्थिरतम मन वाली) है। यह मम्मा से सीखा है। मैंने मम्मा से पूछा था, आप इतनी निश्चिंत,

गंभीर कैसे रहती हो, बोलती हो थोड़ा फिर भी यज्ञ में सब एक्यूरेट चलता है, मन ऐसे कैसे रहता है? बोली, मन मेरा बेबी है, इसे हँसाओ, दबाओ मत। संकल्प ऐसा हो जिसमें शान्ति भरी हो। मैंने भी सीख लिया। मम्मा "बाबा" बोलेगी तो उस कहने में ही बड़ा रिगार्ड। जब बाबा कलिफ्टन पर मुरली सुनाते, टेलिफोन पर मम्मा सुनती। फिर हमें सुनाती तो हूबहू रिपीट कर देती। मम्मा को कभी नोट्स लेते नहीं देखा। सीधा मन में समा लेती थी। मम्मा चाहती थी कि बाबा मुझे "मम्मा" ना कहे पर पहले-पहले बाबा ही "मम्मा" कहते थे। हमने हर पल मम्मा-बाबा से बहुत कुछ सीखा है।

बाबा ने मुरली में जगदम्बा की बहुत महिमा की है। बाबा ने कहा, मम्मा के पुरुषार्थ में अलबेलापन, रॉयल आलस्य नहीं था।

मम्मा में रूहानियत, ईश्वरीय स्नेह बहुत था। लगता नहीं था, कुछ कर रही है, करा रही है। मम्मा की हाज़री में सब खड़े हो जाते थे। दोपहर 12 बजे भोग लगाना है, मम्मा ठीक 12 बजे भंडारे में आई, एक मिनट भी लेट नहीं होगी क्योंकि बाबा ने कहा, 12 बजे भोजन का बेल लगना चाहिए। बाबा ने यह भी कहा, ला एंड आर्डर में सतयुग में राज्य चलता है तो मम्मा ने चलाया है इसलिए लक्ष्मी पहले, नारायण पीछे, नहीं तो नारायण का पहले नाम आना चाहिए। ब्रह्मा बाबा ने गुप्त रह मम्मा को आगे रखा ताकि शक्ति सेना आगे हो जाये।

मम्मा, समय का कदर बहुत करती थी, कभी भी मम्मा के मुख से कोई एक्स्ट्रा शब्द नहीं निकलेगा। कभी किसकी गलती, किसको सुनाई नहीं होगी। कोई मम्मा को सुनाये तो उसे समाके, शिक्षा देके बात खत्म कर देती थी। ऐसी रॉयल्टी से हम एक-दो की पालना करें तो बहुत उन्नति हो सकती है। अभी भी अगर कोई चाहे तो नम्बरवन में आ सकता है, पास्ट इज़ पास्ट। ज़रा-सा भी पीछे की बातों को न सोचे। पीछे की बात सोचना माना अपने को बांधकर रखना। नम्बरवन में आने वाला सबसे सीखता है। तो ले लो दुआयें माँ-बाप

की, गठरी उतरे पाप की। कोई भी पुराना पाप रहा हुआ न हो तो नम्बरवन में आ सकेंगे।

मम्मा की बातों को इस झोली में अच्छी तरह से भरना फिर देखना, मैं कौन हूँ? मीठी-मीठी मम्मा का भक्ति में गायन है – जगत् अम्बा, काली, सरस्वती, वैष्णव देवी, शीतला माता, दुर्गा... ये सब स्वरूप मम्मा में देखे हैं। यज्ञ में जिस दिन से आई तो जैसा नाम था राधे वह प्रैक्टिकली सतयुगी राधे के संस्कार लेकर आई। यही फिर लक्ष्मी बन रही है तो वो सारे लक्षण उसमें देख लिये। फिर काली भी है, मम्मा के सामने जायेंगे तो पुराने संस्कार भस्म। बड़े-बड़े गृहस्थियों को, बड़ी उम्र वाले बुजुर्गों को भी मम्मा ने योगी बना दिया।

मम्मा की कभी कहीं आँख नहीं डूबी, न खाने में, न पहनने में। मम्मा ने कभी स्वेटर नहीं पहना, कभी जुराबें नहीं पहनी, इतनी ठण्ड होते भी मम्मा सदा त्यागी-तपस्वीमूर्त होकर रही। हम उस माँ के बच्चे हैं। जब मम्मा ने शरीर त्याग किया तो कइयों को मम्मा की लाइट का अनुभव होने लगा। भगत लोग उस माँ को पुकारते हैं, वह उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण करती है। बाबा कहते हैं, मम्मा के भी नाम-रूप को न देखो लेकिन हम देखते हैं कि हमारे मम्मा-बाबा कैसे हैं? तीसरे नेत्र से देख रहे हैं और इन आंखों से हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। जिनके दर्शन करने के लिए गला काटते हैं कि सिर्फ एक बार माँ के दर्शन हो जायें और हम उस माँ के बच्चे हैं, उनकी दृष्टि से पले हैं, उनके हाथों से खाया है। मम्मा ने जो किया वो सब देखा है और साथ में पार्ट बजाया है तो कितने भाग्यवान हैं!

मम्मा ने कभी आवाज़ से हँसा भी नहीं होगा। मम्मा के मुसकराने में ही हमको समझ मिल जाती थी। जैसे गुलज़ार दादी सन्देश लेके आती हैं, बाबा ने मुसकराया तो उस मुसकराने में ही लेन-देन हो गयी। तो यह वरदान मम्मा डे पर मीठी माँ से सभी ले लो तो मम्मा समान सफलता मूर्त सो साक्षात्कार मूर्त बन सकेंगे। हमारे मस्तक में कोई देख ले तो वो विजयी बन जाये। अपना

मस्तक देखो कैसा है? सन्तुष्टमणि भी मम्मा है ना, बाबा की मस्तकमणि है। सदा सन्तुष्ट रहना यह कितना भाग्यवान बनना है।

मम्मा भगवती माँ है। वो कहती है, सदा सन्तुष्ट रहो, शान्त रहो। एक-दो को प्यार से देखो। जैसे मम्मा-बाबा ने हमको पालना दी है, ऐसे एक-दो को प्यार से देखो। मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का यह संगमयुग है, मम्मा हर मर्यादा में एक्यूरेट चली। ज़रा-सी भी फैमिलीयरिटी में कभी मम्मा को नहीं देखा। मीठी-मीठी मम्मा की यही हम बच्चों के लिए कामना रही है कि बाबा के ये बच्चे गुलाब के फूल होवें। तो अपनी दृष्टि-वृत्ति ऐसी हो, रूहानियत में रह करके एकदम वरदानी माँ से वरदान ले लो। इस प्रकार जो वरदान मिलेगा वो सदा के लिए हो जायेगा। किसी में कोई कमी-कमज़ोरी हो, स्वाहा हो जाए। दूसरे की कमी आज के बाद कभी नहीं देखेंगे। दूसरे की कमी को देखने से उसकी कमी मेरे में आ जायेगी इसलिए कभी यह भूल नहीं करना। किसी में, किसी भी प्रकार की कोई कमी है, तो उसे बलि चढ़ा दो। अगर कमी-कमज़ोरी रह गई तो वो शीतला, काली, दुर्गा, जगत अम्बा का अनुभव नहीं करेंगे। ज़िंदगी में कुछ भी बात आवे, हिलना नहीं है, स्थिर रहें, यह मम्मा ने हमें सिखाया है। मम्मा कौन है? हमको प्रैक्टिकल बनाने वाली भगवती माँ है। एलर्ट, एक्यूरेट, आलराउण्डर, एवररेडी बनने के लिए "तो", "तो" नहीं करना है लेकिन बनना है।

प्रश्न:32- अभिमान, मोह, लोभ छोड़ने के लिए क्या चिंतन करें?

उत्तर:32- आत्मा 63 जन्मों से अभिमानी बन गई है। परमात्मा पिता कहते हैं, देख तेरे में अभिमान आ गया है। संबंधों का भी अभिमान आता है। उसमें फिर लोभ-मोह भी आ गया है। लोभ-मोह के कारण गुस्सा भी आ गया है। अभिमान के कारण गुस्सा है। थोड़ा भी किसी में गुस्सा है तो समझ जाये, अभिमान के कारण गुस्सा है। अभिमान के कारण संतुष्ट नहीं है। ब्रह्मा बाबा को सामने रखो तो अभिमान छूट जाता है। बच्चा हूँ ना, मेरा बाबा है ना! वो बचपन का सुख

अंतिम घड़ी तक रहे, जैसे ब्रह्मा बाबा ने अंतिम घड़ी तक स्मृति में रहने का पार्ट बजाया। निराकारी स्थिति में रहकर निर्विकारी बन, निरहंकारी रूप दिखाया। इतना भी कभी अंश मात्र अहंकार वा आवेश में नहीं देखा। अभी अव्यक्त होकर भी सभी को बहुत प्यार करते हैं, समझानी देते हैं, पर अंदर कितने शीतल हैं। बाबा कहते थे, बच्चे योगी अर्थात् शीतल काया वाले, अंग-अंग शीतल। चलन से भी शीतलता का अनुभव हो, औरों की तपत बुझाने वाले।

किसी भी कारण से गुस्सा न आवे, आवेश की भी उत्पत्ति हुई तो फेल। योगी शीतल तभी है जब स्वीट साइलेन्स में रहता है। असली घर हमारा शान्तिधाम है। संगमयुग पर मधुबन, ओमशान्ति भवन है। यहाँ हम सदा मेहमान हैं। अपने को सदा मेहमान समझना महान आत्मा का काम है। ईश्वर कितना प्यार देते हैं जो अपनी भी बातें भूल जायें, सारी दुनिया की बातें भूल जायें। इतनी उसकी याद हो जो हमारे सामने जो भी आये, उसको भी बाप की याद दिलायें और कोई तो काम है नहीं। संगमयुगी हैं, संपन्न और संपूर्ण मेरे को बनना है। ये बने, वो बने इसकी चिन्ता भगवान करे, मैं क्यों करूँ।

मैंने बाबा को देखा है, कितना प्यार है, कितनी केयर करते हैं। अंतिम जन्म में इतनी हमारी संभाल कर रहे हैं, मेरे बच्चों को कोई तकलीफ न हो। बच्चे कहते हैं, मेरा बाबा! मैं कहता हूँ, मेरे बच्चे! अंतिम घड़ी तक मैं इनके साथ रहूँगा। वो चाहता है, मेरे साथ रहो। मैं आया ही इसलिए हूँ कि तुम मेरे साथ रहो।

मोह की रगें टूट जानी चाहिएँ। देह में भी मोह न हो, संबंधियों में भी न हो। धन भी मैं क्या करेंगी। खिलाने वाले बाबा बैठे हैं। जिस तन को बाबा खिला रहे हैं, सेवा में भी लगा रहे हैं। इस तन द्वारा सेवा हो रही है ना! देते भी बहुत कुछ हैं, तुम खुशी में आकर सेवा करते हो। धन से भी करते हो तो तन से भी करते हो। इतनी खुश रहने की शक्ति दी है। जिनमें कमी या कमज़ोरी है वो खुश नहीं रह पाते हैं।

थोड़ा बहुत हिसाब-किताब क्या बड़ी बात है! बड़ा भी होवे तो कुछ नहीं है। बाबा हमारे सबसे बड़े सर्जन भी हैं तो साजन भी हैं, वो संभालते हैं। हर संबंध का सुख देने वाले माता हैं, पिता हैं, पति हैं, सखा हैं..। मुख्य बात है उनकी शिक्षायें बड़ी अच्छी लगती हैं तभी माँ-बाप के रूप में प्यार करते हैं।

भले कोई मेरी बात को स्वीकार न करता हो, किसके सामने अच्छा खाना रखो, पर उल्टी का ख्याल आ रहा है, सिर में दर्द है तो खाना छोड़ देगा ना, इसमें उसका क्या दोष है। हम क्यों कहें कि यह अस्वीकार करता है। अभिमान की अति सूक्ष्म बातें ऐसी हैं जो मीठा बनने का लक्ष्य ही नहीं है। जैसे बाबा की मुसकराहट में ही सब खुश हो जाते हैं, ऐसी याद और मुसकराहट हो। जब मेरे को खुशी का अनुभव है तो मेरे को देख और खुश हो जावें। जिसको जितना अनुभव है, उसी अनुसार चल रहा है। तो क्यों नहीं अनुभव को बढ़ायें। थोड़ा भी अभिमान दुश्मन है। भगवान जो वरदान देते हैं वो काम नहीं करेगा। थोड़ा मान लेकर खुश हो गया तो भगवान फ्री हो गये, कहेंगे, यह तो इसमें ही खुश हो गया। अरे अभिमान सबसे बड़ा दुश्मन है इसलिए बाबा कहते हैं, आत्मा समझ कर मुझे याद करो। देह द्वारा निमित्त सेवा कराके ऊँचे से ऊँचा भाग्य बनाने का भाग्य देता है। आत्मा भाग्यवान बन रही है। ऐसी बातें जो दिल को लगती हैं वो दिल में हों। बाकी दिल सदा साफ, सच्ची दिल से साहेब को राजी रखो। तो कभी नाराज नहीं होंगे, न किसी को नाराज़ करेंगे। बोलचाल में अभिमान असुल न हो, यह ध्यान बाबा का सच्चा बच्चा बहुत रखता है। जो चाहिए वो आपेही मिलता है। मांगना नहीं पड़ता है। सब सहज हो रहा है, बाबा आपे ही प्रेरणा देते हैं, आपेही सेवा का आफर करते हैं। बाबा ने केवल शांत रहना सिखाया है।

प्रश्न:33- आपने इतना अच्छा जीवन कैसे बनाया?

उत्तर:33- लक्ष्य है कि मैं एक्जाम्पुल बनूँ क्योंकि बनाने वाले इतना अच्छे हैं, सर्व सम्बन्धों से साथ दे करके अपने समान बना रहे हैं, तो प्रैक्टिकली

मेरी लाइफ से कोई की लाइफ बन जाये। इसमें स्टूडेन्ट हूँ तो मज़ा है। स्टूडेन्ट को रोज़ाना जो शिक्षा मिलती है उसे जीवन में पूरा लाना अच्छा लगता है। उसके लिए बाबा कहते, अपना चार्ट देखो, मेरे में सर्वगुण कहाँ तक आये हैं? अन्दर में कोई अवगुण तो नहीं रह गया है? अपने गुण, चरित्र पर ध्यान रखेंगे तो बाबा खुश हो जायेंगे। जिस भी सेवा अर्थ होंगे वो भी सहज हो जायेगी। गुण सिखाये नहीं जाते, संग से सीख लेते हैं, अनुभव यह कहता है।

प्रश्न:34- स्थिर मन और बदलता मन कैसे पहचानें?

उत्तर:34- दिल सच्चा है, यह भाग्य है। मन बेईमानी नहीं करता। नहीं तो अभी-अभी अच्छा करने का ख्याल आयेगा, फिर बदल जायेगा। जो करना है अब कर लो। बाद में क्या हो, किसने देखा है! मन बदल सकता है, परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। अगर मन बदली होता है तो समथिंग इज़ रांग। महसूस भी नहीं होगा कि रांग है। मन कभी ऐसा, कभी वैसा तो राज्यपद के अधिकारी नहीं बन सकते, विश्वास के पात्र नहीं बन सकते। बाबा परीक्षा लेते थे, कहते थे, अभी यह कहता है, अभी बदल जायेगा। भगवान का मेरे में विश्वास हो, कुछ भी हो जाये, बच्चा बदलने वाला नहीं है। भगवान को मेरे में ट्रस्ट है? कितनी भी परीक्षा आये, बदलूँगा नहीं। दिल साफ है तो बुद्धि की लाइन क्लीयर रहती है, सच्चे दिल वाला खींचता है। तन-मन साफ हों, कितनी शोभा है। लक्ष्य है सफाई और सादगी का, एक्स्ट्रा है तो दे दो। खराब है तो फेंक दो। दिल सच्चा है तो बाबा को इतना विश्वास है, जहाँ जायेगा अच्छा कार्य हो जायेगा।

प्रश्न:35- मीठे-प्यारे बाबा का प्यार कब मिलता है?

उत्तर:35- हमारा चेहरा बताता है, मुझे खिलाने वाला कौन है? चेहरा बताता है, मेरी कमाई कितनी अच्छी है? अन्दर जो जमा है वो चेहरे पर आता है। दुआयें इतनी जमा हैं, तो दुआयें काम कर रही हैं, ऐसी फीलिंग

है? बाबा, प्यार भी तब देते हैं जब शक्ति खींचने की अक्ल है। अक्ल भी उसको आती है जो नकल करना जानता है। विदेश में कानून बहुत सख्त होते हैं, कॉपीराइट के बिगर तो कुछ नहीं कर सकते हैं, आज्ञा लेनी पड़ती है। यहाँ बाबा ने कहा, कॉपी (नकल) करना राइट (हक) है, इतने बाबा रहमदिल हैं, फ़राख़ दिल हैं हमारे लिए। भले कॉपी करो पर अभी करो, एकदम जो चाहिए सो करो, मैं साथ देता हूँ सिर्फ सुस्ती बहाना मत बनाना। बाबा कहते, ऐसों को मैं साथ नहीं देता हूँ। कारण बताना माना बहाना करना।

प्रश्न:36- अष्ट रत्नों की निशानियाँ क्या होंगी?

उत्तर:36- वो नम्बरवार पुरुषार्थ नहीं करेंगे। वैजयन्ती माला में आने वाले नम्बरवार पुरुषार्थ करते हैं। बाबा ने मुरलियों में बताया है, अष्ट रत्न कौन बनते हैं, 108 में आना है तो क्या करें और 16,108 में आना है तो क्या पुरुषार्थ करें? मेरा जो टीचर है उसकी इच्छा है कि इतनी अच्छी तरह शिक्षाओं को जीवन में लायें, जो उसके महावाक्य सत्य हो जाएं। भगवानुवाच, तुम अष्ट रत्न में आने वाली हो, इस निश्चय ने स्वत: अष्ट शक्तियाँ जीवन में दे दी हैं। अगर एक भी शक्ति थोड़ी कम है तो मजा नहीं, अच्छा नहीं लगता है। एक भी शक्ति कम होगी तो आठों ही शक्ति काम नहीं करती हैं। समय पर ज़रूरत है एक की, आवे दूसरी तो फालतू समय गया, फिर मेरा काम तो पूरा हुआ ही नहीं। कोई घड़ी सहनशक्ति चाहिए .. उस समय समाने की शक्ति आये तो फायदा तो हुआ नहीं। कोई विस्तार की बात ही नहीं है, जो समेटने की शक्ति चाहिए। हंस समान परख लिया कि यह काम की बात है, यह नहीं है। परमात्मा ने इतनी अच्छी ऊंची समझ दे करके इतना सच्चा बनाया है तो निर्णय शक्ति आदि सभी शक्तियाँ स्वत: काम करने लग जाती हैं।

जब से बाबा के बनते हैं, तो फौरन राइट (ठीक) क्या है, रांग (ग़लत) क्या है, पाप क्या है, पुण्य क्या है, यह पता चल गया। फिर भी कोई आत्मा ने कहा,

यह ऐसे नहीं होना चाहिए, ऐसे नहीं होना चाहिए.. तो बाबा ने कहा, तुम वकालत का काम करना जानते हो क्या? क्या होगा, कैसे होगा, इसी चिन्तन में लम्बा टाइम जाता है। तो यह समय बर्बाद करते हैं। कभी कोई भूल हो जाये तो फिर कहेंगे, हाँ, इसने बरोबर भूल की है। तो न वकील बनना है, न गुनहगार बनना है। गुनाह करना माना भूल करना इसलिए भगवान के घर में कभी छोटी-सी भूल भी न हो, अटेन्शन नहीं है, तो टेन्शन में रहने से भूलें हो जाती हैं इसलिए थोड़ा अच्छी तरह से, गहराई से ध्यान देके बाबा को याद करो। अष्ट रत्नों में आना हो, तो यह पुरुषार्थ अभी से शुरू कर दो। सिर्फ भगवान का बनने में सुख इलाही का आनंद लेते रहो, आज्ञाकारी होकर रहो, तब लगेगा शिवभगवानुवाच है, हम भी आ सकते हैं।

बाप की आज्ञा है, शिक्षक की शिक्षायें हैं, सखे के रूप में तो एकदम साथ देते हैं, उनको देख करके करना सरल है। बाकी टीचर, टीचर है, उनके साथ हैण्ड शेक (हाथ मिलाना) थोड़ेही कर सकते हैं इसलिए बाबा को दोस्त बनाने से हाथ में हाथ मिलाना सहज हो जाता है तब उनका साथ है। बाबा विशाल बुद्धि बनाना चाहते हैं, विशाल माना बड़ा समझदार। बाबा ने जो बुद्धि दी है वो अच्छी तरह से काम करे, इसके लिए योग अच्छा चाहिए। "मेरी बुद्धि" यह भाव है तो थोड़ा देह का अभिमान है या सम्बन्ध का कुछ सूक्ष्म भान होगा। अभी बाबा हमारी बुद्धि के पीछे पड़े हैं, उसे ठीक करके रहेंगे, उसके लिए पहला मन्त्र देते हैं "मनमनाभव"। जितना अपने ऊपर अटेन्शन रहता, उतना बाबा खुश होते हैं।

समय का कदर है माना हर बात का फायदा लेने में बच्चा होशियार है क्योंकि संगम का समय थोड़ा है और प्राप्ति बहुत है, जितनी प्राप्ति करना चाहो, बाबा का सारा खज़ाना ले लेवें, तो बाबा खुश हो जायेंगे। इसमें मैं बहुत लोभी हूँ कि जो बाबा के पास है वो सब ले लूँ, छिप-छिपके ले लूँ, ऐसा दिल करता है, हक से ले लूँ। बाबा देने के लिए सारा दिन बैठे हैं और बाबा दे रहे हैं।

बाबा ने क्यों कहा कि अमृतवेले और शाम को संगठन में योग में बैठो। यह जो आदेश मिलते हैं उन पर नहीं चलते हैं तो 8 में तो क्या 108 में भी आना सम्भव नहीं है।

जैसे बाबा ऊपर रहते हुए सभी सेवाएँ कर रहे हैं, ऐसे बाबा कहते, तुम भी रहो ऊपर, शान्तिधाम से आये थे, चक्र में पार्ट पूरा हुआ। शान्तिधाम में जाने के पहले ही ऊपर रहो, नीचे सिर्फ सेवा के अर्थ आओ, तब औरों को महसूसता आयेगी। जैसे ब्रह्माबाबा सदा ऊपर रहते थे, साकार में सब कुछ करते, चक्कर लगाते, खाना खाते ऊपर रहते थे। बच्चे भी जब ऐसे समझदार, गुणवान बनते हैं तब दिलतख्त पर बैठते हैं। तब बाबा गले का हार बना देते हैं। फिर तो अष्ट रत्नों में आने वाले ऐसे बच्चों की आँख में बाबा और बाबा की आँख में ऐसे बच्चे। बाबा की वाणी बड़ी माठी लगती है, दृष्टि तो एकदम पार कर देती है। ऐसी दृष्टि सदा ही पड़ती रहे तो कितनी अच्छी बात है।

प्रश्न:37- सहज ईश्वरीय सेवा की विधि क्या है?

उत्तर:37- नॉलेज से दिल को सच्चा बनाओ तो उस स्थिति से ही सेवा है, बाबा का समझदार बच्चा अंतर्मुखी हो करके अपनी स्थिति को ऐसा बनाने की धुन में लगा रहता है, तो उससे सेवा स्वत: होती है। कोई-कोई कभी सेवा में स्थिति को नीचे-ऊपर करते हैं। अगर स्थिति ऊंची हो तो सेवा इतनी अच्छी होगी जिससे एक मिनट भी व्यर्थ नहीं जायेगा। एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं जायेगा। सेवा है ही यह कि बाप समान बनना है, इसके लिए बाबा को सामने रख करके कदम-कदम पर श्रीमत पर चलने के लिए आत्मा सदा हाँ जी करती है। कारण बताना या कारणवश हम कुछ मिस करें तो हम झूठे हो जायेंगे। सच्चे के आगे कोई कारण ही नहीं है, जो याद और सेवा में रुकावट डाले। ऐसे भी नहीं कि कारण आये ही नहीं, कई बार कई कारण आये, पर हम उनको देखने वाले हैं ही नहीं। तो माया ने भी समझ लिया कि यह हमारी सुनने वाले हैं ही नहीं। माया तो पीछे पड़ी रहती है, वो दिखाती रहती है कि यह भी देख, यह भी

सुन..लेकिन भगवानुवाच, अब हमारे ये कान, आँख इन बातों को देखने-सुनने के लिए हैं ही नहीं। अब मैं यह नहीं कर सकती क्योंकि अपने को बाबा की शिक्षाओं द्वारा समझाकर सीधा कर दिया है। एक बार भी नीचे-ऊपर होंगे तो स्वमान में रह नहीं सकेंगे।

प्रश्न:38- पुरुषार्थ में सफलता का आधार क्या है?

उत्तर:38- देही-अभिमानी स्थिति में नेचुरल रहा जाए, यह नेचर बन जाए। मैंने देखा है, इसमें दिल से पुरुषार्थ करने वाले को सफलता मिलती है। दिल से करे और लगातार भी करे। कब-कब शब्द होने से, लगातार न होने से मेहनत करनी पड़ती है। फिर आत्मविश्वास थोड़ा कम हो जाता है। अपने अनुभव से, चाहे औरों के अनुभव से, अपनी स्थिति को मजबूत बनाना है। कभी हमारा आत्मविश्वास कम न हो। ब्राह्मण जीवन में विश्वास ने ही यहाँ तक लाके बिठाया है। सेवा में भी बाबा को विश्वास हो गया है कि मेरे बच्चे करेंगे। अगर हमको अपने पर विश्वास है तो बाबा को भी हमारे में विश्वास हो गया है, तब तो कहते हैं कि बच्चे करेंगे। बाबा तो करनकरावनहार हैं, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर से भी कराने वाले हैं। करनकरावनहार का पार्ट एक का ही है।

प्रश्न:39- कोई बात अच्छी न लगे तो क्या करें?

उत्तर:39- थोड़ा-सा किसी घड़ी चिड़चिड़े हुए तो आदत पड़ जायेगी। कारण बताके भी चेहरे में परिवर्तन आया तो वो ज्ञान-स्वरूप चेहरा दिखाई नहीं पड़ेगा। किसकी बात न अच्छी लगी तो क्या करेंगे? ज्ञान कहता है, तुम्हारे चिड़चिड़ेपन से तुम्हें ही नुकसान हुआ। बात और किसकी है, चिड़चिड़े तुम हुए, इसलिए बाबा मुरली चलाते कहते, मैं किसकी ग्लानि नहीं करता हूँ लेकिन बच्चों को ड्रामा का सारा नॉलेज सुना देता हूँ। तो सूक्ष्म अपने को साफ और सच्चा रखने की दिल में बहुत लगन हो। अंत मते ऐसी हो जैसे बाबा ने मेरे में उम्मीद रखी है। अंत मते एक बाबा ही सामने हो। मेरा स्वभाव-संस्कार किसी के भी सामने न हो। बहुतकाल से अंत मते का ख्याल रहे, जो

अंदर दिल में कभी बुरा ख्याल उत्पन्न ही न हो, तो ऐसी स्थिति बनानी है।

सेवा के कारण कई बातें आती हैं पर अपनी स्थिति, अपने को ही बनानी है। सेवा में यह बात है, वो बात है लेकिन कितनी बातें इकट्ठी करेंगे और कौन सुनेगा, कौन फैसला करेगा? फैसला यही है, शिव बाबा को याद करो, तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायें; कोई आत्मा के साथ हिसाब-किताब न हो। इसके लिए सच्ची याद चाहिए, हिसाब ऐसे ही चुक्तू नहीं होगा।

प्रश्न:40- कौन-सी सेवा करें जो विनाश से पहले कोई आत्मा संदेश बिना रह न जाये?

उत्तर:40- हमको सच्चा बनना है। पहले वाला भी दाग मिट जाये और अभी कोई दाग न लग जाये, ऐसे साफ रहें। साफ दिल वाले पर विश्वास बहुत हो जाता है क्योंकि वे कभी हेराफेरी नहीं करते हैं। बातें नहीं बनाते हैं। सही बात, साफ बात जो बाबा की है वही उसके दिल में रहती है। मन को याद की शक्ति से इतना अच्छा बनायेंगे तो वह भी कहेगा, मैं शान्त हूँ। अशान्त होने की बात ही नहीं है। इतनी पावरफुल शान्ति हो जो और अशान्त आत्मा को भी शान्ति का बल आ जाये। अति मीठी सेवा, सूक्ष्म सेवा बहुत अच्छी है। सेवाधारी को जो सेवा करनी है और जो पहले की है वो भी ड्रामा अनुसार अच्छा हुआ। अभी कौन-सी सेवा ऐसी हो जो विनाश के पहले कोई एक आत्मा भी रह न जाये। त्याग, तपस्या से शांत रहना, जो सबको खींचके बाबा का बना दे। तो जैसे मैं बाबा का बना हूँ वैसे और भी बनें, इसके लिए मैसेज देने की सेवा के बीच जो माया इन्टरफियर करती है, उसे ऐसा डबल लॉक लगा दो जो वह आ न सके। फिर भी हर बात में सच्ची याद और सच्ची सेवा हो। बाबा की कोई भी एक बात को जीवन में लाओ तो वही बात हमारे लिए वरदान है।

प्रश्न:41- हम व्यर्थ नहीं बोलते पर कोई व्यर्थ सुनाए तो इस प्रकार कैसे बचें कि वह नाराज भी न हो?

उत्तर:41- अभी का हमारा यह समय बहुत अमूल्य है, इसलिये समय को वेस्ट

नहीं गंवाना है। व्यर्थ बातों में समय नहीं गंवाना है। कोई सुनाने आये और हम नहीं सुनें तो दूसरे जो सुनने वाले होंगे उन्हें जाकर वे सुनायेंगे। फिर आपके लिए कहेंगे, ये तो हमारी बात सुनते ही नहीं, हमारे से बात ही नहीं करते। लेकिन यदि आप आज एक बात सुनेंगे तो कल दूसरी बात सुनाने आयेंगे इसलिये ऐसी समय गंवाने वाली बातें न सुनें, न सुनायें। भले इसमें उसे नाराज़गी वा दु:ख फील हो, कोई हर्जा नहीं क्योंकि समय कहता हैं, ऐसी बात सुनो, सुनाओ जो भूले नहीं, याद रहे, बाकी बातों से हमारा कोई कनेक्शन नहीं। हरेक के कर्म का हिसाब-किताब अपना है। हाँ, शुभ चिंतक होके रहना हमारा काम है। बाकी बाबा की दी हुई समझ को कार्य में लगाने वाला जैसा करता है, वैसा पाता है। बात करना शुरू करेंगे तो वह बन्द नहीं होगी। एक जगह की बात नहीं करेंगे, दस को मिलाके करेंगे, तो वो कौन हुए? कोई हर्जा नहीं है, हम उनके लिये शुभ चिंतक रहेंगे। अपने आपको स्वच्छ करना है, अन्दर में बातों को इकट्ठा नहीं करना है। जहाँ बाप है वहाँ कोई बात नहीं होती है, एकदम समाप्त हो जाती है। शान्ति से, प्रेम से, शक्ति से, सच्चाई से बाबा के इशारों को समझ करके उसी अनुसार अपना पार्ट बजाओ। कभी अपने को आत्मा समझ बाबा के पास बैठके पूछो, बाबा मैं ठीक हूँ? तो बाबा भी कुछ कान में कहे, और अच्छी-अच्छी बातें सुना करके हमारा दिमाग ठीक कर दे। बाबा की बातें सुनो तो शरीर भी ठीक हो जाता है, मन भी ठीक हो जाता है, सम्बन्ध भी ठीक हो जाता है क्योंकि बाबा की शक्ति है। बाबा की शिक्षाओं को पालन करने से शक्ति मिलती है। बाबा ने हरेक को व्यक्तिगत रूप से स्नेह दिया है तभी यहाँ बैठे हैं। बाबा के स्नेह से सफलता गले का हार बन गई है।

प्रश्न:42- हर कर्म में याद का अनुभव सुनाइये?

उत्तर:42- बाबा ने हर कर्म करते याद में रहना सिखा दिया। मजा आता है बाबा की याद में स्नान करो, कंघी लगाओ। बाबा को स्नान करा रही हूँ या बाबा मुझे स्नान करा रहे हैं। मैं बाबा को खिला रही हूँ, बाबा मुझे खिला रहे हैं।

बाबा के सामने जाती थी तो बाबा पूछते थे, बच्ची, पहले तुझे खिलाऊं या बाबा को खिलाऊं। हँसकर कहती थी, बाबा आप मुझे खिलाओ, मैं बाबा को खिलाती हूँ। इतनी वन्डरफुल बातें हैं, जीवन में अपनाने की।

प्रश्न:43- बाबा की शिक्षाओं को अमल में लाने का औरों पर क्या प्रभाव होगा?

उत्तर:43- सेवा के लिए बाबा की जो श्रीमत मिली हैं, उनको हमने प्रैक्टिकल अमल में लाया है? पहले पढ़ाई पढ़ते हैं फिर प्रैक्टिस करते हैं। प्रैक्टिस इतनी अच्छी हो जाये, तो सफलता पीछे घूमती रहे क्योंकि एक बार ज्ञान बुद्धि में अच्छी तरह से आ गया तो दिन-रात सेवा में लग जाना चाहिए। तो अगर हम आत्मायें बाबा की शिक्षाओं को अमल में लाती हैं तो अनेक आत्माओं को सफलता दिलाने के निमित्त बन सकते हैं। श्रीमत पर सेवा करते रहो तो सफलता छिम-छिम करके आयेगी। सच्ची दिल से सच्चा पुरुषार्थ करो। खुद, खुद से ईमानदार रहो, ईमानदार शब्द की गहराई में जाके अपने को देखो कि हमारा ऐसा पुरुषार्थ है, जो बाबा के दिल से निकले, ये मेरे सच्चे बच्चे हैं। जब तक बाबा हमें सच्चाई का सर्टिफिकेट नहीं देगा तब तक हमारे पुरुषार्थ में कमी रहेगी। सच्ची लगन से लगाव मुक्त, नेचुरल बाबा की याद में समाये हुए रहो, जिससे पुराने विकर्म विनाश हो जायें। सदैव अन्दर से यह हो कि हम फ्री हैं या कोई फिकर है? केयरलेस हैं या केयरफ्री हैं? दिन-रात अपने को चेक करके चेंज करने के लिये हमारे पास टाइम बहुत है। टाइम है चेंज होने का, जब तक नई सतयुगी दुनिया में आने वाले तैयार नहीं हुए हैं, लायक नहीं बने हैं तब तक बाबा विनाश को रोक रहे हैं। विनाश थोड़ा जलवा दिखाता है, बाबा फिर शान्त कर देते हैं ताकि बच्चे तैयार हो जायें। बाबा कितनी मेहनत करते हैं साकार में भी, अभी अव्यक्त में भी। तो अपने को देखो, बाबा ने जो कहा, हमने वो किया? पढ़ना, फिर रिपीट करना इज़ी है परन्तु साथ-साथ यह चेक भी करना है, बाबा ने जो कहा वो हमारे से एक महावाक्य भी मिस न हो क्योंकि बाबा का एक महावाक्य भी अगर हम यूज़ करते हैं तो वो वरदान का

रूप आपेही हो जाता है।

प्रश्न:44- शिव बाबा ईमानदार बच्चा किसे कहते हैं?

उत्तर:44- नम्बरवन में आना हो तो अपने से पूछो कि मैं आज्ञाकारी, वफ़ादार हूँ? एक बाबा के सिवाए दूसरा कुछ याद नहीं आता है? दूसरे भी हमें याद नहीं कर सकते हैं। जैसे पाँच स्वरूपों की ड्रिल बाबा ने बताई, ऐसे यह भी ड्रिल करो कि मैं ईमानदार हूँ? यज्ञ की एक पेनी भी व्यर्थ न जाये। मैं फ़रमानबरदार होके चलता/चलती हूँ? फालतू बात थोड़ी भी करना, यह बेईमानी है। वो बाबा का बच्चा नहीं है। आपस में फालतू बात करने वाले बाबा के दिल पर चढ़ नहीं सकते। उनको बाबा की याद आ नहीं सकती। तो जो ऐसे ईमानदार होकर चलते हैं, उन्हें बाबा दिल से प्यार करते हैं। जिसे बाबा दिल से प्यार करे उसमें और ही शक्ति आ जाती है। यज्ञ के भोजन का महत्व जिस आत्मा को है उसकी अवस्था कभी नीचे-ऊपर नहीं होगी।

प्रश्न:45- राजयोग क्या है?

उत्तर:45- बाबा मेरे से क्या चाहते हैं? यह है राजयोग। बाबा ने दृष्टि दे करके हमारी आँखों को ही बदल दिया, देखना है तो क्या? सुनना है तो क्या? यह है राजयोग, जिससे बल मिलता है। मुझे क्या देखना है, क्या सुनना है, क्या बोलना है? इतना अपने ऊपर ध्यान रखेंगे यानि जितना साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। ज़रा-सा छींटा भी हमारे ऊपर पड़ा तो इज्जत हमारी ही गई, गफलत हमारी ही मानी जायेगी, इसमें कोई भी कारण नहीं दे सकते हैं। अच्छी बात ले लो फायदे के लिये, किसको दोष मत दो। कोई भी कारण सोचना, बताना, दिल में रखना यह सब समय की बर्बादी है। तो या है वरदान या है वरी। न वरी, न हरी, न करी।

प्रश्न:46- चारों विषयों (ज्ञान, योग, धारणा, सेवा) के आपसी संतुलन का क्या अर्थ है?

उत्तर:46- 1.योग लगाकर ज्ञान सुनाते हैं तो दूसरे का भी बाबा से योग लग

जायेगा। योग नहीं है तो ज्ञान कितना भी अच्छा हो, बाबा से कनेक्शन नहीं जुटेगा। एक कान से सुन दूसरे से ज्ञान निकल जायेगा और योग का अनुभव नहीं करा पायेंगे।

2- कोई भी बात अपनी या पराई चित्त पर न रहे। अच्छी बात है वो याद रहती है, फालतू की सब बातें भूल जायें। मन बिल्कुल फ्री है। कोई बात बुद्धि को खींच न पाये।

3- अगर सेवा में बिजी रहें तो माया को आने का चांस नहीं है लेकिन सिर्फ बिज़ी रहने के लिये सेवा नहीं करनी है। सेवा मेरा भाग्य है। त्याग का भाग्य है। मम्मा-बाबा की त्याग वृत्ति देख हम सभी को त्याग करना सहज हो गया। देह के सम्बन्ध की कुछ भी याद नहीं। वन्डर है, कैसे त्याग हो गया।

4- सारी सेवा त्याग और तपस्या के आधार से है। मान-शान मिले, पोज़िशन मिले उस आधार से सेवा नहीं है। सेवा में समय सफल हो रहा है, मेरा यह भाग्य है। सेवा स्थिति को अडोल बनाने का साधन है, छोटी-मोटी बातें स्वत: ही पार हो जायेंगी।

प्रश्न:47- अच्छी स्थिति बनाने के लिए क्या करें?

उत्तर:47- स्थिति में सच्चाई, सफाई, सादगी हो। जितना सिम्पल रहें उतना सुखी हैं, इसलिये यह चाहिए, वह चाहिए... कोई ज़रूरत नहीं है। चाहिए-चाहिए-चाहिए बड़ा नुकसानकारक है। एक है मेरे लिये होना चाहिए..., और नहीं तो यह तो होना चाहिए...। दूसरा, यहाँ सिस्टम ऐसी होनी चाहिए...। तीसरा, इसको यह समझाना चाहिए... अरे, तुमको क्या करने का है! अपने को कुछ नहीं चाहिए, जो बाबा की मेरे में उम्मीदें हैं ना वो पूरी करनी हैं बस। बाकी किसी भी प्रकार का "चाहिए" शब्द नुकसानकारक है, इससे फ्री हो जाओ तो बहुत ऊँची राजाई है।

संगमयुग पर बाबा के राजे बच्चे बन जाओ, बाबा की यह बात सिरमाथे पर रख दो। कैसी भी आत्मा हो उसके लिये भी रहमदिल बनो। मन में, दिल में

सच्चाई और प्रेम का भण्डारा भरपूर हो, दाता बन देते जाओ। भाग्यविधाता ब्रह्मा बाबा, वरदाता शिवबाबा, भाग्य है जो यहाँ बैठने, खाने, पहनने के लिये बिगर मांगे बाबा की तरफ से सबकुछ मिलता है। दिल साफ रखो, तो बाबा से जो चाहिए वो आपे ही मिल सकता है। किसी की, कोई भी बात दिल में रखी तो बाबा दृष्टि नहीं देंगे। कोई भी बात सामने आये, बाबा के सामने बैठ ज़ाओ तो बात चली गई, ऐसी अवस्था बन जाये। ऐसे किया है हमने तब बता रहे हैं। अभी बाबा ने कहा, शिव शक्ति बन जाओ तो बस और क्या चाहिए!

प्रश्न:48- साइलेंस की शक्ति की उपलब्धियाँ क्या हैं?

उत्तर:48- 1- साइलेन्स में रहने से कैचिंग पावर और टचिंग पावर आती है जो समय पर बहुत मदद करती है। जैसे साइंस एक सेकड में क्या से क्या कर सकती है, साइलेंस की शक्ति उससे भी कई गुणा ज्यादा है। स्वयं को पहचानने के लिये गहन साइलेंस चाहिए, बाबा को पहचानने के लिये भी साइलेंस चाहिए, ड्रामा के हर दृश्य पर अडोल रहने के लिये भी साइलेंस चाहिए। अगर साइलेंस की शक्ति नहीं तो तीनों की समझ नहीं है। बाकी सफेद साड़ी पहन ली, क्लास में हाजिर हो गये, ज्ञान सुना लिया, यह बड़ी बात नहीं है। गहराई को साइलेन्स से ग्रहण करना है।

2- बाबा ने ओम् की ध्वनि से सबको खींच लिया। और कुछ ज्ञान नहीं था, पर उस साइलेंस की शक्ति से कितने समर्पित हुए। साक्षात्कार का पार्ट शुरू हुआ। फिर शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा जीवन जीना सिखाया, क्या खाना है, क्या पहनना है, बिस्तर कैसा होना चाहिए, सफाई कैसी होनी चाहिए, सब सिखाया।

3- पहले साइलेंस, फिर प्यार, फिर ज्ञान। मुरली सुनकर, सारी रात कोने में जाकर योग लगाते थे। साइलेन्स का अनुभव करते थे। जो गुप्त तपस्या करते हैं वे बाबा को अच्छे लगते हैं। सेवा भी करते हैं लेकिन कोई आवाज़ नहीं। फिर बात निकली "कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो"। बाबा निरीक्षण के लिए चक्कर लगाते थे, बाबा को देख साइलेंस में रहने की प्रेरणा मिलती

थी।

प्रश्न:49- आपके अंदर बार-बार कौन-सी बात आती है?

उत्तर:49- अभी मुझे तो चिंता नहीं चितवना है। अन्दर बार-बार यह बात आती है, बाबा, जो बाकी थोड़ी कमी रही है वह खलास हो जाए। छोटी कमज़ोरी भी बहुत मोटी होती है, मोटी दिखाई पड़ती है, छोटी दिखाई नहीं पड़ती है। है छोटी पर अन्दर मोटी है, बड़ा नुकसान करने वाली है, करती है। अभी समय है और मधुबन में अपने आपको देखने का काम अच्छा है। अपने को अच्छी तरह से देखना, जानना फिर बाबा को सामने रखना। इस समय अपने आपको बदलना क्योंकि हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। जग को बदलने की ज़िम्मेवारी मेरी नहीं है, और बदलें उसमें समय नहीं गंवाओ, यह बदले, यह बदले... समय व्यर्थ करना है। मैं सच्चे दिल से पुरुषार्थ करूँ, मैं ऐसे बदलूँ जो मेरे को देख कइयों को बदलना सहज हो जाए। मुझे बदलके क्या बनने का है, यह तो बाबा ने बड़ा स्पष्ट आइना दिया है।

प्रश्न:50- सूक्ष्म कमज़ोरी का कारण क्या है?

उत्तर:50- बाबा ने हम सबको सर्वशक्तियाँ प्रयोग करने के लिए दी हैं। अष्ट शक्तियों का ज्ञान है परन्तु प्रयोग करने के लिए सर्वशक्तिवान बाप स्पेशल शक्ति देते हैं, अगर शक्तियों का ज्ञान है पर मेरे जीवन में प्रयोग नहीं हो रही हैं तो मानो कि सर्वशक्तिवान बाप से संबंध नहीं है इसलिए अन्दर सूक्ष्म कमज़ोरी छिपके बैठ गई है, उसको देह अभिमान साथ दे रहा है इसलिए मीठे-मीठे बाबा के मीठे महावाक्य हैं: 1. देही अभिमानी भव 2. अशरीरी भव 3. विदेही भव। यह बाबा रोज़ सुनाते हैं ताकि आत्मा में जो देह का भान भर गया है वो सारा निकल जाये। "मैं आत्मा, यह शरीर", इस गुप्त अभ्यास से अशरीरी बनने का रस बैठ जाये। कार्य-व्यवहार में रहते, सेवा करते "मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ... इस शरीर की कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कर रही हूँ, देख भी रही हूँ, बात भी कर रही हूँ... पर मैं आत्मा हूँ", ऐसी आत्म-अभिमानी स्थिति में रहने के लिए

इतना ध्यान रखना होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा का आत्म अभिमानी स्थिति में रहने का स्वाभाविक अभ्यास था। ऐसे चलते-फिरते, खाते, कर्म करते पूरा ध्यान रहे। ऐसा अभ्यास चाहिए जो मेरे से कोई आवाज़ से और व्यक्त भाव से बात भी न करे।

प्रश्न:51- सहजयोगी बनने वालों के लक्षण क्या होंगे?

उत्तर:51- मेरे कारण से किसी का व्यर्थ संकल्प न चले क्योंकि उससे मेरा योग नहीं लगेगा। जो अपने ऊपर इतना ध्यान रखते हैं वो सहजयोगी, नेचुरल योगी बन जाते हैं। ऐसों का चलना भी और देखना भी सेवा करता है। जिसे सेम्पल बनना हो तो सिम्पल रह करके सच्चा तीव्र पुरुषार्थ करने में लग जाए। यह शब्द न कहे, पुरुषार्थ क्या होता है? सिम्पुल बन करके सैम्पुल बनना। मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ, घर जाना है, उसके भी पहले समर्पण, मेरा कुछ नहीं, इसको समर्पण कहा जाता है। फिर मन-वाणी-कर्म श्रेष्ठ, संकल्प, श्वास, समय सफल। हमारे अन्दर की भावना है, हम बदलेंगे, जग आपेही बदलेगा। अभी बदलने में इतना समय नहीं लगायेंगे। अभी भी कोई न कोई अपने स्वभाव-संस्कार के वश में हैं। ऐसा मेरा स्वभाव न हो जो किसी को भी मेरे स्वभाव अनुसार चलना पड़े। नेचुरल नेचर बाप जैसी हो। समय कहता है, कर ले, बाबा कहता है, तुम अभी करेंगे तो मैं तुम्हारा साथी हूँ। तो ऐसी सेवा करने के लिए साक्षी हो करके ड्रामा पर अडोल-अचल रहो।

प्रश्न:52- दुनिया से पाप समाप्त कब होगा?

उत्तर:52- कभी किसी को बाहर की दुनिया याद न आये, बाहर का खाना याद न आये, इसलिए बाबा के संग खाओ, खेलो, हंसो, नाचो। संगम का समय बहुत थोड़ा है, टाइम पूरा हो जायेगा, विनाश आयेगा, बाबा चले जायेंगे। मैं स्वयं बाबा के सामने हाजिर रहूं, बाबा मेरे साथ रहें, यही समय है। बाबा के साथ रहना और साक्षी होकर पार्ट बजाना, यह समय की कीमत को बढ़ाना है। बाबा से जो मिलता है वो जी भरके लो, सबकी दुआयें लो, पुण्य का खाता

बढ़ाओ। पाप का खाता एकदम खत्म कर दो। हमारा पाप खत्म होगा तो दुनिया से भी पाप खत्म हो जायेगा।

प्रश्न:53- सही अर्थों में अमूल्य जीवन कैसे बने?

उत्तर:53- वैल्यू उसकी जो सच्चा है, जिसमें झूठ का नामोनिशान नहीं है। चलते-फिरते सच दिखाई पड़ता है, उसके अंदर भावना है, परमात्मा सत्य है। सत्यम् शिवम् सुन्दर मेरे बाबा का रूप है। सत्य हैं, कल्याणकारी हैं, ब्यूटीफुल हैं। उन जैसा सुंदर कोई है ही नहीं। वे काले को भी गोरा बना देते हैं। इतनी सच में शक्ति है। तो मैं ऐसा सच्चा हूँ? सबके प्रति कल्याण की भावना है? ऐसा ब्यूटीफुल बच्चा हूँ तो वैल्यू होगी। वरच्यूज लाइफ में हैं तो वैल्यू है, रास्ता क्लीयर है, कहाँ भटकता-मूँझता नहीं है। औरों को भी रास्ता दिखाता जाता। उसके पीछे जाना अच्छा लगता है। कन्फ्यूजन नहीं है। कहते भी हैं, सच की नइया डोलेगी पर गैरंटी है, डूबेगी नहीं। सत्य नारायण की कथा मशहूर है। नइया और खिवैया की कई कहानियाँ भक्ति में भी सुनी हैं। बोट चलाने वाला कभी डरता नहीं है, पार ले जाता है। पढ़ा-लिखा है तो अभिमान है, बोटमैन अनपढ़ा है, अभिमान नहीं है। विशेषता का भी अभिमान न हो। कोई कहता, मेरी यह विशेषता है, भगवान ने यह विशेषता दी, यह भूल गया। अपना अभिमान आया तो जैसे भगवान की दी हुई विशेषता उसे ही वापस दे दी।

प्रश्न:54- अब पाँच तत्वों को कौन-सा बल चाहिए?

उत्तर:54- जैसे साइन्स ने सारी दुनिया को अपने हाथों में कर लिया है, कदम-कदम पर साइंस काम आ रही है, संगमयुग पर अंतिम समय में साइंस ने अपना कमाल दिखाया है, ऐसे हमारी साइलेन्स क्या नहीं कर सकती। मनुष्यों के दिमाग में आ गया है कि मनुष्य जो चाहे वह कर सकता है। प्रकृति के पाँच तत्वों को भी हाथों में ले लिया। पाँच तत्व बिचारे, बिचारे हो गये हैं। अब उनको चाहिए साइलेन्स का बल। सारी दुनिया साइंस के दबाव, प्रभाव में है, उसके बिना कुछ भी कर नहीं सकते हैं। हम बाबा के बच्चे साइलेन्स से शक्ति

ले रहे हैं। अगर साइलेन्स हमारे में नहीं होगी तो शक्ति कैसे आयेगी। साइलेन्स की शक्ति से व्यर्थ समाप्त हो जाता है। बाबा कहते, बच्चे जो बीत गया. उसे भूल जा।

प्रश्न:55- विकर्म रहा हुआ है, उसका प्रमाण क्या है?

उत्तर:55- योग काम चलाऊ नहीं करो, सेवा भी काम चलाऊ नहीं करो। क्या सबूत है कि योग से मेरे विकर्म विनाश हुए हैं! अभी मेरे से कोई काम ऐसा न हो जो नियम मर्यादा के अनुकूल न हो। नियम मर्यादा और सभ्यता आइना है। सभ्यता है, पहले आप। पहले मैं, यह सभ्यता नहीं है। विकर्म रहा हुआ है तो घड़ी-घड़ी मूड को चेंज कर देता है। ज्ञानी-योगी आत्मा की मूड चेंज नहीं हो सकती। कोई भी बात है तो उसे योगबल से खलास करना है।

प्रश्न:56- आत्मा में कमज़ोरी आने का कारण क्या है?

उत्तर:56- साइलेन्स की शक्ति से समर्थ संकल्पों की शक्ति का पता चलता है। सर्वशक्तिवान के बच्चे हैं, सीट पर सेट हैं तो कर्मेन्द्रियाँ आर्डर मानती हैं। देह-अभिमान के वश शक्ति गई, मेरा बाबा भूल गया, कमज़ोरी आ गई। मैं आत्मा, मेरा बाबा, बस, शक्ति आ गई। अभिमान खत्म हो गया, तो मेरे अनुभव से अनेक आत्माओं को शक्ति मिल गई। इतना स्पष्ट ज्ञान जब बुद्धि में आया तब योग भी सहज हो गया, लाइन क्लीयर हो गई। पेट्रोल अगर क्लीन (साफ) न हो तो मोटर गाड़ी कैसे चलेगी! पानी भी अगर स्वच्छ न हो तो पियेंगे कैसे! खाना भले अच्छा मिले लेकिन पीने वाले पानी में थोड़ी भी मिट्टी हो तो! इसलिए मीठे बाबा ने आइना दे दिया कि समझदार वह जो व्यर्थ को अभी समाप्त करे। कई व्यर्थ को व्यर्थ नहीं समझते हैं, उसे अच्छा समझकर यूज़ करते हैं। सच्ची दिल से कोई अपना पुरुषार्थ देखे, होंगे रांग पर झुकेंगे नहीं। रियलाइज़ नहीं करेंगे। अंदर उल्टा नशा रहेगा इसलिए बाबा कहते, अहंकार को मार, अभिमान को छोड़। कल की कोई बात है, उसे मैं तो भूल जाऊँ, औरों को भी भुला दूँ। मैं भूलेंगी तो मेरा फायदा। मेरे से कोई भूल हो

गई, महसूस हुआ, फिर से कभी न हो। फिर दूसरों के लिए भी ऐसी अच्छी भावना हो, ऐसा संकल्प न हो कि यह तो सुधरेगा ही नहीं, इसको समझाना व्यर्थ है, यह बात करने वाला कौन? अभिमान, जो अंदर ही अंदर घुसा हुआ है। इस देहभान से मरना होगा, बाबा का बनना होगा।

प्रश्न:57- दूसरे के कर्म देख संकल्प न चलें, क्या करें?

उत्तर:57- कर्म अकर्म विकर्म की गति बाबा बच्चों को समझाते हैं। कर्म दूसरे के, संकल्प मेरे चलें, यह भी ठीक नहीं है..यह संकल्प भी अभिमान वाला है। तो कितनी रियलाइजेशन चाहिए। इसमें न दादी बनना चाहिए, न दादा बनना चाहिए। स्टूडेन्ट लाइफ दी बेस्ट। बड़ा होना बड़ा दुख पाना। बाबा के बच्चे हैं ना। बच्चे कहेंगे, बाबा बैठे हैं, मैं क्यों संकल्प चलाऊँ! जब ब्रह्मा बाबा ही संकल्प नहीं चलाते तो मैं क्यों चलाऊँ।

प्रश्न:58- सेवा में थकावट न आए, उसकी विधि क्या है?

उत्तर:58- जितनी ऊँची पढ़ाई है, जैसी पालना है ऐसे सच्चे दिल से सेवा करते हैं, सेवा का बोझ नहीं है। बोझ है तो थकावट है। ड्यूटी समझेंगे तो थकावट होगी। सच्चे दिल से सेवा करो तो थकावट नहीं होगी। बाबा एक ही टाइम में कितना दे रहे हैं। जिसको जो ज़रूरी है एक्यूरेट सब दे देते हैं। इतना सहज करके देने वाले बाबा सिखा रहे हैं, तुम ऐसे करो। बहुत मेहनत नहीं सिखाओ, किसको सहजयोगी बनाओ। इतनी योग की पावर हो जो संग में आते ही रंग लग जावे।

प्रश्न:59- अन्तिम गति श्रेष्ठ हो, उसके लिए क्या तैयारी करें?

उत्तर:59- जहाँ हमारा मन होगा वहाँ हमारा तन और धन होगा। धन का मुझे क्या करना! धन सेवा के लिए आता है। मुझे कुछ नहीं चाहिए। अन्त मते सो गते, शरीर छोड़ने के पहले सब तैयारियां कर ली हैं। मोहजीत बन गये हैं। सबसे बड़ा भारी विकार है सूक्ष्म मोह। काम भी चला गया, बाबा-बाबा कहा, पवित्रता आ गई। पवित्रता के बिगर तो यहाँ बैठ भी न सके। थोड़ी भी वृत्ति-

दृष्टि चंचल होगी तो बाबा यहाँ से भगा देगा। वह ऐसे संगठन में बैठ नहीं सकेगा। अगर अन्दर गुस्सा होगा तो संगठन में रहने में उसको मज़ा नहीं आयेगा, दूसरों को भी मज़ा नहीं आयेगा। एक बार गुस्सा करेंगे तो 6 मास तक भूलेगा नहीं। इसलिए बड़ा सम्भालना है। फिर लोभ तो रख ही नहीं सकते। बाबा का बच्चा लोभ क्यों रखे, क्या करेंगे! कहाँ रखेंगे ! गुस्सा करना तो बड़ा भारी दोष है। गुस्से की नेचर ज़रा भी मेरे में न हो। कोई हैं जो गुस्से को गुस्सा नहीं समझते हैं, कहेंगे हमने यह बात कही थी, आपने समझी नहीं... जोश में आकर सिद्ध करेंगे। इसमें अपने को अन्दर बहुत मीठा बनाना होता है।

प्रश्न:60- सफलता के लिए सरल-सा सूत्र बताइये।

उत्तर:60- सतयुग में तो राजाई होगी यहाँ के पुरुषार्थ से। अभी भी प्रकृति अधीन नहीं बना सकती। वह हमारे अधीन रहे। प्रकृति को अधीन बनाओ, तुम उसके अधीन नहीं बनो। यह शरीर 5 तत्वों का है, 5 तत्वों की दुनिया है। हर एक का स्वभाव अपना-अपना है, उसके अधीन नहीं बनो। बाबा से शक्ति लेकर गुणवान बनो। काम होगा, तो क्रोध भी जरूर होगा। मेरे मनपसन्द काम नहीं हुआ, थोड़ी भी ईर्ष्या है तो क्रोध जरूर होगा। इसलिए मन-वाणी-कर्म को बाबा से मिलाओ। बाबा ने कभी नहीं कहा कि मेरा विचार यह है, बाबा हमेशा कहेंगे - बच्चे, बाबा ने यह समझाया है। बाबा के बोलने की कापी करना सीख लो तो भी सफलता साथ देती है। हमारा समय सफल हो गया तो वायुमण्डल भी अच्छा हो जाता है।

प्रश्न:61- सूक्ष्म पाप कैसे बनते हैं?

उत्तर:61- कइयों के लिए सोच लेते हैं कि यह तो जैसा था वैसा ही है, यह तो कभी सुधरेगा ही नहीं। ऐसा चिंतन जो करते हैं या औरों को सुनाते हैं, यह भी कितना सूक्ष्म पाप है। कितनी सज़ा मिलेगी। कर्मों की गति का ज्ञान होते हुए भी कोई ग़लत काम करेगा तो उसे सज़ा भी ज्यादा मिलेगी।

पहले बाबा कहते थे, बच्ची, एक-दो को सावधान करके उन्नति को पाना है। पर एक-दो को सावधान कौन करेगा! तो हम कहते थे, एक-दो के आगे सावधान रहकर उन्नति को पाना है। सावधान रहना माना अपने ऊपर अटेन्शन देना। अभी तक कितने परसेन्ट अलबेलाई है? बेफिकर भले रहो, अलबेले न हो। अलबेलाई के कारण समय की कीमत नहीं है। जितना बाबा देते हैं उसकी कीमत नहीं है। अपने को आधारमूर्त, उद्धारमूर्त समझ समय को सफल नहीं कर रहे हैं। लेकिन किसी के लिए ऐसा आधार भी न बन जाएं जो वह हमारे ऊपर आधारित हो जाए।

प्रश्न:62- माया (विकार) किसके पास आती है?

उत्तर:62- माया उसके पास आती है जिसके पास आसक्ति है। गीता में शब्द हैं अनासक्त वृत्ति नष्टोमोहा। जो बाबा का समझदार बच्चा ज्ञानी तू आत्मा है, वह हर समय समझ को यूज़ करता है। वह निरन्तर योगी, बाप समान बनने की धुन में लगा रहता है। पहले है ज्ञानी तू आत्मा, आत्मा में बाप का ज्ञान अन्दर से भर गया। अज्ञान और ज्ञान में कितना अन्तर है। अज्ञान है अंधकार, ज्ञान है रोशनी। तो जैसे बाबा कहते हैं, ज्ञान सूर्य प्रगट हुआ, अज्ञान अंधेर विनाश। सूर्य की रोशनी वन्डरफुल है, वह रोशनी का भी काम करती है तो सकाश का भी काम करती है। एक ओर प्रकाश से अंधकार खत्म, दूसरी ओर सकाश से सारे जीव-जन्तु खत्म, किचड़ा भस्म। ऐसे ज्ञान सूर्य के प्रकाश से सब हराभरा हो जाता है, खिल जाता है। तो बाबा ज्ञान सूर्य हैं फिर ज्ञान सागर भी हैं। जब कहते हैं, ज्ञान सूर्य तो ऊपर बुद्धि चली जाती है। ज्ञान सागर हैं तो अन्दर गहराई में चले जाते हैं। तो सारा दिन ऊपर रहें या ज्ञान की गहराई में जायें! ज्ञान सूर्य प्रगट हुआ, अज्ञान खत्म हो गया। अब सागर में न सिर्फ डुबकी लगाओ लेकिन गहराई में जाओ। सागर कितना अच्छा है, किनारे पर जाकर बैठो तो भी दिल कहता है, वहाँ ही बैठे रहें। सागर पर नुमाशाम के समय बहुत अच्छा लगता है। सागर के किनारे बैठो, मीठी-मीठी

लहरें आ रही हैं। दुनिया से दूर हैं, सागर बड़ा शीतल बना देता है। सागर से कौड़ियां भी निकलती हैं, वे भी अच्छी लगती हैं। शंख सागर की रचना है। स्वदर्शन चक्र फिराना है, ज्ञान की पराकाष्ठा है, कमल फूल समान रहना है फिर शंख ध्वनि करनी है। गहराई में जाओ तो रत्न निकल आते हैं। शीतलता भी मिली, शंखध्वनि भी हुई, रत्न भी मिल गये। ज्ञान की गहराई में गये तो बहुत कमाई हो गई।

प्रश्न:63- दूसरे कहना मानें, इसकी युक्ति क्या है?

उत्तर:63- बाबा इतने अच्छे क्यों लगते हैं? बाबा इतने अच्छे हैं तो मैं भी अच्छा बन जाऊं। कहाँ बाबा, कहाँ हम, पर इतना अच्छा बनना है तो क्या करेंगे? जो बाबा ने बताया वह मैं ही करूंगी और करें या न करें उसको नहीं देखेंगे। इसमें पहले मैं, वैसे कहेंगे पहले आप लेकिन इसमें पहले मैं। अगर कहेंगी, पहले तुम करो तो नहीं करेंगे। मैं करूं तो आप मानेंगे। कहने से कोई नहीं करते। पहले मैं कर लूं तो सब कर लेंगे। क्योंकि मेरे मीठे, प्यारे बाबा, इतना अच्छा बनाने के लिए सामने बैठे हैं, अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे।

प्रश्न:64- संस्कार परिवर्तन के लिए क्या करें?

उत्तर:64- संस्कार परिवर्तन के लिए अंदर गहराई में जाना पड़ेगा। जिनको परिवर्तन होना है वह तो हो ही जायेंगे पर मुझे परिवर्तन होना है। लोहे से सिर्फ सोना नहीं बनना है, पारस बनना है। लोहा कहाँ, सोना कहाँ, वह तो भगवान ने बनाया, लोहे से सोने जैसा बनाया फिर अलाए निकले, उसके लिए याद करना पड़ेगा। संस्कार में कोई थोड़ी अलाय है तो कहने में आयेगा कि हैं तो अच्छे परंतु ऐसे शब्द न मेरे लिए कोई बोले, न मैं किसके लिए बोलूँ। मैं कहूँ, मैं पुरुषार्थ तो अच्छा करती हूँ परंतु इसमें भी अगर समथिंग है तो संपूर्णता किसके गले में जायेगी! संपूर्णता गले में हार बनने के लिए तैयार बैठी है। सिर्फ मैं सत्यता, नम्रता, धैर्य, मधुरता की मूर्ति बन जाऊँ। अब संपूर्णता का हमें आह्वान करना चाहिए।

मन में किसके लिए भी जरा-सी नफरत न हो। अगर मेरे अंदर किसके लिए नफरत होगी तो संपूर्णता बहुत दूर हो जायेगी। ड्रामा बना-बनाया एक्यूरेट है, बाबा समझाते हैं पर बाबा ग्लानि नहीं करते हैं। बाप को किसके लिए नफरत नहीं है इसलिए प्यार करते हैं तो वह भासता है। बाबा के प्यार की भासना हर एक छोटे बच्चे को भी आती है। तो ऐसे मीठे बाबा की प्यार भरी पालना और पढ़ाई की कमाल है जो आज के आये हुए बाबा के बच्चे भी खुशी में झूमते हैं। बाबा वरदान भी देते, बच्चे फिकर मत करो, हो जायेगा, भले लेट आये हो।

प्रश्न:65- सतोगुणी की निशानियाँ क्या होंगी?

उत्तर:65- जिसको राज्य पद लेना है वो कभी घटिया ख्याल कर नहीं सकता। सुनो सिर्फ बाप की, बाकी इन आंखों से दुनिया में कुछ भी न देखो। मैं कई बार अमेरिका गई हूँ पर अमेरिका देखा नहीं है। यह पांच तत्वों की सृष्टि है, तमोप्रधान हो चुकी है। सतोगुणी, सबके गुण देखता है, गुणवान बनता है, गुणदान करता है। किसके अवगुण नहीं देखता है। सतोगुणी को अवगुण दिखाई ही नहीं पड़ता है। बाबा अपने गुण धारण करने की शक्ति दे रहा है। ईश्वर की जो महिमा है, जो गुण हैं वो हम धारण करते हैं तब तो ईश्वर की महिमा हुई है। हम बच्चे बाप की महिमा जानते हैं। अब हम समझते हैं कि हम मेहमान हैं, कोई से लगाव नहीं है। स्मृति सदा बाबा की ही रहे। दूसरा, बाबा ने जो प्राप्ति कराई है वो जीवन में हो। बाबा की याद तभी आती है जब बाबा के गुणों को सेवा में और जीवन में धारण करते हैं। धारण करने के लिए बाबा फिर बुद्धि को स्वच्छ और श्रेष्ठ बना रहे हैं जिस कारण न ईर्ष्या है, न स्वार्थ है इसलिए निर्भय हैं, निर्वैर हैं। किसी के साथ सूक्ष्म ग्लानि न मन में है, न मुख में है। बाबा कहते, ग्लानि करने वाले को गले लगाओ। इतना बाबा ने हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ बनाया है। हम महिमा गायन नहीं करेंगे पर गायन योग्य बनेंगे तो हमें देख दुनिया, बाबा को अच्छी तरह से पहचान लेगी।

प्रश्न:66- समर्पण होने का क्या अर्थ है?

उत्तर:66-संसार में मेरा और कोई है ही नहीं। सरेन्डर उसे कहा जाता जो ज़रा भी न कहे, तन मेरा। यह सेवार्थ है। बाबा बहुत अच्छा संभाल रहे हैं, धन तो हाथ में होता ही नहीं है। फ़रिश्तों के पास पैसा नहीं होता। फ़रिश्तों को महल, ज़ेवर नहीं चाहिएँ। व्हाइट, व्हाइट, लाइट-लाइट। देवताओं को तो महल भी हैं, ज़ेवर भी हैं, फ़रिश्तों को कुछ भी नहीं है। तो बाबा ने कहा, बच्चे, गे-गे भी नहीं बोलो। हाँ बाबा, हम ऐसा बन कर ही दिखायेंगे। बाबा कराने वाले करा रहे हैं, वन्डर तो यह है, खुद अशरीरी हैं, कभी शरीर धारण नहीं करते, हमको भी ऐसा बनाने चाहते हैं।

प्रश्न:67- कानों के प्रति बाबा क्या सावधानी देते हैं?

उत्तर:67-बाबा ने कई बार इशारा दिया है, बच्ची, तुम किसी की बातों के चक्कर में नहीं आना। कोई मुझे सुनाये, मैं उसे सुनूँ या मैं कोई बात दूसरों को सुनाऊँ..ऐसी बातों के चक्कर में आना या दूसरों को लाना, यह ऊँच पद पाने वाले की निशानी नहीं है। मैंने किस की बात किसी को सुनाई या सुनी यह भी कितना बड़ा विकर्म है। मनसा संकल्प में, वृत्ति में या वाणी में आये तो वो कौन है! वह बाबा के दिलतख्त पर कभी नहीं चढ़ सकता।

प्रश्न:68- बाबा रक्षा कब करते हैं?

उत्तर:68-मैं सदा अपने अकाल तख्त पर रहूं। सबके प्रति शुभचिंतक रहूँ तो बाबा मेरी रक्षा करते हैं। हमारा हाथ भी क्यों हिले। टांगें भी क्यों हिलें। कोई सोचे, मेरी उम्र बड़ी हो रही है, पता नहीं कल मेरा क्या होगा, कहाँ जाऊँगी, कौन पूछेगा..यह भी फ़िक्र क्यों! बूढ़ी हो जाऊँगी तो कोई प्रबंध तो होना चाहिए ना..यह ख्याल त्यागी आत्मा को नहीं आ सकते। त्यागी कभी सेवा माँगता नहीं है, वह सदा सेवा करता रहता है।

प्रश्न:69- दुनिया से साक्षी और बाबा के साथी बनके कैसे रहें?

उत्तर:69-सबका योग दिलबर बाप से लगा रहे, यही भावना है। वो हमारा

दिलबर भी है तो रहबर भी है। रहबर माना अच्छी राह पर ले जाने वाला। बाबा ने ऐसा रास्ता दिखाया है। हम तो चलते आ रहे हैं, दौड़ते भी आ रहे हैं, अभी उड़ने का टाइम आ गया है। उड़ती कला किसकी होगी? उड़ता पंछी क्या करता है? किसका सहारा नहीं पकड़ता है, एक डाली पर नहीं बैठता है। एक बाप मेरा साथी है, तो साक्षी होकर चलने के पंख आ जाते हैं, सहज है ना! बाबा मेरा साथी, ड्रामा में साक्षी होकर चलना, तो क्यों, क्या, कैसे समाप्त। क्यों, क्या वाले, वो फिर खुद भी रुक जाते हैं औरों को भी रोकते हैं। अभी समय है उड़ने का और दूसरे को उड़ने में वायब्रेशन से मदद करने का।

प्रश्न:70- बेफ़िक्र कौन रहता है?

उत्तर:70- वृत्ति से वायुमण्डल बनता है, वायुमण्डल से वायब्रेशन जाते हैं। मन के संकल्प से वृत्ति बनती है। प्रवृत्ति में रहते भी पर-वृत्ति हो। साक्षी द्रष्टा, उपराम वृत्ति हो। कारोबार में हैं, यज्ञ सेवा में भले धन की सेवा करने वाले हैं पर राज्य पद कौन पायेंगे? जिसका पढ़ाई से प्यार है। बाबा जो दे रहा है, उसको दिल से समाने में अन्दर से बड़े चुस्त हैं। बाबा ने कहा, बेफिकर रहो, फ़खुर में रहो। बेफ़िक्र कौन रहेगा? जिसने बाबा को अपना बना लिया। जो बाबा को अपना नहीं बनाता है उसको फ़िक्र रहता है। जो फ़िक्र करते हैं, तो बाबा उनका क्यों ख्याल करे? वो खुद अपना ख्याल करते हैं ना। बाबा कहते, फ़खर में रहो। फ़खर कैसे रहेगा? जब अन्दर से भावना, विश्वास और निश्चय है। सच्ची भावना, अटल विश्वास, ड्रामा कल्याणकारी है, अच्छा ही होगा, गैरेन्टी है। बाबा में विश्वास है, कौन है, मेरा बाबा? 'मेरा बाबा' कौन कहता है? मैं यह पूछती हूँ? आज का बच्चा भी बाबा कहेगा। पर मेरा बाबा कौन कहता है? जिसके दिल से मेरा बाबा निकलता है, मेरा बाबा कौन है? सर्वशक्तिमान हैं! वे चार प्रकार की शक्ति देते हैं, एक सदा ही सच्चे दिल से पुरुषार्थ करने में मस्त रहूँ। कोई भी कारण आ जाये, पुरुषार्थ में तेरा-मेरा न आ जाये। दिल से सच्चा पुरुषार्थ करने की भावना है तो बाबा शक्ति बहुत देते हैं। फिर अपने

बाबा के बच्चों से बहुत प्यार है कि बाबा जो आपने दिया है वो सभी को मिले, उसकी शक्ति फिर बाबा अलग देते हैं। तीसरी शक्ति देते हैं, हमारा सारा परिवार एक होकर रहे। सभी को देखें तो लगे, ये सब एक हैं, एक के हैं और एक हैं।

मुझे खुशी है कि सारे विश्व से भिन्न-भिन्न प्रकार की आत्मायें बाबा की बन गई हैं। सभी को लगता है, हम ब्राह्मण हैं, फरिश्ता बनने वाले हैं। तो इसकी भी शक्ति मिलती है। बाबा, विश्व की सेवा करने का अलग बल देते हैं। हम त्यागी हैं, तपस्वी हैं, सेवाधारी हैं। त्याग से भाग्य अलग मिलेगा, तपस्या से बल मिलेगा, सेवाधारी से फल मिलेगा।

प्रश्न:71- नेगेटिव ख्याल कब आते हैं?

उत्तर:71-आजकल मनुष्यों में भारीपन बहुत है, तन से भी भारी, मन से भी भारी, धन है तो भी भारी, नहीं है तो भी भारी। हमें तो हल्का बनना है, चिंता नहीं करनी है, फ़िक्र नहीं करना, कोई बात का दु:ख नहीं करना है। कोई कामना नहीं रखनी है पर अच्छी भावना रखनी है। जितनी अच्छी भावना रखते हैं तो भगवान हमारे ऊपर राज़ी हो जाते हैं। फिर जो सेवा अर्थ संकल्प करेंगे वह पूरा कर देंगे। तुम पुरुषार्थ अच्छा करो। पुरुषार्थ में वेस्ट थाट नॉट एलाउ, नेगेटिव प्वाइज़न है, पॉजिटिव अमृत है। बॉडी कान्सेस हैं तो निगेटिव ख्याल आयेगा। सोल कान्सेस हूँ, आत्मा हूँ तो परमात्मा की हूँ। भगवान कभी नहीं कहते, तुम मेरी नहीं हो। मैं तेरी हूँ, तू मेरा है। तो मैं भी वायदा करूं ना। मैं भी कहूँ, आपके सिवाए मेरा कोई नहीं। उसने हमें सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम में सम्पन्न बना दिया, कोई कमी नहीं है। जब अन्दर प्युरिटी है, शुद्धि, सच्चाई है तो परमात्मा से डीप संबंध हो जाता है। फिर सबके साथ वफादारी, ईमानदारी से चलना है। दुनिया में कहाँ भी जाओ, हर इंसान में प्युरिटी और आनेस्टी की कमी है। जहाँ भी जाओ, धोखा ही मिलता है। हर एक ने कहाँ न कहाँ से धोखा खाया है या किसको धोखा दिया है। वह बिचारा सुखी कैसे रह सकता है।

परमात्मा बाप हमको शिक्षा दे करके, धोखेबाज दुनिया से किनारा कराकर, समझदार बनाकर डिटैच और लविंग बनाते हैं। पहले डिटैच फिर मेरी नेचर लविंग हो जाए। ऐसी लविंग बन जाए जो दूसरे का कनेक्शन भी परमात्मा से जुट जाए। वह भी संसार से डिटैच और परमात्मा से लविंग बन जाए।

प्रश्न:72- पुण्य का खाता कब खाली हो जाता है?

उत्तर:72- सदा निश्चय में विजय है, जो बलिहार गये वे कभी हार नहीं खाते, जो हार खाता वह भक्ति में हार बनायेगा। तो अपने को देखना है, मेरा क्या पार्ट होगा? निश्चय में विजय, भावना का भाड़ा और नीयत साफ, मुराद हासिल। अन्दर नीयत में सबका भला हो तो मेरा भला करेगा राम। भले ही कोई बुरा भी करे, उसका दोष नहीं है। किसका भी दोष दिल में रखा, दूसरे का दोष मेरे में आया तो मेरा क्या हाल होगा! बड़ी सूक्ष्म कर्मों की गति है। तो यह ज्ञान-योग हमारे सूक्ष्म कर्मों की गुह्य गति पर ध्यान खिंचवाता है। कभी किसी का दोष दिल में रखा या किसी को बताया तो मेरी गति क्या होगी? जो कमाई की, सेवा की, जो दुआयें मिलीं, वे कट-ऑफ हो जायेंगी। किसका दोष देखने की या मुख से बोलने की जो भूल की, तो पुण्य का खाता जो जमा किया था वह खलास हो गया।

प्रश्न:73- जीवन में बल और फल मिले, उसकी विधि क्या है?

उत्तर:73- हमें सदा ही खुश रहना और खुशी बांटना है। खुश वो रहता है जिसका पढ़ाई से प्यार है, उसका खुशी का पारा चढ़ा रहता है। उसके पांव कभी धरती पर मैले नहीं होते हैं। खुशी में नाचता वो है जो खुश रहता है, मुझे कौन मिला है, कैसे मिला है! अन्दर ही अन्दर अपने को समझने से, सही सच्चा पुरुषार्थ करने से बल मिलता है। फिर फल अच्छा निकलता है। धारणा करने से और योग लगाने से बाबा बल देते हैं। अभी आप ध्यान रखो, ज्ञान तो मिला, पर योग अच्छा है? अनुभव करो। योग का बल मिलता है, योग से फिर धारणा पर ध्यान जाता है। धारणा से फिर सारे अवगुण चले जायें,

सर्वगुण सम्पन्न बन जाऊं। माइण्ड में शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प होंगे तो योग अच्छा होगा। सतोगुणी बनना है सर्वगुण सम्पन्न बनने के लिए। सर्वगुण सम्पन्न बनने से फिर चढ़ती कला में आ गये। तो एक है अशरीरी रहना, दूसरा है सेवा में निमित्त भाव से रहना। सत्यता, नम्रता, मधुरता इससे सेवा में नेचुरल फल मिलता है। फल से बल मिलता है। इसका अनुभव करके देखना।

प्रश्न:74- मोटी बुद्धि का क्या अर्थ है?

उत्तर:74- बाबा की बात बुद्धि में रखते तो महीन बुद्धि हो जाते हैं और कोई की बात बुद्धि में रखते तो मोटी बुद्धि हो जाती है। सेवा से बल तब मिलता है जब कोई फल की इच्छा नहीं है। मोटी बुद्धि वालों को फल की इच्छा रहती है। मोटी बुद्धि क्यों बनती है? बाबा की बातों में बुद्धि नहीं चलाता, अपनी बुद्धि चलाता है तो मोटी बुद्धि है। दूसरों की गलती नोट करता, अपनी गलती पर ध्यान नहीं जाता तो मोटी बुद्धि है। बाबा को चाहिए महीन बुद्धि।

प्रश्न:75- बड़ों की पालना का रिटर्न क्या दें?

उत्तर:75- कर्मों की गुह्य गति को जानकर चलेंगे, याद अच्छी रहेगी तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। इस जन्म में जो कुछ किया है वह हिसाब-किताब कभी खींचे नहीं, बाबा की याद में वह विघ्न न डाले। कोई भी अन्दर कमी-कमज़ोरी हो, तो दे दान छूटे ग्रहण। याद से ऐसी परिपक्व अवस्था बना दो जो माया अन्दर आ भी न सके, अगर आ जाए तो याद की शक्ति से उसे भगा दो। भाग जाती है बिचारी। हमने कभी बाबा को नहीं कहा, बाबा माया आती है, फालतू ख्याल आते हैं। माया आने का कारण है अलबेलाई, सुस्ती, सेवा में वह भावना नहीं है। तो बड़ों की जो दुआयें हैं, प्यार है उसका रिटर्न ज़रूर देना है। रिटर्न है, एक बाबा दूसरा न कोई, न परचिंतन, न पुराना चिंतन, न पराई बात। जिसके दिल में पुरानी, पराई बातें हैं विचार सागर मंथन करके रत्नों से खेल नहीं सकेंगे, इसलिए पुरानी, पराई बातों को एकदम तलाक, आ ही नहीं सकती हैं। हमारा एक-दो से इतना प्यार, रिगार्ड हो जो कोई पुरानी, पराई बात

न करे। अगर करते हैं तो वेस्ट आफ टाइम।

प्रश्न:76- सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी में क्या अंतर है?

उत्तर:76- सतोगुणी बुद्धि हो। तमोगुणी अवगुण देखता है, रजोगुणी किसका गुण, किसका अवगुण देखता है। सतोगुणी किसी का अवगुण नहीं देखता, सबके गुण देखता है। पंछियों में एक ही हंस है जो उड़ना भी जानता है, तैरना भी जानता है, वह सतोगुणी है। अभी-अभी उड़कर ऊपर जा रहा है, अभी-अभी सागर के किनारे टहल रहा है। दूर कहीं नहीं जाता। तो यहाँ रहते कहाँ भी फंस नहीं जाना, डूब नहीं जाना, घबराना नहीं। तो सतोगुणी बुद्धि वाला न घबराता है, न डरता है, न मूंझता है। सतोगुणी बुद्धि वाला ही अपने नयनों से बाबा दिखा सकता है।

प्रश्न:77- परमात्मा पिता से योग ना लगने के क्या कारण हैं?

उत्तर:77- योग नहीं लगता है, यह ख्याल करने से योग नहीं लगता है। हमारा जीवन ही योगी जीवन है और हम कहें योग नहीं लगता है तो अन्दर दाल में कुछ काला है। बैठे हैं बाबा के कमरे में और ख्याल कहीं और के करें तो यह गड़बड़ है तब योग नहीं लगता। बाबा के रूम में बाबा के साथ बैठो, बाबा के रूप को देखो तो योग लग जायेगा। लेकिन कोई चीज़ घड़ी-घड़ी टूटे और जुड़े तो कमज़ोर हो जाती है, कभी भी फिर से टूट सकती है इसलिए मेरे को इतना मज़बूत बनना है, कुछ भी हो जाये इसके लिये प्लान करना होगा। मान-अपमान, निन्दा-स्तुति यह सब तो होगा ही फिर भी हमें किसी भी हालत में बाबा की याद को टूटने नहीं देना है। कई हैं जो खुद याद नहीं करते हैं फिर कहेंगे योग नहीं लगता है। बातें बहुत करते हैं। केवल बातें ही करते रहें तो भगवान सुनेगा नहीं, इसलिये वो मेरे को देख खुश, मैं उसको देख खुश, तो बाकी बात क्या है! जैसे बाबा-मम्मा को हमने कभी भी आपस में बातें करते हुए नहीं देखा, पर एक-दो को देख खुश हो जाते थे और वो सीन जो देखता, वो भी खुश हो जाता क्योंकि वो इतना सुन्दर वातावरण हो जाता था, वह

वातावरण शान्ति वाला, प्यार वाला हो जाता था।

प्रश्न:78- मान-सम्मान मिलने का तरीका क्या है?

उत्तर:78- योगाग्नि आत्मा को शुद्ध-शान्त बना देती है, फिर उसके वायब्रेशन अनेकों तक पहुँचते हैं। हम दूसरों से मान मांगते हैं पर हमारे अन्दर दूसरे के लिये प्यार नहीं है तो इसे क्या कहेंगे? मैं जो एक-एक बात कहती हूँ, करके देखो, सुनी अनसुनी नहीं करो। अच्छी बात है तो करके देखो। अगर कोई भी इच्छा मेरे अन्दर होगी तो बड़ा मुश्किल से मान मिलेगा, खुश करने के लिये मान मिलेगा पर सच्चा मान वह है जो आत्मा पूजन योग्य, गायन योग्य बन जाये। तो मान कहा किसको जाता है और वो मिलता कैसे है? ऐसी-ऐसी बातों की गहराई में जाओ तो आपेही मान मिलेगा। अपने आपको अन्दर से मान की इच्छा से मुक्त रखो, माननीय बनने की क्वालिटी, निरहंकारी, निर्विकारी या निराकारी स्थिति में रहना इसमें थोड़ी मेहनत है, पर सच्चाई यही है, इसका फल बड़ा अच्छा मिलता है। संगम की एक-एक घड़ी सफल हो तो हर सीन बड़ी अच्छी है।

प्रश्न:79- व्यर्थ से बचने की सहज युक्ति बताइये।

उत्तर:79- "मैं क्या करती हूँ", इसके सिवाए और कुछ सोचना आता ही नहीं है। कल क्या हुआ था याद नहीं है, कल क्या होने वाला है, देखा जायेगा, समय बहुत है। एक बाबा की गहराई में जाओ, डीप जाओ तो कोई संकल्प नहीं आयेगा। पाँच मिनट भी व्यर्थ संकल्प चला, तो जीवन क्या? एक मिनट भी व्यर्थ संकल्प चला तो जीवन नहीं है। बाबा कहो और अन्दर चले जाओ...मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ। ऐसी स्थिति बनाने के लिये अपनी घोट तो नशा चढ़े, जो करना है, अब करना है क्योंकि जो अब नहीं करेंगे, कब नहीं करेंगे। ऐसी-ऐसी बातें जो मीठे बाबा ने सुनाई हैं वो भूलना माना भटकना। जो बाबा की बातों को भूलते हैं उनकी बुद्धि को ठिकाना नहीं मिलता है। बाबा की बातों को याद करो तो बुद्धि सदा सालिम रहेगी। सोचने की बात नहीं है, समय अनुसार

टच होगा - यह कर, यह न कर। क्वेश्चन नहीं होगा कि करना है या नहीं करना है। वेट एण्ड सी। ऐसे-ऐसे जो बोल हैं उनसे जीवन में सुरक्षा है, ऐसों के संग में रहने वालों की भी सुरक्षा है। माया रावण से सुरक्षित रहना और साफ रहना।

प्रश्न:80- कई भाई-बहनों को इच्छा रहती है कि हमें बाबा से, परिवार से प्यार मिले पर बाबा कहते, कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए, तो यह कैसे हो कि इच्छा भी न हो और प्यार भी मिले?

उत्तर:80- प्यार कभी इच्छा से नहीं मिलता है, बाबा पहले अपने आप प्यार देते हैं। कोई भी ब्राह्मण ऐसे नहीं होगा जो ज्ञान से पैदा हुआ हो, सभी प्यार से पैदा हुए हैं। ज्ञान भी तब सुना है जब कुछ शान्ति मिली है। किसी को प्यार से शान्ति मिली है और किसी को शान्ति से प्यार मिला है। शान्ति का अनुभव होने से बाबा के प्यार ने कमाल कर दिया है। फिर वो प्यार अविनाशी रखें, विनाशी से कोई प्यार न करें। बाबा का प्यार सदा महसूस क्यों नहीं होता है या क्यों नहीं परिवार से प्यार मिलता है? जो बाबा के प्यार की कीमत को न जान आलसी और अलबेले रहते हैं उन्हें प्यार कैसे मिलेगा। बाबा जो नियम-मर्यादायें सिखाते हैं उन पर चलने से बाबा का प्यार स्वत: मिलता है। बाबा की शिक्षाओं को जो बच्चा दिल से पालन करता है, वह बाबा के प्यार का अनुभव करता है। बाबा कहता है, कभी झूठ नहीं बोलो, कभी गुस्सा नहीं करो फिर भी हम झूठ बोलें, गुस्सा करें तो बाबा प्यार कैसे करेंगे! जो लोभ, मोह में फंसा हुआ रहेगा, वह बाबा से प्यार कैसे लेगा? तो बाबा मुफ्त में प्यार नहीं देते हैं, फौरन रिटर्न देखते हैं, क्या बच्चा प्यार से रेसपांड करता है। तो पहले प्यार करते हैं कि मेरा बने, देह सहित देह की सब बातों को एकदम भूल जाये, न्यारा बन जाये क्योंकि जब तक देह के साथ सम्बन्ध है तब तक बाबा का प्यार खींच नहीं सकता, भले अमृतवेले बैठे। अगर कोई बाबा के साथ देह को भी देखेंगे या देह में जरा भी ध्यान जायेगा तो उसे बाबा के प्यार की शक्ति नहीं मिलेगी। सारे दिन में सबके साथ रहते हुए और कारोबार में आते हुए जितना

हम श्रीमत पर चलेंगे उतना हम औरों को भी प्यार दे सकते हैं। थोड़ी भी मनमत चलाई या किसी का स्वभाव देखा तो जैसे बाबा स्नेह देते हैं वैसे देने की अक्ल नहीं आयेगी। तो श्रीमत को सिरमाथे पर रखो। प्यार में सब चीज़ें ऑर्डर में चलती हैं।

प्रश्न:81- दादी जी, आपमें इतनी शक्ति कहाँ से आती है?

उत्तर:81- एक है बल, एक है शक्ति, एक है एनर्जी। यह बल भगवान से मिला है। निर्बल से लड़ाई बलवान की, ये कहानी है दीये और तूफान की। आखिर विजय किसकी हुई, दीये की। तूफान कितने भी आये पर दीया, दीया है ना। दीया अंधकार को मिटा देता है। दीये में भल तूफान लग जाये, पर दीया विश्वास है, अंदर की ज्योत है, जो परमात्मा बाप ने जगाई है अंधों को राह दिखाने। अभी सुनते-सुनते अंधे को राह मिल गई। यह भी भक्ति में गाते थे। अभी अंधे को रास्ते का पता चल गया, मुझे कहाँ जाना है। जो बाबा कहते हैं, तुम अंधों की लाठी बनो। उसके लिए हमारे अंदर वृत्ति बड़ी अच्छी हो। बत्तीस साल मैं साकार बाबा के साथ रही, 42 साल अव्यक्त बापदादा को आँखों से देखा है। बाबा अव्यक्त होकर भी कितनी शक्ति हमको देते हैं। मुझ आत्मा ने जो परमात्म शक्ति पाई है वो चला रही है। वो है एनर्जी। सूक्ष्म, अति सूक्ष्म शक्ति मिली है। शक्ति तो चरित्र को चेंज करने के लिए मिली है। संग का रंग लगा। योगी बनना सहज हो गया। सहजयोगी सदा सहयोगी। योग कोई बड़ी बात नहीं। अंदर-अंदर इतनी एनर्जी मिलती है जो सारे कार्य को सफल करती है। पावर हाउस से कनेक्शन टूट जाये तो अंधियारा हो जायेगा। योग क्या है? ऐसी हमारी स्थिति हो जो हमारा जीवन दूसरों के लिए दर्पण बन जाये। बाबा के साथ की शक्ति से आगे बढ़ते रहो तो एनर्जी बच जाती है, अपनी एनर्जी को खर्च ही मत करो तो एनर्जी जमा होती रहती है। मुझे शुरू से बाहर के अशुद्ध वातावरण में रहने का संस्कार नहीं है। भगवान के बच्चे हैं तो किसी हालत में भी कभी अपने को तन वा मन से कमजोर होने नहीं देना चाहिए क्योंकि

अशरीरी बनने का अभ्यास और मनमनाभव के महामंत्र से अपने संकल्प को शुद्ध और शांत रखने की शिक्षा मिली है। भगवान बल देवे और हम निर्बल रहें, यह शोभता नहीं है। बाबा हमको जो प्यार और शिक्षा देते हैं, उससे हमारे में ताकत आनी चाहिए जिससे हेल्दी, वेल्दी और हैप्पी रहेंगे। तब बाबा कहेंगे, मेरा यह बच्चा काम का है। जब समर्पण हुए हैं तो सर्वगुण संपन्न बनना है, उसके लिए आठों शक्तियाँ चाहिएँ। सेवा में और संबंध में आते एक सर्वशक्तिवान बाप से ही कनेक्शन है तो न किसी के साथ कोई टक्कर, न ही कोई चक्कर होगा। इससे भी एनर्जी बचती, बनती और बढ़ती जाती है। कइयों के पास एनर्जी है ही नहीं क्योंकि खर्च ज्यादा है, कमाई है ही नहीं। जो पढ़ाई अच्छी पढ़ता है और श्रीमत पर चलता है, उससे बाप, टीचर, सतगुरु तीनों खुश रहते हैं, उसके ऊपर और कहीं का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ सकता है।

प्रश्न:82- दादी जी, आप क्या पुरुषार्थ करती हैं?

उत्तर:82- मैं अपने दर्पण को साफ रखती हूँ। मेरा दर्पण साफ हो तो मुझे अपना स्वरूप दिखाई पड़े। दर्पण में अपना रूप दिखाई पड़ता है। शीशे से दूसरों का दिखाई पड़ता है। ज्ञान की जो गहराई में जाता है, योग का जो रीयल अनुभव करता है, वो अपने को सुधारता है। दर्पण मेरा साफ हो। मेरा बाबा मेरे लिए दर्पण है। कितनी मैं खूबसूरत बनी हूँ? उसमें और हमारे में कोई अंतर न हो। यह है योग। यह मेरे लिए आइना है। इसमें सारा दिन देखती हूँ। जो हमारी दृष्टि में होगा, वैसा हमारी वृत्ति में होगा। जो वृत्ति में होगा, वो दृष्टि औरों को मिलेगी। वृत्ति-दृष्टि बदलूँ तो जग बदलेगा।

प्रश्न:83- व्यर्थ बातें कैसे खत्म हों?

उत्तर:83- जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं और जहाँ बाप है वहाँ बात नहीं। निश्चय में विजय है। सच्चाई में सफलता है। बाबा हमारे साथ हैं तो डरने की बात नहीं। कभी नहीं कहना, बाबा साथ दो ना। भिखारी हो क्या? बाबा के साथ का अनुभव औरों को अनुभव करायेगा। उसने मुझे साथ दिया है, अनुभव औरों

को हो रहा है। भगवान हमारे साथी है और ड्रामा पर चलने की शिक्षा दे रहे हैं। तो साक्षी होकर के पार्ट बजाओ।

प्रश्न:84- हीरो एक्टर की विशेषता क्या होगी?

उत्तर:84- जिसको हीरो पार्टधारी बनना है उसका जीवन हीरे मिसल हो। हीरा माना हीरो एक्टर। उसका सारा ध्यान डायरेक्टर पर होता है। डायरेक्टर क्या कहता है? वो औरों को भी नहीं देखता है। पब्लिक को भी नहीं देखता है। डायरेक्टर के डायरेक्शन पर चलता है। एक्टर माना जो खुद को देखे और बाप को देखे। बाप डायरेक्टर है। ड्रामा का क्रियेटर है। मुझ आत्मा को पार्ट बजाने के लिए फिक्स किया है।

प्रश्न:85- चारों सब्जेक्ट्स में किस आधार से पास हो सकते हैं?

उत्तर:85- बेहद में रहने से बेहद की बादशाही मिलेगी, ऐसे नहीं मिलेगी। वर्से के अनुभव से, लायक बनने से, अपनी जीवन यात्रा सफल करने से, निष्फल एक घड़ी, एक मिनट न जावे, एक पैसा न जावे। चारों सबजेक्ट्स में पास होने के लिए समय, संकल्प, श्वास, सम्पत्ति सब सफल करना है। फुल पास वही हो सकता है जिसकी कोई भी सबजेक्ट में मार्क्स कम न हों। ऐसे नहीं, सेवा में अच्छे हैं, धारणा में कम हैं, चारों ही सबजेक्ट्स में फुल मार्क्स चाहिएँ।

प्रश्न:86- फरिश्ता बनने की सरलतम विधि समझाइये।

उत्तर:86- जो भगवान के मुख से महावाक्य निकलते हैं, हो जाते हैं। सारे यज्ञ की हिस्ट्री को देखो। ब्रह्मा बाबा की कितनी महिमा करें। बाबा के हर संकल्प, वाणी, कर्म से, चेहरे से, चलन से बहुत सीखने को मिला है। इसमें हमको नकल करने का अक्ल चाहिए। बाबा में हमेशा चार रूप दिखाई देते थे – साकार, सम्पूर्ण ब्रह्मा, निराकार और नारायण। बाबा कभी-कभी नारायण की एक्ट करते थे, बड़े नशे से चलते थे। साकार में बाबा को देखा, कितनी सम्पूर्ण, सम्पन्न बनने की लगन रही। वो दृश्य मेरे सामने आता है, बाबा के सामने बहुत अच्छा लगता था। भगवान ने अर्जुन को गीता सुनाई, अभी वही

भगवान हमें सामने बैठकर गीता सुना रहे हैं। फिर बाजू में जब बिठाया तो करेन्ट आने लगी। संगमयुग की इन घड़ियों में पुरानी बातों को छोड़ो, वह किचड़ा है, छी, छी है। कइयों की चलन से पुराना छूटता ही नहीं है। हम इतना फ्री हैं, खुशनसीब हैं। ईश्वरीय कुल के नियम और मर्यादाओं पर चलने से फरिश्ता बनना सहज है क्योंकि दूसरे सब बंधन छूट गये। कर्मबन्धन तोड़ो, आदतों को छोड़ो, पुरानी बातों को भूलो। कल की बात भी याद न आये। याद हैं तो ईश्वरीय चरित्र याद हैं। भागवत, गीता स्मृति में हैं और सब बातें छूट जाती हैं, बस यही याद रहता है।

प्रश्न:87- श्रापित बुद्धि के लक्षण क्या-क्या हैं?

उत्तर:87- अभी ऐसी लहर फैले जो विश्व भर में कहीं भी, पर्सनल भी कोई विघ्न न हो। बाबा ने कहा है कि कोई विकार देकर फिर वापस लेते हैं तो श्राप मिल जाता है क्योंकि बाबा के साथ धर्मराज है ना, तो सदा हम देखें, धर्मराज हमारे सामने है। कोई गलती होगी, गुस्सा करेंगे तो श्राप मिल जायेगा। यह हमने प्रैक्टिकल में देखा है। कोई ने ऐसी गलती की तो जैसे श्रापित हो गये, बुद्धि चलेगी नहीं, बीमार पड़े रहेंगे। यज्ञ के लिए प्यार नहीं होगा। अभी भी कइयों की बुद्धि ऐसी हो जाती है।

प्रश्न:88- श्रीमत की वैल्यू दिमाग तक रहती है, उसे दिल से स्वीकार कैसे करें?

उत्तर:88- इसके लिए मन-बुद्धि को सदा ठीक रखो। जब तक मन-बुद्धि ठीक नहीं हैं तो दिल-दिमाग ठीक काम नहीं करते हैं। मैं आत्मा शांत हूँ, भगवानुवाच, ऐसा दिल से जो अनुभव करता है, उसमें दिमाग को ठीक करने की ताकत आती है। दिल से पुरुषार्थ करेंगे तो दिमाग ठीक काम करेगा। दिल में दुख होता है तो मन शांत हो नहीं सकता है, पर बुद्धि, मन को ठीक रखती है तो दिल अच्छा हो जाता है। दिल, दिलाराम के साथ तपस्या में बैठ जाये तो जैसा संकल्प करो वो साकार हो जाता है।

बाबा से जो भी खज़ाने मिले हैं वो सब पहले अपने में धारण कर, सभी

प्राप्तियों से संपन्न बन, ईश्वरीय स्नेह से सर्व को सहयोग देते हुए बाबा के समीप लाना है। समीप आते ही बाबा के संग से बुद्धि की शुद्धि हो जाने से जो सुनते हैं वो अच्छा लगने लगता है और अनुभव भी होने लगता है। बाबा ने ईश्वरीय आकर्षण से हमको खींच लिया है और प्यार से भूँ-भूँ कर-करके अपने समान बना रहा है। बाबा के स्नेह की शक्ति से पहले हम अपनी नेचर को चेंज कर लेवें। नहीं तो कइयों को सिर्फ ज्ञान अच्छा लगा है और अन्य को ज्ञान देते भी रहते हैं पर वो थके हुए होते हैं क्योंकि वो रूखा-सूखा ज्ञान देते हैं।

प्रश्न:89- दादी, अभी बाबा ने इशारा दिया है, समय बहुत नाजुक आ रहा है इसलिए सबको सकाश देना है, उसकी विधि थोड़ी समझाइये?

उत्तर:89- वर्तमान समय लक्ष्य है कि सबको संदेश देना है, कोई भी कोना रह नहीं जाये, इसके लिए अब न सिर्फ भाषण से परंतु मैसेन्जर की स्थिति में स्थित हो भासना के साथ संदेश देते जायें तो वो इन कानों से संदेश सुनने के साथ-साथ सकाश का भी अनुभव करेंगे। भल संदेश एक्यूरेट याद न भी रहे पर संदेशी की सूरत नहीं भूल सकेंगे। हमारी शुभ भावना के वायब्रेशन ही सकाश का काम करते हैं। जैसे बाबा के ज्ञान से प्रकाश मिला वैसे सकाश भी मिलती है। बच्चे हैं तो बाबा के प्यार की शक्ति मिलती है, हिम्मते बच्चे को बाबा बहुत मदद करते हैं और आशीर्वाद भी देते हैं। सकाश माना संकल्प में हो कि जैसे कोई करा रहा है...।

प्रश्न:90- अशान्ति और आतंक के इस माहौल में हम योग का दान देकर लोगों को भय और चिंताओं से कैसे मुक्त कर सकते हैं?

उत्तर:90- शिवबाबा तो परमपिता हैं, ब्रह्मा बाबा ग्रेट-ग्रेट ग्रेण्ड फादर हैं तो हमारे अंदर भी आना चाहिए कि हम पूर्वज हैं जिससे सबको लगे कि ये हमारे रक्षक हैं। जहाँ अशान्ति है वहाँ हमारे से शान्ति फैले..हमें बाबा से जो प्राप्तियाँ हुई हैं, उनसे जो अनुभव हुआ है वो और आत्माओं को मिले। इस भावना के साथ संकल्प करें तो सचमुच वहाँ शान्ति फैल जाती है। जैसे मधुबन का

वायुमण्डल पावरफुल है, ऐसे हम जहाँ भी जायें, वहाँ का वायुमण्डल पावरफुल हो जाये। इसके लिए बाबा कहते हैं, अनेक प्रकार के अलबेलेपन को छोड़ो, व्यर्थ बातों को छोड़ो।

प्रश्न:91- वैजयन्ती माला में कौन आयेंगे?

उत्तर:91- बाबा कहते बच्चे, निश्चय में विजय सदा हुई पड़ी है, निश्चयबुद्धि ही वैजयन्ती माला में आयेंगे। शुरू से सारी कारोबार में निश्चय से विजय हुई है। कोई-कोई आत्मा में निश्चय का बल बहुत है। अपने में निश्चय है, तो सेवा में सफलता है। कभी माया के वश होकर हार नहीं खायेंगे। बाबा ने कहा है, माला अन्त में तैयार होगी, कोई नये भी ऐसे निकल सकते हैं जो निश्चय से विजयी बन जायेंगे। संकल्प, श्वास सब सफल करके सफलतामूर्त बन जायेंगे।

प्रश्न:92- आप अपने को मेहमान समझकर कैसे चलती हैं?

उत्तर:92- अपने को मेहमान समझना, यह महान आत्मा बनने की बहुत अच्छी विधि है। मेहमान अर्थात् "मैं" शब्द कहने से अंदर और "मेरा" कहने से ऊपर चले जायें। संगम पर बाबा की दृष्टि से "मैं" शुद्ध हो जाये, ईश्वरीय आकर्षण में मैं-पन की सुध-बुध भूल जाये। मेरा-मेरा की आदत जो है वह खत्म हो जाये। चिंता और व्यर्थ चिंतन करने की आदत भी निकल जाये।

प्रश्न:93- कोई-कोई दिल-बेचू कैसे बन जाते हैं?

उत्तर:93- बाबा की गोद में तो पले हुए हैं, बाबा के दिल पर बैठने के बिगर और कोई से दिल लगाई नहीं है। न किसी की दिल मेरे साथ लगी है, ना मैंने किसी से दिल लगाई है। जब किसी की दिल में कुछ होता है तो दिल बेचने के लिए हैरान हो जाते हैं कि कोई मेरी दिल लेवे..। जैसे सिन्धी में मातायें दही लेके बेचने के लिए निकलती थीं, वैसे कई कुमारियाँ मातायें दिल-बेचू बन जाती हैं। तो दिल लेने वाले कई निकल आते हैं और दिल में अगर दिलाराम हैं तो दिल बेचने और लेने की बात ही नहीं रहेगी। ऐसों की दिल कभी भारी नहीं हुई होगी। मैं कभी देखती हूँ, कोई थोड़ा नियम-मर्यादा के अनुकूल नहीं चलते

हैं तो निमित्त आत्माओं की नींद फिट जाती है। कभी थोड़ा फोर्स वाले शब्द भी निकल आते हैं लेकिन दादी के मुख से कभी फोर्स के शब्द नहीं सुने। वे सदा हर एक को सावधान, खबरदार करते न्यारी और प्यारी रही।

प्रश्न:94- लगावमुक्त की निशानी क्या है?

उत्तर:94- बाबा ने कहा, बच्चों को लगावमुक्त बनना है। तो जो सुनते हैं वह स्वरूप में आता है? सभी लगावमुक्त हो ना! अगर थोड़ा भी लगाव कोई व्यक्ति, वैभव से है, तो यह भी कमजोरी है। मैं देही-अभिमानी स्थिति में नहीं हूँ, तभी किसी का ध्यान मेरी देह में जाता है। तो देही अभिमानी स्थिति में रहने से बाबा याद रहेगा। दूसरा कोई मेरी देह को याद नहीं करेगा। अगर कोई मेरी देह को याद करता है तो बुद्धि वहाँ पुल हो जायेगी (खिंच जायेगी) फिर याद में मेहनत करनी पड़ेगी। तो कोई भी देहधारी मेरी बुद्धि को खींचे नहीं। सेवा कितनी भी करो, बुद्धि सालिम रहे। एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में सिवाए एक बाबा के और कुछ भी याद न हो। देह, संबंध या कोई भी कारण हो, कोई भी परिस्थिति हो लेकिन बाबा की पावरफुल याद परिस्थिति को दूर कर देती है।

प्रश्न:95- अशरीरी स्थित की अनुभूति और प्राप्ति क्या है?

उत्तर:95- अशरीरी बनने का अभ्यास बड़ा गहरा है, इसमें देह सहित देह के सब संबंधों से, कर्मबंधनों से न्यारा होना पड़ता है। देह-अभिमान बिल्कुल न आये, देह से न्यारा रहें। यह संबंध मेरे नहीं हैं, यह शरीर मेरा नहीं है, यह अभ्यास नेचुरल हो जाये। जैसे शिवबाबा विदेही है, ब्रह्मा बाबा स्नेही है, फिर भी कहते, शिवबाबा को यह शरीर लोन पर दिया हुआ है इसलिए भले वो कैसे भी यूज़ करे, शिवबाबा कहते कि यह शरीर मेरा नहीं है, मैंने लोन लिया है। ऐसे हम आत्मा भी इस शरीर में रहते अभ्यास करते। नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करेंगे तब ऊँच पद पायेंगे। थोड़ा भी अटैचमेंट शरीर से है, संबंध से है, किससे भी है और किसी प्रकार का दिल में भय वा दुख है, ज़रा भी चिंता है तो वो अशरीरीपन की स्थिति का अनुभव नहीं कर सकता है। इसलिए सच्चाई से

पुरुषार्थ करके अपने आपको ऐसा फ्री बनावें जो बाबा के पास बैठ सकें। हम आत्मा इस शरीर में सेवा अर्थ बैठे हैं। अशरीरी स्थिति माना अंदर एकदम स्वच्छ, जरा भी छी-छी बात न हो। और कोई बात न सुनो, न सुनाओ। परमात्मा के कनेक्शन से जो प्राप्ति है, वो अशरीरी बना देती है। वैसे अशरीरी बनने की कोशिश करेंगे तो देह खींचेगी या कोई कारण खींचेंगे इसलिए न्यारे हो जाओ तो सब ठीक हो जाता है क्योंकि मैं ईश्वर की संतान हूँ, वो अंदर संस्कार में आ जाये, संबंध उनके साथ है, सेवा उनके साथ है तो कोई बंधन नहीं रहेगा। जैसे शिवबाबा शरीर में हैं तो सिर्फ बोलने के लिए हैं, ऐसे हम आत्मा भी सेवा अर्थ बोलते हैं, नहीं तो ईश्वर की संतान हूँ, परमधाम में रहती हूँ।

प्रश्न:96- कई बच्चे राजा बनते-बनते प्रजा बन जाते हैं, कैसे?

उत्तर:96- बाबा ने भी हमारे लिए क्या भावनायें रखी हैं, प्यार भरी पालना दी है, इतना पढ़ा करके लायक बनाया और यही उम्मीद रखी कि मेरे बच्चे ऊँच पद पावें, मेरे बच्चे कभी प्रजा पद न पावें, राज्य पद पावें। बाबा कहे, मेरे बच्चे राजा बच्चे हैं और हम जिनकी सेवा करते, उनकी ही प्रजा बन जाते हैं, उनके अण्डर चलते हैं क्योंकि बड़ी महिमा हो जाती है। जिनकी सेवा की, वही मेरा आधार हो गया क्योंकि उसने हमारी बात को एप्रीशियेट किया और कोई ने एप्रीशियेट नहीं किया। कब बुलाकर यह भी नहीं कहा कि तुमने बहुत अच्छा किया। कहेंगे आखिर भी इसने मेरे को समझा।

प्रश्न:97- सफल करने का बल किन्हें मिलता है?

उत्तर:97- ऑनेस्ट रहना बाबा ने सिखाया है। पोतामेल क्लीयर है तो बाबा का भण्डारा भरपूर है। सेवा अर्थ जो सफल करता है, सफलता का बल बाबा उसको देता है। जो करके महिमा माँगने वाला है, उसका सफल नहीं होता है। परंतु जो यज्ञ तरफ ध्यान खिंचवा करके उनका सफल कराता है, उसका बल उनको मिलता है क्योंकि अमानत में ख्यानत नहीं डाली। यह मेरा स्टूडेन्ट है, मैंने इसको संभाला है, पाला है, यह हमारे क्लास की टीचर है। नहीं, हमारा

कुछ नहीं है। हम बाबा के हैं, बाबा सबका है। हर एक की सच्ची भावना से हरेक को भाड़ा मिलता है। निश्चयबुद्धि बनकर अच्छी भावना से बुद्धि को बहुत अच्छा स्वच्छ रखना है। न किसी की निंदा करनी है, न किसी की बातों में आना है। भारी होकर अगर योग में बैठेंगे तो निद्रा आ जायेगी फिर नींद के समय नींद नहीं आयेगी। तो ऐसी बातों पर ध्यान देकर सदा के लिए स्वयं को मुक्त कर लें।

हम निमित्त बने हुए को बहुत ध्यान रखना है कि हम राइट हैण्ड बन जायें। पहले है सिर पर हाथ, फिर हाथों में हाथ, फिर दिल पर बैठ गये, तो बाबा के कौन बनेंगे? राइट हैण्ड, उससे सदा ही राइट काम होता जायेगा। हम लाइट रहेंगे, माइट मिलती रहेगी तो एवरीथिंग राइट होगा।

प्रश्न:98- निश्चय के बल की साकार में क्या निशानियाँ दिखाई देंगी?

उत्तर:98- कभी उलझन में नहीं आना है। ऐसे नहीं कि यह बात ही ऐसी है इसलिए क्या करूँ, कैसे करूँ..। कभी हिम्मत नहीं हार लेना। कोई भी बात का फिकर चेहरे पर दिखाई न दे। बाबा का हाथ हमारे सिर पर है। बाबा के हाथों में हाथ है इसलिए व्यर्थ संकल्प को एलाऊ नहीं है, एक्सट्रा संकल्प चलाने की ज़रूरत नहीं है। बाबा को जिस घड़ी जो कराना है वो हुआ ही पड़ा है। बाबा ने कराया सो हुआ इसलिए निश्चयबुद्धि का जो कनेक्शन है, उसका बल बहुत है।

निश्चयबुद्धि का बल, सच्ची भावना का भाड़ा और एक बल एक भरोसा, इसलिए बुद्धि कभी विचलित नहीं हो सकती है। कभी भय पैदा नहीं हो सकता है। कभी किसी का प्रभाव पड़ नहीं सकता है। किसी का दबाव भी नहीं पड़ सकता है, यह अटल विश्वास है।

प्रश्न:99- बाप समान पीस, प्यूरिटी के टावर बनने की विधि क्या है?

उत्तर:99- भक्ति में व्रत का बहुत महत्व है। कोई-कोई व्रत बहुत अच्छा रखते हैं। हमारा व्रत है पवित्रता का, श्रेष्ठ संकल्प का व्रत है। ऐसा व्रत हमारी वृत्ति

को सदा के लिए चेंज कर देता है। प्युरिटी से वृत्ति पीसफुल बन जाती है। जरा भी प्युरिटी की कमी है तो सच्ची शान्ति का अनुभव नहीं होगा। जैसे बाबा नॉलेज, लव, पीस और प्युरिटी का टावर है, ऐसे हमें भी टावर बनना है, टावर ऊंचा होता है तो ये चारों बातें हमको ऊंच ले जाती हैं। लेकिन फाउण्डेशन है प्युरिटी इसलिए बाबा हम सबको व्यर्थ संकल्प की अपवित्रता को भी समाप्त करने की शिक्षायें दे रहे हैं। सदा शुद्ध संकल्प हों। कोई निमित्त शुद्ध संकल्प आया, बिना मेहनत के साकार हो गया। संकल्प में स्वच्छता, नि:स्वार्थ भाव और सेवा में निष्काम भावना हो।

प्रश्न:100- योगी के स्वप्न कैसे हों?

उत्तर:100- हम बाबा से खुश, बाबा हमारे से खुश, ऐसे खुशनुमा रहने वाले क्या करेंगे? संकल्प में, स्वप्न में भी किसी को खुशी देंगे। अपने को देखो, मेरे को कौन-से स्वप्न आते हैं? स्वप्न में भी याद और सेवा और कुछ नहीं। न लड़ाई, न झगड़ा, न अशुद्ध संकल्प। अगर दिन भर में कुछ व्यर्थ संकल्प, अशुद्ध संकल्प चला तो स्वप्न में भी जरूर आयेगा, फिर हमारी स्थिति अच्छी नहीं होगी। तो ऐसी स्थिति बनाना जो औरों को भी सूक्ष्म प्रेरणा मिले।

प्रश्न:101- भगवान किन बच्चों की मदद करते हैं?

उत्तर:101- मुझे कोई मददगार नहीं है, यह ख्याल भी नहीं आना चाहिए। बाबा से दिल का प्यार है, हिम्मत और सच्चाई है तो अपने आप बिगर बुलाये, बिगर बोले मदद मिलती है। मैं मानती हूँ, बाबा की मदद बहुत है पर मांगती कभी नहीं हूँ। मांगने से वे कभी मदद नहीं करेंगे, बाबा भी हठीले हैं, हमको रॉयल बच्चा बनाते हैं। अगर कहेंगे, बाबा मैं क्या करूं, मुझे मदद करो ना! तो नहीं करेंगे। कई लिखते हैं, मैंने बाबा से बहुत मदद मांगी, बाबा ने मदद नहीं की। कोई हैं, चिल्लाते हैं, मैं क्या करूं, माया बहुत तंग करती है.. तो चिल्लाने से बाबा मदद नहीं देते हैं। मैंने बाबा को प्यार से कहा, बाबा, आप अच्छा चला रहे हो, तो बाबा ने कहा, चल रही हो तो चला रहा हूँ। अगर कहूँ, अच्छा चलाओ ना,

तो कहेंगे, लंगड़ी हो क्या! अच्छा चलेंगी तो खुशी से मदद करते हैं। तो मैं आपको बाबा का अन्त बताती हूँ कि बाबा कैसे हैं। बाबा को समझ करके उन्हें ऐसा साथी बनाओ, जो बाबा भी देखें कि मेरा बच्चा सदा हर्षित है, मुरझाता या मूंझता नहीं है, तो खुश हो जाते हैं। जो घड़ी-घड़ी मूंझता या मुरझाता है तो बाबा क्या कहेंगे, "बच्ची, मैं कहता हूँ, मुस्कराओ और तुम मुरझाती हो!"

प्रश्न:102- दिन अच्छा हो, इसके लिए क्या करें?

उत्तर:102- बाबा कहते हैं, बच्चे, शरीर छोड़ने तक भी स्टडी करते रहना। ऐसे नहीं, मुझे इतना साल हुआ है, मुरलियां तो पढ़ी हैं, रिवाइज कोर्स ही तो है, ऐसा ख्याल आया, मुरली मिस की तो वह दिन अच्छा नहीं होगा। वन्डर तो यह है, रिवाइज़ कोर्स है, पर आज के लिए वही ज़रूरी है। बाबा ने जो टाइम टेबल बनाकर दिया है, उस पर चलते चलो।

प्रश्न:103- योगी की दृष्टि-वृति कैसी हो?

उत्तर:103- दुनिया सच की खोज में है, बाबा हमको कहता, सच तो बिठो नच। सच्ची दिल से, मीठी दृष्टि से, योगी की दृष्टि महासुखकारी है। हर एक अपनी दृष्टि देखे। बदल रही है। शुरू में कहते थे, मण्डली वालों की आंखों में जादू है। कौन-सा जादू है? हर एक देखो, कौन-सा जादू लगा है? देह, दुनिया को नहीं देखो, दिखाई नहीं पड़ती है। उसका हमारे ऊपर कोई असर नहीं हो सकता। उसे हमें बदलना है। ऐसी दृष्टि हो जो दुनिया बदल जाए। झूठ, हिंसा खत्म हो जाए। यह शक्ति सर्वशक्तिवान से मिली है। बाबा ज्ञान के सागर हैं, अनुभव करो। शान्ति के सागर, प्रेम के सागर हैं, पतित-पावन हैं। कैसी भी आत्मा है, पावन बना देते हैं। सर्वशक्तिवान हैं, अनुभव करो। सर्वशक्तिवान बाप हमको अपना बना करके कहते हैं, रहो संसार में पर मुसकराते रहो।

प्रश्न:104- रोज की मुरली का अधिकतम फायदा हो, उसकी युक्ति क्या है?

उत्तर:104- बाबा शब्द मुख से निकलता है तो उसका अनुभव अगर सुनाने बैठ जाऊं तो कितना समय चाहिए! सारे दिन में बाबा-बाबा अन्दर से आवाज़

निकलता है। वन्डरफुल, बाबा आप कितनी अच्छी बातें सुनाते हो, गिनती नहीं कर सकते। हम बाबा की मुरली सुनने के बाद फौरन कोई कामकाज में नहीं लगेंगे। पहले अन्दर सारी मुरली रिवाइज़ करेंगे। बाबा ने जो डायरेक्शन दिया, वह मुझे करना है। बाबा कहता था, बच्ची, नाश्ता करने के पहले कथा ज़रूर करो। तो मुरली सुनने के बाद बगीचे में चली जाती थी, वृद्धों को ज्ञान सुनाती थी। जहाँ जीना, वहाँ सीखना। मेरा दिल है, मैं शरीर में होते कर्मातीत अवस्था का अनुभव करूं। कर्मातीत बने और शरीर छोड़ दिया तो उससे क्या... शरीर में होते कर्मबंधन से मुक्त रहूं। शरीर में होते, सेवा करते उस स्थिति का अनुभव करूँ। तो ऐसा ग्रुप बनाकर तैयारी करें। कभी मुरली सुनते आंखें बन्द भी न हों। बाबा सब देखते हैं, बच्चे क्या करते हैं। बाबा के पास टी.वी. है, उससे सब देखते हैं। जहाँ भी हो, बाबा साथ देते हैं। एक बार जिसने बाबा कहा, उसको बाबा छोड़ते नहीं हैं। बाबा चाहते हैं, मैं बच्चों को कंधे पर बिठाकर सारी दुनिया को दिखाऊं कि देखो, मेरे बच्चे कौन हैं, कितनी ईश्वरीय आकर्षण है, जो ईश्वरीय आकर्षण सारी दुनिया से पार ले जाने वाली है।

प्रश्न:105- आपको जो बाबा वरदान देते हैं, उसको आप बहुत रिगार्ड देती हो। कुछ समय पहले बाबा ने आपको वरदान दिया कि आप आवश्यक रत्न हो, जहाँ भी ज़रूरत होती है वहाँ हाज़िर हो जाती हो, इस वरदान से आपको क्या महसूसता आई?

उत्तर:105- हरेक समझो, बाबा के जो भी महावाक्य हैं वे मुझ आत्मा के प्रति हैं। उनको बड़े प्यार से वरदान के रूप में स्वीकार करना है। बाबा जो कहते हैं, वह मुझे करके दिखाना है। बाप, शिक्षक, सतगुरु.. कोई भी टाइम तीनों में एक भी मिस न हो। बाप, बाप हैं, शिक्षक हैं, सतगुरु हैं तीनों वन्डरफुल हैं, तीनों एक हैं इसलिए इज़ी है। अलग-अलग नहीं हैं। एक सेकेण्ड के लिए अनुभव करो, बाप हैं, शिक्षक हैं, सतगुरु हैं तो जो बाबा ने कहा वो मेरे लाइफ में आ गया। वह परम आत्मा हैं, सुप्रीम सोल हैं वो अभी हमको भाग्यविधाता

(ब्रह्माबाबा) के मुख द्वारा कहते हैं। कहने वाले वो हैं फिर इसके मुख से कहते हैं, कर ले, जी बाबा। तो इसमें भाग्य बन जाता है। कर्म और भाग्य दोनों का गहरा कनेक्शन है। जो बात कर्म में प्रैक्टिकल आई उससे भाग्य बड़ा अच्छा बनता है।

प्रश्न:106- सबसे ज़रूरी किसे कहेंगे, विश्वास, निश्चय, लव या प्यार?

उत्तर:106- भावना, विश्वास, निश्चय तीनों इकट्ठे हैं। पहले भावना बैठी फिर उसमें फायदा देखते विश्वास हो गया। विश्वास से भावी बन रही है, इसे कोई टाल नहीं सकता। कोई भी परीक्षा आये मेरी भावी बन रही है। बुद्धि में कभी डाउट न आये। भावना, विश्वास ने बुद्धि को पक्का निश्चयबुद्धि बना दिया है। बुद्धि जिस घड़ी थोड़ा संशय में आती है तो सारी प्राप्ति खत्म कर देती है। संशय आने से खुशी गायब हो जाती है। संशय वाले के संग से, प्राप्तियां जिससे हो रही थीं, वह सौदा ही कैन्सिल हो जाता है। जैसे बैंक ही बन्द हो गया। संशय बुद्धि वाले औरों को भी संशय में लाने के लिये प्लैन बनाते रहेंगे। एक-दो की बुद्धि को ही भ्रमित कर देंगे। बुद्धि भ्रमित हुई तो प्रालब्ध ही खत्म हो जाती है इसलिये मुझे आजकल बाबा का यह वरदान बहुत अच्छा लगता है कि मन-बुद्धि ईश्वर की अमानत है। मेरा-मेरा नहीं है तो बुद्धि शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ है।

प्रश्न:107- विश्वास पहले होता है या निश्चय पहले होता है या प्यार पहले होता है?

उत्तर:107- थोड़ा भी शुद्ध संकल्प से, प्यार से याद करो तो दस गुना, सौ गुना वो देते हैं, बुद्धि द्वारा अनुभव होता है। मैं रांग हूँ, राइट हूँ यह भी बुद्धि द्वारा ही महसूस होता है। जब तक बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं है, मन में कोई भी इच्छा है, मन में रहता कि इनको यह है, मेरे को नहीं है, ऐसा सूक्ष्म भी ख्याल आता है तो वो सुख महसूस नहीं होता। जब सुख महसूस होता है तो बाबा से प्यार और बढ़ जाता है। जिसे इस सुख की कदर है उसे बाबा के सिवाए और कुछ अच्छा नहीं लगता। मतलब की याद नहीं, थोड़े समय के लिये याद नहीं पर सच्ची याद हो तो अटूट कनेक्शन रहता है। इस कनेक्शन को लगातार रखने

वाले कभी इसे ढीला नहीं होने देंगे। विश्वास से प्यार मिलता है, प्यार से विश्वास बढ़ता है। हमारे जीवन का आधार ही है बाबा का प्यार। हमारा जितना बाबा से प्यार है उतना अगर आप पढ़े-लिखों का बाबा से प्यार हो तो अनेकों की बहुत सेवा हो सकती है। जो भगवान प्यार दे सकते हैं वो और कोई दे नहीं सकता।

प्रश्न:108- बाबा में विश्वास की कमी नहीं है लेकिन खुद में विश्वास की कमी होती है इसी कारण हम कोई जिम्मेवारी नहीं सम्भालना चाहते। आत्मविश्वास बढ़ाने की विधि बताइये?

उत्तर:108- याद में रहने से आत्म-विश्वास बढ़ता है। इसके लिए अनुभव की शक्ति को बढ़ाते जाओ। जैसे बाबा कहते, आत्म-अभिमानी भव, देही-अभिमानी भव, विदेही भव। मैं आत्मा हूँ, उसका स्वरूप सामने आवे तो शरीर में होते विदेही रहेंगे। फिर असोचता की स्थिति से जो बाबा ने कराया वो हुआ, ऐसा अनुभव होगा। देह में होते अव्यक्त सम्पूर्ण बनने से मज़ा आता है। ज़रा भी मेरे में व्यक्त भाव न हो तो अव्यक्त और सम्पूर्ण स्थिति का जो रस है, ताकत है, वो आती जायेगी।

प्रश्न:109- दादी, आप हम सबकी विशेषता देखती हो तो क्या आपको पिछले कल्प की याद आती है? आप औरों को कैसे प्रेरणा देती हो कि आप भी विशेषता देखो?

उत्तर:109- यह मेरे में विशेषता नहीं है, पर बाबा ने जैसे मेरे को देखा है, अगर मैं ऐसे आपको नहीं देखेंगी तो बाबा मेरा कान पकड़ेंगे। बाबा ने हमको घड़ी-घड़ी याद दिलाया है, सी फादर, फॉलो फादर। हर सेकण्ड, हर श्वास हरेक आत्मा के लिये कहती हूँ, सभी सी फादर, फॉलो फादर करें तो कितना अच्छा होगा। सी फादर, फॉलो फादर करने से सबमें विशेषता देखने की ताकत आयेगी। मैं प्रैक्टिकली सपूत बनूँ, सबूत दूँ तो औरों को भी सहज हो। मेरे से कोई भी ऐसा गलत कर्म न हो जो मैं कपूत दिखाई पड़ूं। तो सी फादर, फॉलो

फादर में बहुत उन्नति है। हरेक चेक करे कि हर सण्डे की अव्यक्त मुरली के अनुसार मेरा पुरुषार्थ है क्योंकि यह फॉलो फादर करने का आइना है। कई समझती हैं, अच्छा चल रही हूँ, बाबा की बहुत मदद है, बस इसमें ही खुश हैं। अच्छा सेन्टर है, अच्छा रहने का स्थान है पर आगे बढ़ना है, ऊपर जाना है, सम्पूर्ण भी बनना है।

प्रश्न:110- हमने बाबा को देखा नहीं है और आपने बाबा को 100 परसेन्ट फॉलो किया है, तो हम भी आपको देखें और आपको फॉलो करें ना?

उत्तर:110- जिस तरह से मैंने बाबा को फॉलो किया है वो तरीका अगर आ जायेगा तो आप मुझे फालो नहीं करेंगी, बाबा को ही फालो करेंगी। मेरे पास ऐसी बहुत आत्मायें हैं जो मुझे बहुत अच्छा फॉलो करती हैं पर दूर भी जल्दी हो जाती, औरों को भी दूर कर देती हैं इसलिए हरेक बाबा को देख, बाबा को फॉलो कर आगे बढ़े हैं, न कि एक दूसरे को देख करके। समझो, मुझे कहीं किसी से अच्छी दवाई मिली परन्तु मिली तो वैद्य से ना, आपकी नब्ज़ को वैद्य जानता है ना।

प्रश्न:111- बाहर की दुनिया में सब पैसे और पोजिशन के द्वारा चलता है यहाँ ऐसे नहीं चलता है, यहाँ सब कुछ होता है लाइट रहने से, तो हम कैसे डबल लाइट रहना सीखें?

उत्तर:111- सभी शास्त्रों में शिरोमणि गीता है, कई बातें गीता में अच्छी लिखी हुई हैं। पहले अध्याय में है, कौरव और पाण्डव क्या करत भये? अर्जुन तुम यह सोच, कौरव क्या करता है, पाण्डव क्या करता है? कौरव मनी और मान के आधार पर चलते हैं, पाण्डवों के लिए तो एक प्रभु ही सब कुछ है। पाण्डव समझता है, प्रभु तू है तो सब कुछ है, यह अन्दर जड़ में पक्का हो तो कभी कोई अप्राप्ति नहीं महसूस होती है। स्वमान में रहना माना जो बाबा से प्राप्ति है उसे जीवन में लाना, जितना भी बाबा का खजाना है वो सब हमारे में आ जाये तो कोई कमी नहीं है। बाबा जो आपने दिया है, वो सबको

मिले। पाण्डव भले पाँच थे, कौरवों की विशाल सेना थी फिर भी जीत किसकी हुई? मैं पाण्डव हूँ तो भगवान की तरफ से पाँच गुण आ जाते हैं। पहले है अर्जुन, उसे भगवान का ज्ञान बहुत अच्छा लगता है। गुह्य है, गोपनीय है, रहस्ययुक्त है। जैसे भगवान सुनाता है वो उस एक-एक बात से खुश होता है। नकुल कॉपी करता है बाप को, नकल करने की अक्ल चाहिए। जैसा वो है वैसा ही करेगा। नकल करने से एकदम उन जैसा बन जाते हैं। भीम भण्डारी है, यज्ञ की सेवा में हड्डियां देगा क्योंकि भगवान का यज्ञ है। यज्ञ सेवा से कइयों की फरिश्ते जैसी लाइफ बन गयी है। सहदेव, सबके साथ सहयोगी। फिर युधिष्ठिर सत् धर्म सत् राज्य। धर्म में भी सच्चाई, कारोबार में भी सच्चाई। ऐसे पाँच गुण जिसमें हैं वो है प्रभु का प्यारा, सबसे न्यारा। वह मनी और मान की इच्छा से मुक्त है तो प्रैक्टिकली जीवनमुक्त है।

प्रश्न:112- दादी गुलज़ार और आपसे हम सबको पवित्रता तथा साइलेंस की शक्ति की भासना आती है, हमसे भी आये, उसके लिए क्या करें?

उत्तर:112- बाबा के बोल दिल से लग जाने पर वैसी धारणायें स्वत: होती जाती हैं। गुलज़ार दादी ने बाबा के बोल ऐसे ले लिये जैसे वरदान के रूप में वो बोल आज दिन तक काम कर रहे हैं। बाबा के शब्दों को दिल से पकड़ लिया है इसलिए वो ऐसे बाप समान लायक बनी हैं। बाबा ने मम्मा को कहा, कृष्ण की राधा बनेंगी? बस, वो बात दिल में लग गयी तो वो श्रेष्ठ धारणायें करना शुरू हो गया, क्या चलन थी मम्मा की। वो मम्मा सो श्री राधे, श्री लक्ष्मी बन गयी। दादी गुलज़ार द्वारा फिर अव्यक्त स्थिति बनाने की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न:113- एकता के लिए मुख्य क्या गुण चाहिए?

उत्तर:113- सच्चाई एकता में ले आती है। थोड़ा भी भेदभाव या मतभेद है तो सच्चाई नहीं है। तो सच्चाई से युनिटी में आ जायें। युनिटी तब होगी जब हम

एक बाप के बच्चे बहन-भाई हैं, तेरा-मेरा नहीं है। मैं पद्मापद्म भाग्यशाली हूँ जो मेरे को न कोई सेन्टर है, न कोई ज़ोन है, न कोई स्टूडेन्ट है, फ्री हूँ। मैं टीचर भी नहीं हूँ। बाप, शिक्षक सतगुरु वह है। पहले बाप का सच्चा बच्चा बनूं। सच्चा माना पक्का, कभी संशय न आवे। निश्चयबुद्धि विजयन्ती। यह क्यों हुआ, क्या हुआ.. कोई क्वेश्चन नहीं। ऐसे निश्चयबुद्धि सच्ची भावना वाले पुरुषार्थी; मनमत, परमत के प्रभाव दबाव से फ्री रहते हैं। श्रीमत बंधनमुक्त, जीवनमुक्त बना देती है। श्रीमत वन्डरफुल है। श्रीमत से योगी फिर सहयोगी।

प्रश्न:114- याद में रहना नेचुरल कैसे हो?

उत्तर:114- जो अपने आपको और बाबा को अच्छी तरह जानता है, उसको अपना बनाता है, वह और किसी (पराई और पुरानी बात) को नहीं देखता, उसे एक बाबा ही दिखाई पड़ता। अगर इतने सालों से बाबा का बच्चा बनने के बाद भी अभी तक भी वही पुरानी और पराई बातें सोचते हैं, बोलते हैं या देखते हैं, तो वे बाबा से दृष्टि कैसे ले सकेंगे! अभी समय ऐसा है। जो बातें बीती हैं, उन्हें बीती सो बीती करके बिन्दी लगायेंगे तो बाबा की याद में रहना नेचुरल हो जायेगा, यह बाबा को बहुत अच्छा लगता है। तो चेक करो दृष्टि, वृत्ति, संस्कार, स्वभाव में कोई पुरानी बात है क्या? बाबा तो सब देखते हैं, सब चेक करते हैं तब तो चेंज करने लिये होमवर्क देते हैं।

प्रश्न:115- अकेला व खाली महसूस करने से बचने की विधि क्या है?

उत्तर:115- कभी अपने को खाली वा अकेला महसूस नहीं करना है। मैं अकेली होंगी तो कोई मेरे से फालतू बातें करेगा और कभी खाली होंगे तो सोचते, मुझे कुछ चाहिए तो कौन देगा, फिर उसकी याद आयेगी। अकेली आत्मा हूँ, देने वाला दाता बनना है। जो बाबा के बोल हैं ना, वो मेरी लाइफ में हों, यह है मंजिल। प्रेम है दिल में, जीवन है प्रैक्टिकल में। प्रैक्टिकल प्रमाण के आगे और कुछ स्पष्ट करने की जरूरत नहीं है। अभी हम ब्राह्मण आत्माओं को शिक्षा नहीं दे सकती हूँ, सावधानी भी नहीं दे सकती हूँ। नया कोई बाबा का

बच्चा होगा तो शिक्षा देंगी, सावधान करेंगी परन्तु शुरू में हम खुद सावधान रहते थे। एक-दो को सावधान करके उन्नति को पाया है। मैं अभी वो समय चाहती हूँ क्योंकि एक तो हम अपने लिये करती हूँ, भगवान कराते हैं, उनकी शिक्षायें सिखाती हैं परन्तु उसमें मेरा फायदा है। थोड़ा भी कम करेंगे तो मेरा ही नुकसान होगा। दूसरा जो मैं करेंगी वो और करेंगे। तो इसमें फायदा भी है तो नुकसान भी है। विघ्न रूप का कोई थोड़ा भी कर्म मैंने किया, औरों ने देखा, वायब्रेशन आये तो मेरी क्या गति होगी? तो लम्बे हैं जीवन के रास्ते, ऊंची मंजिल है, जाना ज़रूर है परन्तु कदम-कदम पर बाबा की याद में रह करके, बाबा की शिक्षाओं को, समझानी को, पालना को, प्रभु लीला को देख-देख करके अन्त मते, सो गति अच्छी होवे। हमारी होवे, सबकी होवे।

प्रश्न:116- सेवा करते अवस्था नीचे ना आये, उसके लिए क्या सावधानी रखें?

उत्तर:116- आपे ही करे सो देवता। निमित्त भाव और नम्रता स्वरूप से सेवा करने से अवस्था से नीचे नहीं आते हैं। कराने वाला करा रहा है, संगमयुग है, मैं अकेली नहीं कर रही हूँ, सब मिल करके कर रहे हैं। कोई भी काम अकेला कोई नहीं कर रहा है, जो अभिमान रखे। मैं करता हूँ, यह नहीं कहो, मैं नहीं कर सकता हूँ, यह भी नहीं कहो, ऐसी बातें अवस्था को खराब कर देती हैं। अपने ही शब्द, अपने ही संकल्प अवस्था को खराब कर देते हैं यानि नीचे कर देते हैं। अभिमान वाला यह भी नहीं समझता कि मैं नीचे उतरा हुआ हूँ। उस घड़ी उससे ओम् शान्ति कहो तो अपमान महसूस करेगा। इसलिए ध्यान रहे, संगमयुग है अन्दर ही अन्दर हर्षित रहने का, यह टाइम फिर नहीं मिलेगा। कुछ होता भी है तो भी ठीक है, हमको तो खुश रहना, खुशी बांटना है।

प्रश्न:117- कई बार औरों के संस्कार ऐसे सामने आते हैं, जो थोड़ा अन्दर मन में थकावट हो जाती, फिर उमंग-उत्साह नहीं रहता, उस समय क्या करें?

उत्तर:117- यह गलत है। उस घड़ी साक्षी हो करके सुनो, अपनी बुद्धि नहीं चलाओ। यह ठीक नहीं बोलता है, सदा ही ऐसे बोलता है... यह ख्याल भी

नहीं आना चाहिए। जब किसी बात का मुझे रिएक्शेन होता है तब थकावट होती है। पर जैसे बाबा साक्षी है, ऐसे मुझे भी साक्षी स्थिति बनानी है तब बाबा मेरा साथी है। मैं बाबा का साथी होकर रहूँ तो दूसरों में भी परिवर्तन आता है, नहीं भी आया पर मैं उसकी परवाह न करूं। कोई भी मेरे से असन्तुष्ट न हो। अगर मैं थक गई तो उसे सन्तुष्ट नहीं कर सकूंगी। कोई भी बात करने आता है तो सोचेंगे यह बात पूरी करे ना, यहाँ से जल्दी जावे ना.... यह ख्याल आया तो मैं कोई सच्ची मददगार नहीं हुई। वो अपने अनुसार अपने को राइट समझ करके राय देता है या कुछ भी है। कोई सेवा का, योग का प्लैन लेकर आता है और वह उसमें दृढ़ है.. हम उसकी बात को काट न देवें। हमारे अन्दर से निकले कि अच्छा है, ठीक है... तुम्हारा विचार है ना, हो जायेगा। ऐसे अन्दर में धीरज है तो शान्ति है। वह शान्ति हर समय, हर श्वास में, संकल्प में काम करती रहे। कोई आत्मायें असुल ऐसी हैं जो उनको चेंज नहीं होना है, उनको अपने अन्दर जो प्लान है, जो विचार है उस पर रहना ही है, तो ड्रामा है, उसका भी यह पार्ट है। अब इसमें मुख्य बात है अपनी सम्भाल ज़रूर करें, हमारी थकावट मेरी स्थिति को कभी भी अचल-अडोल बनने नहीं देगी। नुकसान मेरे को होगा। तो यह बात सभी को मैं कहती हूँ, कोई भी कारण से चारों सबजेक्ट में पास होना हो तो थकावट को नॉट एलाऊ। उस घड़ी एक विधि है, बाबा को मैंने खुद देखा, समझेंगे टू मच बातें हैं, साधारण बातें हैं, बाबा के ढंग के लायक नहीं हैं, तो उस घड़ी बाबा इतने साइलेंस में चले जाते जो बोलने वाले का बोलना ही बन्द हो जाये। फिर उसका माइन्ड चेंज हो जायेगा, जिसको बाबा आजकल मनसा सेवा कहते हैं। शब्दों द्वारा या हमारे विचार द्वारा वो स्वीकार नहीं करेगा, पर भावना उस आत्मा के प्रति मैं कम न करूँ। स्वीकार करे न करे पर मैं अपनी भावना कम न करूँ, तो कभी न कभी शायद उसको मदद मिल जाये परन्तु पर्सनल आज एक बारी एक से मेरी भावना कम होगी तो कल दूसरे से हो जायेगी, यह मेरी आदत हो जायेगी।

प्रश्न:118- सन्तुष्ट रहने की विधि क्या है?

उत्तर:118- सन्तुष्टता की शक्ति वा सहनशक्ति के पहले चाहिए धीरज। धीरज का गुण है तो फरिश्ता रूप की स्थिति तक पहुँचना सहज है। अपने फरिश्ता स्वरूप को थोड़ा समय इमर्ज करो तो अच्छा अनुभव हो सकता है, पर ज्ञान योग के आधार से हमारी नेचर नेचुरल ऐसी बन जाये इसके लिए बहुतकाल से अभ्यास चाहिए। स्वयं का, बाप का या ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में स्पष्ट हो तब सन्तुष्ट रह सकेंगे। जब मेरे सामने बाबा है तो मेरे में धीरज भी है, सहनशक्ति भी है, सन्तुष्टता भी है। फिर बाबा कहते हैं, बच्चे आत्म-अभिमानी स्थिति में रहो। कोई भी बात सामने आये तो स्थिति अचल-अडोल रहे। अन्दर स्मृति रहे कि ड्रामा में हर एक का अपना-अपना पार्ट है। यह सब बातें ध्यान पर रखने से मैं सन्तुष्ट रहूंगी और मेरे से सब सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु इतनी सहज बात नहीं है क्योंकि इसमें हरेक की नेचर अपनी है। हरेक की विशेषता अपनी है, हरेक का पार्ट अपना है, हर एक का अवगुण भी अपना है। इतनी अन्दर नॉलेज सार स्वरूप में हो तो वो स्थिति जैसे खींच रही है, हम उस स्थिति का आह्वान कर रहे हैं।

प्रश्न:119- कौन-सी दो बातें मन में आना ठीक नहीं है?

उत्तर:119- हमारा दिल रूपी दर्पण साफ हो, अपने लिये फीलिंग अच्छी हो तो मैं भाग्यवान हूँ। मन को शान्ति मिली, बुद्धि को अच्छा सोचने के लिये ज्ञान मिला तभी दिल रूपी दर्पण साफ हुआ, फिर अपने को देखने लगे। नहीं तो दर्पण मैला है तो देख नहीं पाते हैं। अगर दर्पण को साफ करके देखते हैं तो भी कोई निराश हो जाते हैं और कोई को अपनी अच्छाई का अभिमान आ जाता है। मैं अच्छा हूँ, यह अभिमान, मैं अच्छा नहीं हूँ.. यह निराशा। दोनों बातें ठीक नहीं हैं। इन बातों के अनुभव की गहराई में जाना चाहिए। बाबा ने जो कहा, वो अभी तक हमने किया या नहीं किया, पर अभी मैं दृढ़ संकल्प करती हूँ तो हो सकता है। बाबा जैसे देखते हैं ऐसे मैं भी देखूँ, सम्पूर्ण बनने में थोड़ी कमी है परन्तु मेरा पुरुषार्थ ऐसा है तो सम्पन्नता आ जायेगी। इतना अन्दर उमंग-

उल्हास हो। कुछ भी हो जाये उमंग-उत्साह कम न हो।

प्रश्न:120- महसूस करना, माफी मांगना, अफसोस करना एक ही बात है, यह है रियलाइजेशन की सीढ़ी का पहला कदम, इसमें और आगे क्या है?

उत्तर:120- रियलाइजेशन स्व-उन्नति की सीढ़ी है परन्तु कई हैं जो रियलाइज़ नहीं करते हैं, कारण बताते हैं या अपना विचार सुनाते हैं... इसमें पक्के हैं। चेंज होना नहीं चाहते हैं। ऊंचे ते ऊंचे भगवान की तरफ से किसी आत्मा को अगर यह गिफ्ट मिल जाए, कोई रियलाइजेशन से अपना परिवर्तन कर लेवे तो वह बाबा के दिल पर चढ़ सकता है। उसे बाबा फिर इतना प्यार करते हैं, क्षमा करते हैं। अगर मैं खुद को क्षमा न करूँ या आपको क्षमा न करूँ, बार-बार याद करूँ तो मैं कौन हूँ? क्षमा भाव, रहम भाव, कल्याण भाव से मेरी भावना काम करेगी। तो क्षमा करने की भी अक्ल चाहिए और बाबा से क्षमा मांगने की भी अक्ल चाहिए। कोई बात को पकड़के बैठना माना कोई भी समय माया हमारा शिकार कर लेगी, पकड़ लेगी। तो यह सूक्ष्म विवेक अगर महसूस होता है तो फौरन पश्चाताप करना चाहिए, बदलना चाहिए। उसको ऐसे ही चलाते नहीं रहना चाहिए, चलाते रहने से भगवान भी कहेंगे, ड्रामा... शायद इसको प्रजा में ही आना होगा...। क्योंकि क्षमा नहीं मांगी, माफ करने और भूलने का रहस्य नहीं समझा। हम अपनी भी भुला दें, दूसरे की भी भुला दें। किसी की भूल हुई, याद न करें। कोई याद दिलाते हैं तो छोड़ दो। नहीं सुनो, नहीं सुनाओ। नहीं तो वातावरण में वो बात फैल जायेगी।

सब विघ्न-विनाशक और खुश रहें माना अच्छी स्थिति में रहें। खुद को समझ, भगवान को समझ आत्म-स्थिति में रहें, भगवान की याद में रहने की जो गुप्त संबंध की शक्ति है वह अथक बनाती है। अगर हम किसी कारण से थके तो जो ईश्वरीय देन है वो छूट जायेगी। अपना पुरुषार्थ अलग बात है, पर भगवान राज़ी हो करके उसको कोई देन देता

है, माना भगवान उसको निमित्त बनाके बुलवाता या करवाता है। आजकल कुछ भी होता है, किसी का कैसा भी स्वभाव है, वह मुझे थका न दे। कई हैं जो ऐसा कोई परिश्रम नहीं करते हैं फिर भी थक जाते हैं। तो ईश्वरीय सन्तान हूँ, ड्रामा की गहरी नॉलेज के संस्कार मन-बुद्धि के द्वारा नेचुरल हो जायें। तो वो पुरुषार्थ का फल है जो थकाता नहीं है। समझो पुरुषार्थ ऐसा है, संकल्प श्रेष्ठ हैं तो उमंग-उत्साह से काम हो गया।

प्रश्न:121- मेरे कारण किसी का व्यर्थ संकल्प न चले, इसके लिए क्या ध्यान में रखें?

उत्तर:121- जैसे शिवबाबा ब्रह्मा बाबा द्वारा कराते हैं, ऐसे हम भी बाबा के इशारों को समझ जायें। अन्दर से मैं ऐसे संकल्प में रहूँ जो किसको व्यर्थ से फ्री कर दूँ। मेरे कारण किसी का व्यर्थ ख्याल न चले, ज्ञान की इतनी गहराई में जाओ, स्टेप बाई स्टेप, जो भगवान कह रहे हैं, वही करना है और किसको नहीं देखना है। अन्दर नीयत साफ है तो जो संकल्प करेंगे वो साकार हो ही जायेगा, यह निश्चित है। परिवर्तन लाने के लिये प्रैक्टिस कर रहे हैं, उसमें बाबा बल देंगे।

प्रश्न:-122- कोई ग्रहचारी हटाने के लिए क्या करें?

उत्तर:-*122*- पहले तो ग्रहचारी को हटाने के लिये खास तपस्या करनी चाहिए। ग्रहचारी हटाना ज़रूरी है। एक ग्रहचारी बहुत बड़ी होती है, एक हल्की होती है पर हल्की भी न हो। हमारे ऊपर सदा ही बृहस्पति की दशा हो, इस भावना से अच्छी तरह से तपस्या करनी है। बेहोश को होश में ले आयें, इतनी हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा हो, यह पुरुषार्थ है।

प्रश्न:-123- ईर्ष्या किस तरह नुकसान करती है?

उत्तर:-123- देखा गया है कि कई हैं जो सूक्ष्म ईर्ष्या के कारण किसी को आगे बढ़ता हुआ देख सहन नहीं कर सकते। फिर अपना कोई रास्ता निकालके अपने को आगे लाना चाहते हैं, वो विघ्न रूप हो जाता है। न खुद में सफलता, न औरों को सफल होने देंगे। अपने कर्मों से हम अपना भाग्य आपेही पायेंगे,

इस समझ की कमी ईर्ष्या ले आती है। जिसकी बुद्धि में बेहद का बाप है, बेहद की नॉलेज है, बेहद का वर्सा है, उसमें ऐसी ईर्ष्या नहीं हो सकती। यज्ञ इतिहास में भी कोई मम्मा को आगे देख सहन नहीं कर सकते थे। बाबा, मम्मा की महिमा करे वो देखा नहीं जाता था। उनसे कई गलतियाँ होने लगीं, वो फिर ठहर नहीं सके, वो वापस लौकिक में चले गये। शादी नहीं की परन्तु यज्ञ में रहना ही मुश्किल हो गया। ईर्ष्या बहुत नुकसानकारक है। ईर्ष्या वाला जितना समय यज्ञ में रहेगा, नुकसान ही नुकसान। वह विघ्न डालता है माना थोड़ा आसुरीपना है। जिसके प्रति इच्छा और ममता है उसके लिये कहेंगे, तुम आगे जाओ, दूसरे के लिए कहेंगे, यह ऐसे क्यों! मेरे लिये क्यों नहीं, यह सूक्ष्म रूप से गलत है। न इच्छा, न ममता। इच्छा मात्रम् अविद्या। करो भले सब कुछ, भावना से करो, कामना नहीं रखो। अगर कामना से किया और वो पूरी नहीं हुई तो संशय आयेगा, विघ्न डालेंगे फिर दोष देंगे औरों को। कहेंगे, बीच-बीच में यह क्यों आता है? मुझे बाबा से मिलने नहीं देते हैं। जो अन्दर होता है वो मुख से निकलता रहता है। ऐसी बातें वायुमण्डल को शुद्ध, शान्त बनने नहीं देती हैं। अन्दर खुद शुद्ध, शान्त रहने का अनुभव नहीं करता, इसलिए अभी गहरा पुरुषार्थ करना है। जितना आगे बढ़ते जा रहे हैं उतना माया भी सूक्ष्म रूप धारण करती जा रही है। बाबा कहते, मेरे बच्चे मेरी माला में आवें, माया कहती है, मेरी माला में आवें। माया अपनी माला बनाने लिये तैयार बैठी है। तो अपने को सम्भालना है, मायाजीते जगतजीत बनना है।

प्रश्न:-124- न चलायमान, न डोलायमान इसकी युक्ति क्या है?

उत्तर:- 124- अंदर में देह-अभिमान कितना छिपा हुआ बैठा है, उसे महसूस करें। वो हमें प्रयोग करता है, हम भी उसे प्रयोग करते हैं। आत्म स्थिति में रहना, अपने को आत्मा समझ बाबा से शक्ति खींचना – यह देह-अभिमान करने नहीं देता है। ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, शान्ति का सागर, सर्वशक्तिमान बाबा है। मैं अपने को आत्मा समझकर बाबा से ऐसा संबंध जोड़ूँ जो आत्म-

स्थिति में रहने की शक्ति अंदर से अडोल बना दे। अडोल स्थिति कैसे बनी? कभी न चलायमान, न डोलायमान। इसके लिए चाहिए एकाग्रता की शक्ति। बाबा कहते हैं, बच्चे, तुम मास्टर सर्वशक्तिमान हो। वो तब समझेंगे जब स्मृति होगी, मैं बाबा की, बाबा मेरा। ऐसा महसूस करने से सुख मिलता इलाही है।

प्रश्न:-125- मन, बुद्धि को ऑर्डर में रखने से तुरंत क्या प्राप्ति होती है?

उत्तर:-125- जो मन-बुद्धि को अपने ऑर्डर में रखता है वो हमेशा खुश रहता है। योग में कर्मातीत, अव्यक्त, संपूर्ण – आप सब ही तो बनने वाले हो ना! दिन-प्रतिदिन न्यारे बनने से, बाबा का प्यार पाने से धरती पर पांव नहीं रहने चाहिएँ। फरिश्तों के पांव धरती पर नहीं रहते हैं। साकार में रहते भी अव्यक्त निराकारी रहते हैं। सर्वगुणों में संपन्न बनने के लिए, औरों को भी गुणवान बनने के लिए हम साथ दे रहे हैं। मेरे को तो भगवान ने जो पार्ट दिया है, उसमें बहुत खुश हूँ, मस्त योगी हूँ, मस्त फकीर। कितना अच्छा पार्ट बाबा ने दिया है। हरेक का अच्छा पार्ट है। सबके पार्ट को साक्षी हो देखना, यह भी अच्छा है। सबके साथ मिलनसार होके, मिल करके रहना यह बहुत अच्छा पार्ट है। ऐसी कोई आत्मा न हो जो मैं कहूँ, यह अच्छी नहीं है, यह सोचना भी नहीं है, कहना भी नहीं है। कभी भी स्वभाव परिवर्तन न हो। सदा ही क्वीन मदर की बात याद रखना – झुक-झुक, सिख-सिख, मर-मर। सुनने में भी ऐसी सीखने की भावना, स्नेह की भावना, सच्चाई की भावना हो जो हम सब एक हैं, एक के हैं। वन गॉड, वन वर्ल्ड वन फैमिली हैं – इतना अंदर बुद्धि बेहद में रहे, खुश रहे। कभी भी कोई आपके चेहरे पर नाखुशी को न देखे।

प्रश्न:-126- अपनी कमी मिटानी है तो क्या करें?

उत्तर:-126- सदा एक बाप, दूसरा ना कोई। एक बाबा के सिवाय दूसरी कोई बात दिल में नहीं रखनी है। बाबा बैठे हैं, हम निश्चिंत हैं, कोई चिंता की बात नहीं है पर निश्चिंत भी तभी रहेंगे जब हमारे चिंतन में बाबा होंगे, शुभ चिंतन होगा अपने लिए, शुभ चिंतक होंगे सबके लिए। पुरुषार्थ में, चाहे सेवा में, चाहे

संबंध में, स्व, सेवा, संबंध तीनों ही श्रेष्ठ हों। स्व की स्थिति, जैसे आज बाबा ने कहा, हंस तैरता भी है तो उड़ता भी है। ज्ञान तैरना सिखाता है, न्यारा बनना सिखाता है, योग उड़ना सिखाता है तो जब हम ऐसी चलन चलते हैं, ऐसा भाग्य बनाते हैं, तो हमारे को देख औरों का भाग्य बन जाता है। ना किसी की कमी देखो, ना सुनो, ना मुख से वर्णन करो, यह थोड़ी भी आदत हो तो मिटा देना। कमी देखना, सुनना, फिर मुख से बोलना – बड़ा नुकसानकारक है। मेरी कोई कमी देखता है तो अच्छा नहीं लगता है, मैं किसी की कमी देखूँ, किसने मुझे छुट्टी दी है? अगर अपनी कमी मिटानी हो तो किसी की कमी नहीं देखो। किसी ने पूछा, किसी की गलतियाँ कब तक सहन करें? मैंने कहा, यह भी अभिमान बोल रहा है, तुम गलतियाँ देखते ही क्यों हो, तुम ऐसा करो, जो कोई गलती करे ही नहीं। हमारे को देख, वायुमंडल को देख, प्यार भरे वायुमंडल, वायब्रेशन को देख परिवर्तित हो जाये।

प्रश्न:-127- सेवा में थकावट ना आए, क्या करें?

उत्तर:-127- अपने को टीचर नहीं समझो, सेवा साथी हो। एक योग अपने लिए लगाते हैं जो कोई याद न आये, दूसरा सेवा में योग लग जाता है। सेवा करते रहो, कभी थकना नहीं। थकते वो हैं जो आवाज़ में ज्यादा आते हैं। थकावट उनको होती है जो देह अभिमान में आते हैं। अरे बाबा की सेवा है, बाबा के बच्चों की सेवा है, हम सेवाधारी हैं, सच्चाई और प्रेम में थकावट नहीं होती है। योग और ज्ञान है तो आटोमेटिक देह, संबंध से न्यारे और बाबा के प्यारे हो जाते हैं। ऐसी स्मृति अच्छी हो कि सब बाबा के प्यारे बच्चे हैं, भले हज़ारों बैठे हैं पर सब बाबा के बच्चे हैं।

प्रश्न:-128- समयानुसार उड़ती कला में जाने के लिए किन बातों को ध्यान पर रखें?

उत्तर:-128- 1. हमें किसी के साथ टक्कर या चक्कर में नहीं आना है। किससे बनती है, किससे नहीं बनती है, जो मेरी महिमा करे वो अच्छा है, जो न

करे वो अच्छा नहीं है, यह भी बंधन है, ऐसा संस्कार नहीं चाहिए।

2. सर्व संबंधों का अनुभव एक बाप से करो तो निर्भय, निर्वैर बनेंगे। याद ऐसी हो कि हम यहाँ हैं ही नहीं। बाबा के साथ रहते हमारी वृत्ति भी बेहद की हो जाये। बाबा ने किसी की कमी नहीं देखी। हमें भी किसकी कमी नहीं देखनी है।

3. बातें आयेंगी, चली जायेंगी। डोंट वरी, नो प्रॉब्लम। कभी चिंता वा फिकर न हो। करनहार भी बाबा, करावनहार भी बाबा, हमको सदा आत्म-अभिमानी बनकर, ट्रस्टी होकर रहना है।

4. न हमको कोई एरिया है, न स्टूडेन्ट्स हैं, न सेन्टर है, कुछ नहीं है। जहाँ पाँव रखो अपना यज्ञ है। यज्ञ सेवा करने से हमारा संकल्प और समय सफल होता है। मैं जो करती हूँ, अपने लिए करती हूँ और वही करती हूँ जो बाबा ने सिखाया है।

5. यह अटेन्शन ज़रूर रहे कि जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देख और करेंगे। व्यर्थ सोचना, बोलना यह पाप का अंश है, तो ये बातें मेरे में न हों। यह है सावधानी की सीढ़ी, चढ़ती कला में आगे बढ़ने के लिए।

6. जो ईश्वरीय लॉ वा मर्यादा अनुसार नहीं है उसे महसूस करके अपने को बदलना है। कोई घड़ी ऐसी न हो जो हम कहें कि आज हमारा मन ठीक नहीं है। व्यर्थ संकल्प पैदा करने की नेचर साइलेन्स की भट्ठी में सदा के लिए खत्म कर दो।

प्रश्न:-129- सर्वगुण संपन्न बनने के लिए श्रेष्ठ धारणायें कौन-सी हैं?

उत्तर:-129- हम सर्वगुण संपन्न तब बनेंगे जब किसी का अवगुण दिखाई न दे। हरेक का अपना गुण है। हरेक अपने गुण से सेवा कर रहे हैं, मैं अपने गुण से सेवा कर रही हूँ। मैं क्यों कहूँ कि इसमें गुण नहीं हैं। बाबा ने हरेक की कोई न कोई विशेषता देखकर, अपना बनाकर सेवा कराई है। हरेक का पार्ट नूंधा हुआ है। तो ज्ञान को पीस-पीस करके अंदर ले लेना है। समझो, आप मुझे राय देते हो, तो मैं आपकी बात को कट नहीं करूँगी, अच्छी है। निमित्त बनके

राय करने में कोई हर्जा नहीं है पर ऐसे नहीं कि यह मेरी राय मानता नहीं है। अभिमान ऐसा है जो पता ही नहीं पड़ता है कि मेरे में यह अभिमान है। कार्य-व्यवहार में अभिमान नहीं है तो देही-अभिमानी स्थिति है। कार्य में अटैचमेन्ट नहीं है, कर्म से न्यारे हुए तो अशरीरी बन गये। न्यारा रहने से परमात्म प्यार की शक्ति आत्मा में भर जाती है। अगर किसी आत्मा को कोई समस्या है तो उसे भी ठीक कर देते हैं। ऐसा सकाश हो, इतना स्नेह हो जो उसकी समस्या चली जाये। हमारे स्नेह में इतनी ताकत हो जो और चिन्ता करना छोड़ दें।

तन की बीमारी तब तक नहीं छोड़ती है जब तक मन बीमार है। भले हिसाब-किताब कुछ होता है लेकिन यह ख्याल ही न आये कि यह क्या हुआ, क्यों हुआ? याद का बल जमा होता जाये, यह ध्यान रखना है। ख्याल ही न उठे कि यह हिसाब-किताब क्यों आया! अंदर से आवाज़ निकले कि सबका भला हो। संस्कारों में स्मृति रहे कि सबका भला हो। जैसी स्मृति रहेगी, वैसी वृत्ति होगी, वैसी दृष्टि होगी। जिसको रुचि होती है वो हर बात की गहराई में जाता है, फिर और बातों से न्यारा होता जाता है। वायुमण्डल ईश्वरीय आकर्षण वाला हो तो किसी भी आत्मा को पिघला सकता है। बाबा बच्चों में अपनी सब खूबियाँ भर रहे हैं। ताकत चाहिए जो भगवान की खूबियाँ हम बच्चों में आ जायें। राजाई पद पाने की खूबी आ जाये, और वो आयेगी भी अभी। अभी शब्द का महत्व है।

प्रश्न:-130- सहज पुरुषार्थ के लिए मुख्य बातें कौन-सी हैं?

उत्तर:-130- सहज रीति पुरुषार्थ हो, सफलता मिले, कभी नाउम्मीदी न आए, निराश न होवें इसके लिए पुरुषार्थ में हिम्मत, विश्वास, सफाई चाहिए। कराने वाला बाबा करा रहे हैं, करने वाले हम बच्चे हैं। संगठन की शक्ति में पुरुषार्थ सहज हो जाता है। हर एक को बाबा की पर्सनल मदद है पर संगठन की शक्ति में, मधुबन के वातावरण में पुरुषार्थ करना सहज होता है। इसके लिए तीन बातें ध्यान में रखना, एकनामी, एकव्रता, एकाग्रता। व्रत क्या है, वृत्ति हमारी सदा

त्याग वृत्ति होवे, त्यागवृत्ति से सदा तपस्वीमूर्त हैं फिर सेवाधारी हैं।

प्रश्न:-131- किन संकल्पों से हिसाब-किताब बन जाता है?

उत्तर:-131- सही दृष्टिकोण है, हम बदलेंगे, जग बदलेगा। अगर सोचते कि पहले यह बदले, तो हम कभी नहीं बदलेंगे। क्या अभी तक यह ख्याल करेंगे कि यह बदले, यह करे..यह भी सोचा तो हिसाब-किताब बन गया। ऐसी बातें दिल से महसूस करो, कई बार अपने आप महसूस नहीं होती हैं, संगठन में सहज अनुभव हो जाती हैं। अनुभव करना माना मुझे बदलना है।

प्रश्न:-132-ज्वालामुखी योग क्या है?

उत्तर:-132- बाबा कहते हैं, एवररेडी। अचानक कुछ भी हो जायेगा, तो क्या ज्वाला काम कर रही है? लगन की अग्नि हमारे पर, चाहे सारे विश्व पर काम नहीं कर रही है तो मैं क्या कर रही हूँ! अगर थोड़ा भी सूक्ष्म में कोई भी विकार है तो योग ज्वाला रूप नहीं है। ज्वालारूप योग माना ही ऐसी पावरफुल याद जिसमें विकर्म विनाश हो जायें, हिसाब-किताब चुक्तू हो जायें, कर्मातीत स्थिति का अनुभव होने लगे, संपूर्णता सामने दिखाई दे।

प्रश्न:-133- वहम की बीमारी से बचने की युक्ति क्या है?

उत्तर:-133- हम बाबा के बने तो ट्रस्टी हो गये। ट्रस्टी माना यह तन-मन-धन आपका, मेरा कुछ नहीं। कहा जाता है, वहम की बीमारी का कोई इलाज नहीं है। वहम की बीमारी सूक्ष्म संशयबुद्धि बना देती है, भ्रम में डाल देती है। किसी कारण से भी किसी के प्रति भाव-स्वभाव का भी अंदर वहम बैठ गया, तो चाहे वह बदल जायेगा, पर मेरी बुद्धि में वही वहम बैठा रहेगा। हर एक की चढ़ती कला है, आगे बढ़ते जा रहे हैं। पीछे मुंह करके देखा तो मेरा मुंह कैसा होगा इसलिए बाबा कहते, हमेशा सामने देखो। सामने देखने से निश्चय अडोल बना देता है। हलचल कितनी भी हो, फ्री हैं। कहाँ भी रहते अचल-अडोल रहें।

प्रश्न:-134- क्रोध या आवेश का अंश भी नुकसान करता है, कैसे?

उत्तर:-134- बाबा की साकार मुरलियों में इशारा मिल रहा है, बच्चे, क्रोध

मत करो, बड़ा नुकसानकारक है। थोड़ा भी क्रोध, आवेश हमारी अंदर की भावना सच्ची, शुद्ध, श्रेष्ठ बनने नहीं देता है तो हर एक पुरुषार्थ करके देखे। कभी भी किसी कारण से मेरे अंदर क्रोध का अंश ना होवे। अगर होवे तो महसूस करके खत्म करना, भट्ठी करने का मतलब यही है, संगठन का फायदा है। पुरुषार्थ में बाबा कहते हैं, जो करना है अब कर ले, जैसे बाबा करा रहे हैं, श्रीमत दे रहे हैं, उसी अनुसार पुरुषार्थ करो।

प्रश्न:-135- बहुत विचार चलते हों तो कैसे रोकें?

उत्तर:-135- जो भाई-बहनें बहुत सोचते हैं उन्हें देख तरस पड़ता है, सोचने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि कल्याणकारी बाप है, समय भी कल्याणकारी है और कल्याणकारी यह संगठन है। ऐसे कल्याणकारी समय में सब बातों में कल्याण है, यह पक्का निश्चय हो। कुछ भी हो जाये पर निश्चय का बल सहयोग देता है। और बातों में नहीं जायेंगे, बातों में जाना समय गंवाना है। जितना पुरुषार्थ की गहराई में जाओ, दूसरे संकल्पों से फ्री हो जाओ तो शरीर कैसा भी है, अच्छा है। यह नहीं कहेंगे, ऐसा है, कैसे अच्छा है? समय पर साथ देता है, इसलिए बहुत अच्छा है।

प्रश्न:-136- धोखा न लें, न दें – इसके लिए क्या करें?

उत्तर:-136- परीक्षायें भी आयेंगी परन्तु लक्ष्यदाता द्वारा लक्ष्य मिला है लक्ष्मी नारायण सम बनने का। बनाने वाले बाबा बैठे हैं, संगम का समय है, यह भी याद आता है तो बहुत खुशी रहेगी। ऐसी-ऐसी अच्छी बातें दिल में हैं तो कभी धोखे में नहीं आयेंगे, न धोखा देंगे। अच्छी और ऊंची बातें अगर बुद्धि में नहीं हैं तो धोखा मिल जाता है। तो न धोखे में आना है, न धोखा देना है। दुनिया में दु:ख, अशान्ति बहुत है क्योंकि या तो धोखे में आये हैं या धोखा दिया है। इसमें जिसने अपने को सम्भाला है, भगवान मेरा साथी है.. तो सदा ही भगवान ने अपना बनाके मुसकराना सिखा दिया है, कभी धोखे में नहीं आये हैं। उसी घड़ी टच होगा कि यह ठीक नहीं है। बस, जो न करने वाली बात है रुक जायेंगे, जो

करने वाली बात होगी वह कर लेंगे। यह भी अनुभव है, जो आवश्यक बात है वो छूटेगी नहीं, जो आवश्यक बात नहीं है उससे बच जायेंगे। हम इन्सान हैं, हमारे पास ठीक और गलत को समझने की बुद्धि है कि यह सच है, यह झूठ है, यह पाप है, यह पुण्य है। इन्सान हो करके अगर इतना भी समझ से काम नहीं लेता है तो वो कौन हुआ? गॉड का बच्चा ऐसे चले, जो उसकी चलन से भगवान याद आये। मीठे-मीठे बाबा के बोल ऐसे हैं जो हमको एकदम पिघला देते हैं।

प्रश्नः-137- दादी जी, क्या आपका कैसे करेंगे, क्या करेंगे, इस प्रकार का चिन्तन नहीं चलता?

उत्तरः-137- शान्त रहना हमारा काम है, सेवा कराना बाबा का काम है इसलिए कैसे करेंगे, क्या करेंगे, ये संकल्प नहीं आते हैं। चारों विषयों में पूरे नम्बर लेने के लिए ज्ञान है। ज्ञान से योग है, योग का प्रैक्टिकल सबूत है धारणा अच्छी होगी, उससे सेवायें हुई हैं इसलिए जब, जहाँ जो सेवा होनी है वह होगी। क्या सेवायें करूँ, यह ख्याल कभी नहीं आया है। मेरी भावना है कि जो बात मैंने बाबा से सीखी है या बाबा ने मुझे दी है वो सब आपको खुली बता दूँ, करो न करो आपकी मर्जी, पर मैं कहती हूँ, आप करेंगे। मैंने ऐसा शक न अपने में रखा है, न आप में रखती हूँ। भावना है यह। आज्ञाकारी बच्चों को ही दुआयें मिलती हैं। दुआओं में दवाई समाई हुई है। कैसी भी कड़ी बीमारियाँ हैं, सब खत्म हो जाती हैं और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति आ जाती है, दोनों काम इकट्ठे होते हैं। जब कोई भी अन्दर व्यर्थ ख्याल आवे तो फौरन उसको खत्म करो, तो शान्त रह सकेंगे। शान्ति में रहना माना सदा के लिए व्यर्थ खत्म।

प्रश्नः-138- कभी-कभी निराशा क्यों आती, अपमान महसूस क्यों होता?

उत्तरः-138- बाबा ने हम बच्चों को शुद्ध, श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प की चाबी दे दी है, तुम अपना काम करते चलो। आध्यात्मिकता के सम्बन्ध से आपस में प्यार है। कभी तनाव नहीं है, सदा क्षमा, रहम, सच्चाई, स्नेह भगवान ने भर दिया है। बाबा ने दिनप्रतिदिन सेवा की जो प्रेरणा दी हैं, सब साकार हो रही हैं, होंगी, यह

हमारी भावना है। याद और सेवा के बिना मन क्या करता है, पूछो। यह तन बाबा की अमानत है, अमानत को सम्भाल रहे हैं, अमानत को कभी अपना नहीं समझा जाता है। बाबा ने देह के भान से परे रहने के लिए इतने अच्छे मन्त्र सिखाये हैं। हम छोटे बच्चे हैं तो बाबा-बाबा करते हैं, बाबा कहते, बच्चे-बच्चे। बाबा ने मुसकराना सिखा दिया, कोई भी बात है, ड्रामा कल्याणकारी है। हर आत्मा का पार्ट अच्छा है। बाबा ने कहा है, संस्कारों का संस्कार करो, यह भी बाबा को क्यों कहना पड़े। मन, बुद्धि, संस्कार का ज्ञान बाबा ने दिया है। बाबा ने इतना स्पष्ट ज्ञान दिया है, जिससे दिल ने, मन ने कितना प्यार से ज्ञान को स्वीकार किया है इसलिए बुद्धि कहीं नहीं जाती है। थोड़ा अभिमान है, तो अपमान की फीलिंग आती है। निराशा आती है तो भी अभिमान है। मेरे मीठे बाबा ने कहा है, जहाँ तक जीना वहाँ तक सीखना है। बाप सर्वशक्तिवान है, उसने इतनी शक्ति दी है जो हर शक्ति आर्डर में रहती है। बाबा के महावाक्य हमारे जीवन में हैं, वही जीना सिखाते हैं। मरूं तो ऐसे, जीऊं तो ऐसे। जैसे सतयुग में शरीर छोड़ना, धारण करना बड़ी बात नहीं है, उसका अभ्यास यहाँ से करना है। यहाँ नेचुरल अभ्यास हो जाए। कोई कर्मभोग का हिसाब-किताब न हो। बाबा ने ऐसा हमारा जीवन बनाया है जिसमें हम सदा सन्तुष्ट रहते हैं। कभी कोई आवेश में नहीं आता, किसी को ईर्ष्या नहीं होती। दुनिया में कोई ईर्ष्या से छूटा हुआ नहीं है। स्पर्धा और भ्रष्टाचार के बिना चलता नहीं है संसार में। बाबा ने इससे मुक्त कर दिया। भाग्यशाली तो क्या पदमापदम भाग्यशाली हैं जो बाबा को कदम कदम में फालो करके पदमों की कमाई कर रहे हैं। हमारे पास और कुछ नहीं है। सच्चाई है, स्नेह है, श्रेष्ठ संग है, समझ भी है। अंधविश्वास से कोई नहीं बैठा है। कोई सदस्य या फालोअर बनकर नहीं बैठा है, हर एक सेवाधारी है। बाबा ने भी कहा, मैं सेवाधारी हूँ। संगठन में ईश्वरीय स्नेह की शक्ति से अन्दर की कोई भी समस्या हल हो जाती है। संगठन में मिलकर रहने की भावना नहीं है तो व्यक्ति भारी हो जाता है। जो भारी होता है

वह सेकण्ड में हल्का हो जाए यदि संगठन के प्यार में समा जाए। प्यार में सब बातें सहज हो जाती हैं।

प्रश्न:-139- ड्रामा का ज्ञान सुख का आधार है, कैसे?

उत्तर:-139- आत्मा का ज्ञान शान्ति देता है, बाबा का ज्ञान शक्ति देता है। सुख कौन देता है? कैसी भी बात आ जाये, दुख नहीं करेंगे, दुख का मेरे पास निशान न रहे, तो मैं कहेंगी, ड्रामा की नॉलेज बहुत सुख देती है। बाबा, ड्रामा का ज्ञान देकर, सारी योजना बताकर कहते हैं, बच्चे, सदा श्रीमत पर चलते चलो, कुछ भी हो जाये, संशय न आ जाये। श्रीमत पर चलने वाले अंदर से पक्के होते हैं। किसी भी हालत में परमत के प्रभाव में नहीं आना। किस के प्रति भी मन में ग्लानि नहीं रखना। निश्चय के बल से, समर्पित बुद्धि से, साक्षीद्रष्टा बनकर हर पार्टधारी के पार्ट को देखते हर्षित रहो। यह क्यों हुआ, क्या हुआ..अरे वैरायटी ड्रामा है। ऐसा नहीं होना चाहिए..इसमें शान्ति से काम लो माना योगबल से काम लो। मूंझो और मुरझाओ नहीं।

प्रश्न:-140- एक-दो के साथ सम्बन्ध में आते किस बात का ध्यान रखें?

उत्तर:-140- जब मैं साकार बाबा को देखती हूँ तो चार रूप सामने आते हैं। एक मेरा साकार बाबा, फिर अव्यक्त बाबा, फिर निराकार बाबा, फिर नारायण रूप। सत्य नारायण स्वामी, अन्तर्यामी। जानता सब कुछ है पर कहता है, मैं कुछ नहीं जानता हूँ। परमात्मा मेरे को जाने तो और सब जान जायेंगे, थोड़ा धीरज रखो। पहले मैं प्यार से, एक-दो को अच्छी तरह जानूं, उनको प्यार दूँ। समय आयेगा, वह भी पहचान लेगा। "मैं" शब्द सम्भलकर बोलो। जब कहते, मेरा यह विचार नहीं है, तो यह किसने कहा? विचारों को मिलाना पड़ता है। आपका विचार मेरे से मिला तो मेरा ठीक रिश्ता रहेगा। 'मैं यह नहीं मानती हूँ, आप गलत कहते हो...' इस प्रकार मैं नहीं कहूंगी। एक-दो के साथ संबंध में इतनी सभ्यता हो। अगर मुझे पुरुषोत्तम बनना है तो मुझे रीस नहीं करनी है, गुप्त रेस ज़रूर करनी है। बाबा की याद में दौड़ी लगानी है, ऐसी

दौड़ी लगायें जो पुरुषार्थ करके थक न जायें। कोई दौड़ी लगाते थक जाते हैं, कोई विजयी बन जाते हैं। पुरुषार्थ में अगर हम दौड़ी लगायें तो शान है। दौड़ी वही लगा सकेगा जो कभी थकता नहीं है। बहुत बहन-भाई थक जाते हैं। बहुतों के साथ काम करना पड़ता है, तो थकावट हो जाती है। अपने से पूछना है, हू एम आई? दिन-रात अपने आपसे पूछो, मैं कौन हूँ? यह कौन है, बुद्धि को व्यर्थ घुमाने की ज़रूरत नहीं है। सब बहन-भाई हैं, ड्रामा में हर एक का पार्ट नूंधा हुआ है। हर एक अपने अनुसार अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हैं। मुझे शुभ भावना रखनी है।

प्रश्नः-141- संगमयुग में हमारी ज़िम्मेवारी और फर्ज क्या है?

उत्तरः-141- सभी जवाबदारी बाबा को दे दो। मेरा वह ज़िम्मेवार है। कभी यह ख्याल नहीं आ सकता है कि मुझे कौन सम्भालेगा! चिंता वा फिकर की कोई बात नहीं है। हर प्रकार से बाबा मेरा ज़िम्मेवार है। मेरी ज़िम्मेवारी क्या है? न हम किसका फिकर करें, न मेरी कोई फिकर करे। फिर मेरा फर्ज़ क्या कहता है? मेरा फर्ज कहता है, मेरे बाबा का यज्ञ है, मेरे बाबा के सब बच्चे हैं, शिवबाबा कल्याणकारी है, बच्चे विश्व कल्याणकारी हैं। विश्व गोला है, मैं उस पर खड़ी हूँ। जब ऐसी मेरी दृष्टि-वृत्ति होगी, तो दृष्टिकोण भी ऐसा होगा। सारी बात है मनोवृत्ति की। वृत्ति हमारी शुद्ध, श्रेष्ठ और दृढ़ संकल्प वाली हो तो भावुकता की बातें हमारे चेहरे पर नहीं आयेंगी। पुरानी बात चेहरे पर आ गई, मैंने कुछ देख लिया, बोल दिया तो सम्बन्ध बिगड़ गया। हमारा सम्बन्ध विश्व कल्याणकारी का है। फिर बातचीत में सदा ही सम्मान होगा। किसको सम्मान न देकर मुझे अपना रिकार्ड खराब नहीं करना है। यह सम्मान नहीं देता है, मैं क्यों दूं... यह ख्याल भी नहीं आयेगा। मुझे सम्मान देने का रिकार्ड अच्छा रखना है। रिकार्ड खराब हुआ तो जो कमाई की वह खलास हो गई। भले कितनी भी कमाई की, कितना भी पुरुषार्थ किया, एक बार रिकार्ड खराब हुआ तो कमाई खत्म।

प्रश्न:-142- मनसा सेवा स्वत: होती रहे इसकी विधि क्या है?

उत्तर:-142- निमित्त भाव से, सच्चाई से, प्रेम से, नम्रता के भाव से ऐसी चलन चलो जो नेचरल नेचर बाप समान बन जाए और किसी को भी न देखो। हमारे अन्दर घड़ी-घड़ी आता है, बाबा को देखो, बाबा से सुनो, तो हम अपने दिल में, मनसा में यह बात पक्की कर लेवें, मनसा हमारी सच्ची है तो सेवा स्वत: करेगी। आत्मा में जो मन-बुद्धि पहले थे, अब बदल गये। पहले आत्मा कर्मबन्धनी थी, अभी आत्मा बंधनमुक्त बनी है। मन-बुद्धि आत्मा को इशारा करते हैं, तुम पहले वाली नहीं हो, बाबा की हो, तुम्हें कर्मातीत बनना है। तुम्हें बाबा के साथ-साथ जाना है फिर सतयुग आदि में आना है। यह अपने को समझाकर रखें तो विजय हुई पड़ी है। फिर मीठा बनने के लिए सदा मीठा बोलो, मुसकराते हुए बोलो। सच्चा सही पुरुषार्थ नहीं होता है तो मुसकराना मुश्किल हो जाता है। उदासी अन्दर होगी तो चेहरे पर आयेगी। बाबा ने कहा है कि जो उदास होगा वह दास-दासी बनेगा। बाबा की ऐसी मीठी-मीठी बातें अन्दर गूंजती रहें। मेरे बहन-भाई मुरली को प्यार करो, बाबा की बातें प्यार से सुनो, जीवन में लाओ, सदा मुसकराओ, तो कोई बात मुश्किल नहीं है। छोटा-सी बात को बड़ा, राई को पहाड़ नहीं बनाओ। लम्बी-लम्बी बातें नहीं करो। कोई बात बड़ी भी है तो उसे छोटा कर देना समझदार का काम है।

प्रश्न:-143- राजयोग का अच्छा अभ्यास कब होता है?

उत्तर:-143- बाबा का बनने से सच्चाई के आधार से दिल अगर साफ है तो योग अच्छा लगता है। और कोई बात अगर दिल में है या किसी ने मेरी निंदा की, मेरा चिंतन चला तो योग नहीं लगेगा। जो बात अपने को पसंद नहीं आयी हो या कुछ भी हो तो दिल में वही बात याद आती रहेगी। तो सच्ची दिल से, दिलाराम बाप की याद से, साहेब को राज़ी कर सकते हैं। और कोई की याद वा कोई बात सब पराई हैं। पराई चीज़ को, मोह वश, लोभ वश अपना समझना पाप है। बाबा ऐसे पाप करने से छुड़ा रहे हैं। पहले चाहिए-चाहिए

करते थे। अभी बिगर मांगे सब कुछ भगवान दे रहे हैं। आज्ञाकारी बच्चे को बहुत अच्छी आशीर्वाद का अनुभव होता है। बाबा का यह फरमान है, यह नहीं करना है, जी बाबा। ऐसे ईमानदार, फरमानबरदार बच्चों को बाबा की बहुत आशीष मिलती है, परन्तु अगर जरा भी इसमें कमी है तो योगी नहीं है।

प्रश्न:-144- कौन-सा नशा हो तो माया कुछ नहीं कर सकती?

उत्तर:-144- यही धुन लगी हुई हो कि मैं गुलाम न बनूँ, माया के दबाव में न आ जाऊं। इसके लिए किसी हठयोग की जरूरत नहीं है। कोई माला-मंत्र लेके बैठने की दरकार नहीं है। लेकिन जैसे महारथी जब हाथी पर बैठता है तो कितना शानदार लगता है परन्तु हाथी के कान में चींटी चली गयी तो बिचारा बेहोश हो जाता है। तो माया की, दुनिया की चटपटी, खटपटी बातें सुनीं तो कहेंगे, अरे, यह महारथी और इसको क्या हो गया! कोई न कोई बात ऐसी आयी तो ऐसे हो गया इसलिए अब यह ध्यान रखो कि मैं कौन हूँ? मैं किसका हूँ? मैं परमात्मा की हूँ, तो ध्यान परमात्मा में ही लगे। भले और कुछ भी काम करो पर ध्यान परमात्मा में हो। बाबा यही राजयोग हमको सिखा रहे हैं। तो महारथी हूँ, यही मेरी राजाई, मेरी शान है। यही स्वमान, यही नशा हो तो माया कुछ नहीं कर सकेगी।

अगर सिर्फ ज्ञान सुना और सुनाया, स्वदर्शन चक्र फिराने का ध्यान ही नहीं है। अमृतवेले बाबा परिक्रमा दे रहे हैं, मैं मिस क्यों करूँ। ज्ञान-योग की शक्ति कमल फूल समान न्यारा बनाती है। मेरे दो पांव हैं। जब दोनों चलेंगे तब आगे दौड़ते जायेंगे। पहले चलना सीखे, फिर दौड़ना सीखे, अभी उड़ना सीखे हैं।

प्रश्न:-145- पास विद् ऑनर में आना है तो किन बातों पर ध्यान दें?

उत्तर:-145- सिर्फ अपना समय और संकल्प सफल करें। समय कहता है, जो करना है अभी कर ले। कभी कल नहीं कहना। कल करेंगे या शाम को करेंगे, वह भी नहीं। जो करना है अब कर ले। क्या कर ले? जैसे पत्नी, पति

के साथ डोर बांधती है, ऐसे हमने भी बाबा के संग डोर बांधी है। हमको बाबा ने सम्भाला है। हमको कभी शक नहीं हुआ है कि कौन सम्भालेगा। अन्तकाल तक बाबा सम्भालेंगे। अन्तकाल ज्ञान अमृत मुख में हो, सभा के बीच में बैठे, बाबा-बाबा सुनते-सुनाते आत्मा शरीर छोड़े। इसके लिए तैयारी पहले करनी है, एवररेडी रहना है। पास विद् ऑनर में आना है तो लिस्ट निकालो, चारों सबजेक्ट्स में पूरा ध्यान हो। सिर्फ ज्ञान नहीं, ज्ञान कहता, तेरा योग कहाँ है? योग कहता है, तुम्हारी धारणा कहाँ है? बहुत काल से बाबा के सिवाए कोई याद न आये। याद आने के कई कारण होते हैं जैसे मेरे को कौन सम्भालेगा! अगर यह बात याद रही तो बाबा याद नहीं है।

पास विद् ऑनर में आना हो तो सोचो नहीं। माइन्ड सेट हो, बुद्धि स्थिर रहे, अडोल-अचल स्थिति रहे, बाकी सोच में टाइम नहीं गंवाओ। कोई भी हलचल में आना शान नहीं है। पास विद् ऑनर में आने वाला कभी हलचल में नहीं आयेगा। भले कुछ भी हो जाए, हमें ऐसे रहना है। कौन हूँ, किसका हूँ... हनुमान जैसा, अंगद जैसा हूँ। अंगद ज़रा भी हिला नहीं। हनुमान ने कहा, मेरा दिल खोलकर देखो, कौन मेरे दिल में बैठा है। ब्रह्मा बाबा के मुख से कभी "मैं" नहीं निकला। पास विद् आनर में आना हो तो न मैं, न मेरा। जैसा मेरा बाबा है, ऐसी अपनी स्थिति बनानी है।

प्रश्न:-146- मायाजीत बनने का क्या पुरुषार्थ है?

उत्तर:-146- माया कितने प्रकार से कहाँ-कहाँ से छिप करके आती है, कभी तो पता भी नहीं चलता है। संकल्प, स्वप्न में भी माया न आए, तो मायाजीते जगतजीत बनें, तब जगत की सेवा कर सकें। तीसरी आंख खुली हुई हो। स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। सेवा भी करते रहो, विकर्म भी विनाश होते रहें, हल्के भी होते जाओ। सिर भारी तो नहीं होता है? भारीपन कभी न आए इसलिए खुराक अच्छी हो, एक्सरसाइज़ अच्छी करें। बाबा जो खिलाते हैं, चबाकर खाओ, अच्छी तरह मंथन कर हज़म करो। कभी मुरली मिस नहीं

करना। हमें मुरली सुनते-सुनाते अपनी जीवन-यात्रा पूरी करनी है। संगमयुग का जितना समय है, शान्तिधाम जाने की यात्रा पर हैं, यात्रा पर बहुत खबरदार रहते हैं। जाना है तो कर्मातीत बनना है, फिर सतयुग में आने के लिए सम्पूर्ण बनना है। कोई हिसाब-किताब कहाँ न हो।

प्रश्न:-147- नुमाशाम के योग का क्या महत्व है?

उत्तर:-147- एक बार बाबा ने सन्देश भेजा था, अपनी स्थिति निर्विघ्न रहे, सेवा भी निर्विघ्न रहे और जो हमारे साथ रहते हैं वे भी निर्विघ्न स्थिति में रहें, इसके लिए शाम को 7 से 7.30 बजे तक योग जरूर करो। इसका बहुत फल मिलता है, बल मिलता है। फल यह है जो निर्विघ्न स्थिति रहती है। विघ्न आयेंगे पर याद की यात्रा से पार हो जायेंगे। नुमाशाम का समय साइलेन्स में रहने का है।

प्रश्न:-148- तीव्र पुरुषार्थी की सेवा क्या है?

उत्तर:-148- तीव्र पुरुषार्थी कभी किसको धक्का देके आगे नहीं जाता, सभी इकट्ठे चलें। बाबा एक हैं, चलो बाबा के साथ। सेवा के जितने भी डायरेक्शन मिले हैं, बाबा के डायरेक्शन अनुसार सेवा की है, साथ-साथ सेवा करते-करते स्वयं की सेवा, पहले आप। पहले आप, कोई बेचारा तन-मन से ठीक न हो, फट से उसको ठीक कर देना, यह भी सेवा है। आप समान बनाने की सेवा, सहयोगी बनाने की सेवा, बहुत सेवायें हैं। सेवा में मैं भी खुश रहूं और सभी खुश रहें। मेरे कारण किसी की नींद फिटी तो वह भी घाटा हो जायेगा।

प्रश्न:-149- बाबा की स्वत: याद बनी रहे, यह कब होगा?

उत्तर:-149- बाबा की एक भी अच्छी बात जीवन में लाते हैं तो बाबा की याद बनी रहती है। बाबा की बात या चरित्र सामने आते हैं तो वह जीवन में साथ देते हैं। शरीर को भी कुछ होता है तो हमको उसके लिए बहुत सोचना नहीं है, जो शरीर को ज़रूरी है वह डाक्टर जाने, मुझे चिंतन नहीं करना है। ड्रामा में यह भी अच्छा पार्ट है, जो कोई चिंतन, कोई फिकर नहीं है। सदा आदि से ध्यान रहता

है कि मेरा अन्तकाल अच्छा हो। बाबा की याद क्या है? बाबा के बोल, बाबा के चरित्र और जो बाबा ने पर्सनल मेरे को कहा है, उसे याद करो तो योग लग जायेगा। एक बार मैंने कहा, बाबा, आप जानीजाननहार हो। बाबा ने कहा, बच्ची, यह भी भक्ति मार्ग है। मैंने कहा, बाबा, आप मेरे से ठगी नहीं करो। तो हमारा विश्वास ऐसा हो जो अभिमान खत्म हो जाए। कइयों में सूक्ष्म अभिमान है, जो अच्छा नहीं है, अब अन्दर जाकर अपनी जांच करके अभिमान से मुक्त हो जाओ।

प्रश्न:-150- साकार बाबा के दिये कुछ वरदान सुनाइये।

उत्तर:-150- एक बार कराची में बाबा सीढ़ी पर बैठा था, बाबा ने कहा, बच्ची, पांव सामने करो, हम 5-6 बहनें थीं, सबने पांव सामने किया तो बाबा ने कहा, देखना बच्ची, तुम्हारे ये पांव पूजे जायेंगे। कदम-कदम में कमाई होगी। उस समय तो सेवायें कुछ भी नहीं थीं लेकिन ये बाबा के शब्द कभी भूले नहीं हैं। बाबा ने कहा है, बच्चे, बहुत वृद्धि होगी, गली-गली में सेन्टर होंगे, उस समय तो कुछ भी नहीं था। ऐसे कितने शब्द बोले हैं, जो साकार हुए हैं।

बाबा ने एक बार बहुत अच्छी मुरली चलाई। फिर पूछा, बच्ची, कुछ कहना है। पहले मैं बाबा से बहुत कुछ पूछना चाहती थी। मुरली सुनने के बाद मैंने कहा, बाबा, आपने तो मेरा गला ही बंद कर दिया, फिर पूछते हो, बच्ची, कुछ पूछना है। तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारे सामने भी जो आयेगा उसका गला बन्द हो जायेगा। शुरू से मुझे था, और कोई मुझे पसन्द करे या न करे, भगवान मुझे पसन्द करेंगे। भगवान का एक-एक महावाक्य इतना सत्य है, सिर्फ सोचो नहीं, याद करो तो सत्य मार्ग पर चलना शुरू हो जायेगा।

प्रश्न:-151- किसी स्थान पर भूत होने का अंदेशा हो तो क्या करें?

उत्तर:-151- कई स्थानों पर भूत वार करते हैं, कहते हैं, यहाँ भूत हैं। मैं कभी भूतों से डरती नहीं थी। शुरू में एक स्थान पर भूतों का वास था, मुझे कहा, वहाँ नहीं जाना। मैं डरी नहीं, वहाँ ही रही तो वहाँ से भूत भाग गया। वहाँ

का वायुमण्डल पावरफुल हो गया इसलिए मैं कहती हूँ, जहाँ भी रहने जाते हो वहाँ पहले शक्तिशाली योग करो। पता नहीं वहाँ पहले कौन-कौन रहे हैं! इसलिए शक्तिशाली योग लगाओ। कई लोग योग नहीं लगाते हैं तो भूत परेशान करते हैं।

प्रश्न. :-152- दीदी मनमोहिनी जी की क्या-क्या विशेषतायें थीं?

उत्तर:-152- मुझे दीदी ने शिव शक्ति का बैज पहनाया था। तो याद रहता है कि मैं शिव की शक्ति हूँ। हमारे पास बैज के सिवाय और कुछ नहीं है, हमारी पहरवाइश भी सेवा करती है। दीदी ने सिखाया कि हर बात में निमित्त होके कैसे संभालना है। अलर्ट रहना सबसे ज़रूरी है। कभी पढ़ाई में, योग में, सेवा में सुस्ती न आये। दीदी सदा पढ़ाई में रेग्युलर और पंक्चुअल रही। कभी क्लास में देरी से नहीं आई। कर्मातीत बनने वाली आत्मा को ध्यान है निद्राजीत बनने का।

दीदी ने सिखाया कि हमारा सदा सभी के साथ बहुत प्यार हो। सदा सीखने की और सच्चा होके रहने की भावना हो। मैं जो कहूँ सो होवे, नहीं, जो बाबा ने कहा है वही हो, यही भावना हो। मुख्य बात है एक-दो के लिए सम्मान और प्यार का संस्कार, उससे सुखी हैं। दीदी सदा कहती थी, याद में रहना मेरा काम है। मेरी स्मृति में एक बाबा रहे, सेवा पीछे है। याद में रहने से यात्रा पर हूँ, यात्रा के जो नियम हैं, उन्हें एक्यूरेट पालन करना है। याद की यात्रा में सामने लक्ष्य पर आपेही सब पहुँचेंगे, किसी को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।

दीदी सदा कहती, कभी भी मूड खराब नहीं करना। उदास होना या किसी से ईर्ष्या रखना यह बहुत बुरी बला है। अपने को इसमें इतना संभाल कर रखो जिससे बाबा के गीत गाते-गाते गायन योग्य, सिमरण योग्य, पूजन योग्य बन जाओ। दीदी रोज़ अमृतवेले चार बजे योग में हाज़िर हो जाती थी। खुद ही योग कराती थी। कितनी भी बातें हों, कभी कोई बात दीदी के मुख पर नहीं आई होगी। जो बाबा-मम्मा ने सिखाया, दीदी ने प्रैक्टिकल करके दिखाया। बाबा

को याद करना सीखना हो तो उन्हें सामने रखो। उनकी सूरत को देखो।

दीदी ने इशारे करके मीठा बनना सिखाया। मधुबन के बहुत से भाई-बहनों ने दीदी की पालना ली है। दीदी ने सबको मज़बूत बनाया है। विशेषता सबमें हैं, दादी की विशेषता अपनी, दीदी की अपनी लेकिन सर्वगुण सम्पन्न सबको बनना है। अब नही बनेंगे तो कब बनेंगे। बाबा के कदम पर चलना, यह दीदी ने सिखाया है। श्रीमत सरमाथे पर हो, दीदी ने बहुत ध्यान दिलाया, कभी मनमत पर चलने नहीं दिया। पढ़ाई पर ध्यान पूरा दिया, प्रश्न ऐसे निकालती थी जो सबको फेल कर देती थी।

बाबा के साथ अटूट प्यार था। बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी ऐसी दृष्टि देती थी, जो सबको बाबा की भासना आती थी। विदेशी भाई-बहनों ने भी दीदी की दृष्टि से बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव किये हैं। दीदी ने बोला कम होगा, दृष्टि से बहुत भासना दी, अनुभव कराये। शाम को ठीक समय पर योग में आती थी, ऐसे लगता था, आफिस से बाबा को साथ लेकर योग में आ रही है। पुरुषार्थ का मज़ा लेना दीदी से सीखा। उनके पुरुषार्थ में कभी थकावट नहीं देखी। पुरुषार्थ है ही बाबा को याद करने का। दीदी के साथ की ये बातें याद आती हैं, जो वर्तमान में बहुत मदद करती हैं। और बातें पास्ट इज़ पास्ट कर दो, ये बातें पास्ट नहीं की जा सकतीं। बीती को चितओ नहीं, आगे की रखो न आश, ऐसा सहजयोगी, एक्यूरेट योगी बनना, यह दीदी से सीखा है। अच्छी-अच्छी बातें दीदी से सदा की हैं, और कोई बात आपस में कभी नहीं की। योग क्या है, ज्ञान की गहराई क्या है, सदा यही रूहरिहान होती थी। यह बड़ों से सीखा है।

जब बाबा अव्यक्त हुए, दीदी-दादी ने मुझे बुलाया, कहा, अभी तुम्हें पूना छोड़कर यहाँ रहना पड़ेगा। बाबा ने डायरेक्शन दिया है, दादी मुरली सुनायेगी, क्लास तुम्हें कराना है। दीदी मुझे बुलाकर बताती थी, यह बात और स्पष्ट करना। सेवा में सदा उमंग-उत्साह में रहना, बाबा की उम्मीदों को पूरा करना,

यह दीदी ने कूट-कूट कर पक्का कराया। दीदी का प्रिय गीत था, अब घर जाना है....। यह नहीं कहती थी, तैयारी करनी है, सदैव तैयार रहती थी। घर में रहना माना बाबा के साथ रहना। अन्त में सारा दिन यही धुन लगा दी। अभी हमको भी यह धुन है, अब घर जाना है लेकिन बाबा को प्रत्यक्ष करके जाना है। वारिस बनाना दीदी से सीखा। पूरा स्वाहा करा देती थी। **जो यज्ञ के लिए मिला वह सीधा यज्ञ में जाये, यह संस्कार दीदी ने डाल दिये। एक पापड़ भी अपने लिए नहीं रखा। जो यज्ञ के लिए करे वह यज्ञ में सफल हो। जो करे वह गुप्त करे।**

दीदी की विशेषताओं की बहुत बड़ी माला है, कभी एक पेनी भी व्यर्थ नहीं जाने दी। सफल करने वाले को एक का पद्मगुणा बाबा देगा। गरीब का एक रुपया, साहूकार का एक हजार.. इसके भी हमारे पास मिसाल हैं। दीदी का नाम गोपी था, गोपी का पार्ट पहले दीदी ने ही बजाया। कितने बंधनों को काटकर बाबा के पास आ गई। फिर सादा रहना सिखाया, लट्ठे का कपड़ा पहनाया। बाबा दीदी को भण्डारे में भेजता था, देखो, भोजन बनाते वा खाते कोई आपस में बातें तो नहीं करते हैं। दीदी ऐसे आती थी जैसे कोई सी.आई.डी. आफिसर आये। सब सावधान हो जाते थे। ऐसी थी हमारी मीठी दीदी। हमको देखकर भी कोई सावधान, खबरदार हो जाये। सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ कैसे हों, वह दीदी से सीखा है। दीदी सदा एकव्रता होकर रही इसलिए दीदी में प्योरिटी की पर्सनैलिटी झलकती थी। इतनी हमारी पर्सनैलिटी में प्योरिटी हो, तो व्यर्थ ख्याल आ नहीं सकता। इतनी ईमानदारी हो, नि:स्वार्थ भाव हो। मान-मर्तबे की भूख न हो।

निराकारी स्थिति में रहकर, आकारी सूक्ष्मवतनवासी का अनुभव करते, साकार सृष्टि में सेवा अर्थ पार्ट बजा रहे हैं, इसमें दीदी बहुत एक्यूरेट रही है। बाबा की शिक्षायें प्रैक्टिकल धारण करने में दीदी ने साथ दिया है। बाबा ने, मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद, दीदी को सेवा

की जवाबदारी दी, दीदी को मधुबन में बिठा लिया। दीदी ने, सब कायदे अनुसार चलें, इस पर सबका ध्यान खिंचवाया है।

जैसे दीदी-दादी ने दिन-रात सेवायें की हैं, हम भी सेवा द्वारा सुख देके सन्तुष्ट करें, सदा खुश रहें, कैसी भी बात आवे पर निराशा न आये, उमंग न चला जाये, उम्मीद से नाउम्मीद न बन जायें, अच्छे पुरुषार्थियों को देख ईर्ष्या का अंश न आये, द्वेष भाव न हो, थकान न हो। दीदी ने प्रैक्टिकल में इन सब शिक्षाओं का स्वरूप बनकर दिखाया और स्वरूप से सबको सिखाया।

हमारे सर्व संबंध एक बाबा से जुड़ाने के निमित्त हमारी मीठी दीदी रही है। बाबा के साथ दीदी का सखा संबंध रहा है। हमेशा कहती थी, तुम बाबा को सखा बनाकर याद करो ना, ऐसे सूखी याद नहीं करो। उसे साजन समझकर याद करो। श्रीमत सदा सिरमाथे पर रहे, मनमत चल नहीं सकती, तभी बाबा ने यहाँ बैठने लायक बनाया है।

एक बार बाबा ने कहा था, बच्ची, बाबा कहे, कुएं में कूद जाओ, तो कूदेंगी! दीदी ने उसी समय कहा, हाँ बाबा। तो बाबा ने कहा, बच्ची, बाप ऐसे कभी कह सकता है क्या? इसमें भी पहचान चाहिए। दीदी ने हर कदम श्रीमत पर उठाया। विश्व सेवा के लिए दीदी ने निमित्त बनाया।

प्रश्न:-153- निराकारी स्थिति में रहना है तो क्या करें?

उत्तर:-153- इसके लिए निरन्तर आत्म-अभिमानी स्थिति में रहने का अभ्यास चाहिए। अन्दर देह-अभिमान का अंश भी न रहे, यह चेक करके अपने आपको साफ-शुद्ध बनाना है, तब निराकारी स्थिति से निरहंकारी स्वत: बन जाते हैं। निराकारी स्थिति से आत्मा को इतनी शक्ति मिलती है, जो आत्मा शुद्ध-शान्त हो जाती है। यह निराकारी आकर्षण उसको न्यारा और प्रभु का प्यारा बना देता है।

साकार बाबा ने अव्यक्त होने के पहले हम बच्चों को यही मन्त्र सुनाया कि

निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति में रहना है। निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सो। जो निंदा करने वाला है वह यह नहीं समझता है कि मैं कोई इसका शत्रु हूँ। वह समझता है, मेरा काम है सबको सावधान करना। तो हम भी अन्दर से यही समझें कि वह मेरा मित्र है, जो मेरा ध्यान खिंचवाया। अपमान की फीलिंग न आये, सदा अपने स्वमान में रहें। निराकारी स्थिति में रहने के लिए निरहंकारी और निर्विकारी बनना है, सूक्ष्म में भी कोई विकार न हो। विकारों को लाने वाला है अभिमान। काम महाशत्रु तो है लेकिन साक्षी होकर देखो तो अहंकार पहले है। टोटल इन पांचों की आपस में बड़ी एकता है। सभी विकार इकट्ठे हैं। थोड़ा भी कोई विकार है तो देह-अभिमान उसका साथी बन हमको अपनी ओर खींचता है। पुरानी दुनिया पाप की दुनिया है। जैसे बाप दु:ख हर्ता सुख दाता हैं... शान्ति के सागर, प्रेम के सागर हैं, अपना बच्चा बनाकर सुखी बना देते हैं, ऐसे बन जाओ। बाबा हमें मीठे-मीठे बच्चे कहकर यादप्यार देते हैं, कभी खट्टे-मीठे बच्चे कहकर यादप्यार नहीं देते। तो हम भी इतने मीठे बन जाएं।

प्रश्न:-154- बाबा किसका नाम बाला करते हैं?

उत्तर:-154- हम सदा सन्तुष्ट रहें, सब मेरे से सन्तुष्ट रहें, यह बहुत बड़ी बात बाबा ने ध्यान पर खिंचवाई है। हम जितने बड़े परिवार के बीच में हैं उतना अपने पास एक-दो के प्रति मित्रता भाव तथा शुभ भावना, शुभ कामना ऐसी हो जो कोई भी बात न मुझे डिस्टर्ब करे, न मैं किसको डिस्टर्ब करूं। जो कभी डिस्टर्ब नहीं होता है और दूसरों को डिस्टर्ब नहीं करता है, बाबा उसका नाम बाला कर देता है। बाबा की जो आश है, उम्मीदें हैं, वही उन्हें पूरी कर सकता है, जिसके दिल में और कोई बात नहीं है। बाबा ने ध्यान खिंचवाया है , निराकारी स्थिति में भी रहो और साथ-साथ ब्रह्मा बाप को भी फालो कर फरिश्ता रूप की स्थिति में रहो। बाबा ने बहुत सहज करके दिया, 24 घण्टे में, 24 बार यह अभ्यास करो।

प्रश्न:-155- ज्ञान सागर की गहराई में जाने का अनुभव सुनाइये।

उत्तर:-155- ज्ञान सागर बाबा ने ज्ञान दिया, हमने ज्ञान सागर में डुबकी लगाई और पावन बन गये, फिर रत्नों से खेलने लगे। नदी में नहाना सहज है, सागर में नहाने के लिए अक्ल भी चाहिए तो ताकत भी चाहिए। बाबा ज्ञान के, प्रेम के, आनंद के, पवित्रता के सागर... हैं, उसमें डुबकियाँ लगाते चेहरा चमकने लगता है। सागर में नहाने वाले कपड़े उतार देते हैं, यह कपड़ा नहीं, शरीर रूपी कपड़ा उतार अशरीरी बन सागर की गहराई में चले जाओ फिर रत्न लेकर आओ, कौड़ियों में खुश नहीं हो जाना। पहले कौड़ियों की भी कीमत थी। कौड़ियां बनावटी नहीं होती हैं। पैसा खोटा हो सकता है, कौड़ी नेचुरल होती है। कौड़ी से अभी हम हीरे जैसा बन रहे हैं। सागर में गहरे जाओ तो रत्न मिलते हैं। रत्नों से कौन खेलेंगे? जिनको भविष्य का नशा है। अभी हम बेगर हैं भविष्य में प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने वाले हैं। एक बेगर होते हैं मांगने वाले, हम वह बेगर नहीं। बेगर माना बेफिकर रहने वाले। जो बेफिकर रहते हैं, वह दाल-रोटी खाते परमात्मा के गुण गाते हैं।

प्रश्न:-156- बाबा के समीप आने के लिए क्या करें?

उत्तर:-156- इसके लिए पवित्रता, शान्ति, प्रेम, ज्ञान, आनंद, शक्ति मेरे पास हो। ये सब भगवान ने वर्से में दिए हैं। वर्से में उसको मिलता है जो अच्छा पुरुषार्थ करता है। सुख-शान्ति की सम्पत्ति से सदा सम्पन्न होकर, बाबा के समान बनने की लगन में रहने से निराकारी और फरिश्ता स्थिति नेचुरल वरदान में मिल जायेगी, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जो सच्चे बच्चे हैं उनको वर्सा भी मिला, वरदान भी मिला, सकाश भी मिली, करेन्ट भी मिली।

प्रश्न:-157- आपको स्टेबल माइन्ड का टाइटल कैसे मिला?

उत्तर:-157- यह भी कमाल है मेरे बाबा की, सिखाया बाबा ने है पर साइन्स वालों ने बता दिया कि बाबा ने क्या सिखाया है। हर एक देखे कि मैंने लाइफ में औरों को कितना टाइम देखा है! अपने को और बाबा को कितना टाइम

देखा है? सच्चा-सच्चा चार्ट हर एक अपना देखे। कई बाबा के बच्चों ने औरों को देखने में बहुत टाइम गंवाया है, खुद को और बाबा को देखने में टाइम नहीं दिया है। यह है गफलत। हमारे जो ईश्वरीय कानून हैं, उनकी लिस्ट हर एक के दिल में, मन में होगी। हमने मन को कभी लूज़ नहीं छोड़ा है, जो कभी अपनी मत चलावे। ईश्वरीय कानून को बुद्धि में, दिल में बहुत प्यार से सम्भालके रखा है जिस कारण मन, कर्मेन्द्रियों के वश हो नहीं सकता। जो मनमनाभव शब्द है उसके महत्त्व को बचपन से लेकर पक्का समझा है। गीता में भी भगवान थोड़ा ज्ञान सुनाकर गहराई में ले जायेंगे, फिर कहेंगे, मनमनाभव। ज्ञान धीरे-धीरे स्पष्ट होता रहा है पर बाबा ने मुरली चलाते बार-बार कहा होगा, मनमनाभव। यही महान मन्त्र है। मन जो मेरा है, वह आर्डर में तो रहे ना! नहीं तो अहंकार अन्दर से खत्म नहीं होता है। साकार बाबा के जो अन्तिम महावाक्य हैं निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, इनको अच्छी तरह से बार-बार रिवाइज़ करें। अगर रिवाइज़ नहीं किया, रियलाइज़ नहीं किया तो इगोलेस (निरहंकारी) स्थिति आ नहीं सकती। निराकारी स्थिति में रहकर, आकारी सूक्ष्मवतनवासी का अनुभव करते, साकार सृष्टि में सेवा अर्थ पार्ट बजा रहे हैं।

प्रश्नः-158- अन्तर्मुखता के क्या-क्या फायदे हैं?

उत्तरः-158- अन्तर्मुखी न होने के कारण बाबा जैसा मुख नहीं बनता, न बनेगा। अन्तर्मुखी माना अन्दर बाबा की स्मृति है। अन्तर्मुखता की गहराई में गई हुई आत्मा समझेगी, बाहरमुखता में नीचे आकर कुछ भी सोचना या बोलना, यह मेरी शान नहीं है। किसी के कारण मैं बाहरमुखता में न आऊं, मैं अन्तर्मुखी होकर अन्दर ही अन्दर उसको भी बाहरमुखता से फ्री करके अन्तर्मुखी बनाने की भावना रखूं। शब्दों में न आकर अपने स्वमान में रहूं और सबके साथ सम्मान से बात करूं। तो अन्तर्मुखता से प्रैक्टिकल लाइफ में यह चीज़ें साथ देती हैं।

प्रश्न:-159- की हुई कमाई चट कब हो जाती है?

उत्तर:-159- बाबा ने हमारे में बहुत उम्मीदें रखी हैं। हम बाबा की उम्मीदों के सितारे हैं। एक-एक में बाबा ने उम्मीद रखी है। हर एक की अपनी-अपनी विशेषता है, सबमें एक जैसी विशेषता नहीं हो सकती। ऐसे नहीं सोच सकते कि जो इसमें है वह दूसरे में भी आ जाए। बाबा ने किसी में कोई छोटी विशेषता देखी, उसे सेवा में लगा दिया। सेवा में लगने से उसे पता चला कि मैं भी यज्ञ की कोई सेवा कर सकती हूँ। विशेषता का कभी अभिमान आया कि मेरी विशेषता विशेष है तो कमाई चट। बड़ा खिसकने वाला मार्ग है, जल्दी बुद्धि रूपी पांव खिसक जाता है। हम भी अपनी और सबकी विशेषता देखें। यह भी विचार न आये कि यह ऐसे क्यों करता! यह अच्छा क्यों नहीं बनता। अरे धीरज धर। बाबा ने बहुत धीरज रखा है। बाबा ने हम सबमें बहुत उम्मीदें रखी हैं लेकिन हिम्मत बच्चे की, मदद बाप की, इस बात को कभी नहीं छोड़ा है। मन को कभी चिन्ता में उलझने नहीं दिया। जैसे बाबा करेंगे, जैसे ड्रामा करेगा.. तू शान्त रह। बीती को बीती करना यह रायॅल्टी है रॉयल बाप के बच्चों की, जो हुआ ठीक है। ऐसे नहीं कह सकते कि यह तुमको नहीं करना चाहिए।

प्रश्न:-160- मनन, चिन्तन, मंथन, सिमरण में क्या फर्क है?

उत्तर:-160- मनन, चिंतन, मंथन, सिमरण में भी फर्क है। ज्ञान पहले मन में बहुत अच्छा लग जाये, तब मनन चलेगा। मन के लिए कहा ही है मनमनाभव। जब बात मन में लग गई तो उसका चिंतन चलता रहेगा। व्यर्थ चिंतन बन्द हो जायेगा, फिर गहराई में जायेंगे तो मंथन होगा। फिर धीरे-धीरे ज्ञान का सिमरण होता रहेगा, फिर बन जायेगी स्मृति। भावना से सेवा करते हैं तो खुशी होती है, इससे शक्ति बढ़ती है। हमारे ऊपर बड़ों ने उम्मीद रखी है कि बाबा का हर कार्य अच्छा हो, तो अच्छा हो ही जाता है। हमारा जीवन बाबा की श्रीमत प्रमाण होना चाहिए। श्रीमत मुरली से मिलती है। मैं सारी दुनिया को कहती हूँ, कल किसने

देखा, जो करना है अब कर लें। विनाश के पहले स्थापना का काम स्वयं भगवान धूमधाम से करा रहे हैं। जो करना है अब करेंगे, उसका कई गुणा फायदा मिलेगा। अब नहीं तो कब नहीं।

प्रश्न:-161- सच्चे और निर्भय कैसे बनें?

उत्तर:-161- एकाग्रता की शक्ति जमा करो। सत्य बातें वही सुना सकेंगे जो निर्भय होंगे। निर्भय वही होंगे जिनसे कोई गलती न हुई हो। गलती हो तो फौरन सच बतावे। ऐसे नहीं, औरों से भी होती है, ऐसा जवाब मुख से निकलता है तो अन्दर में क्या होगा। जो मुख पर आता है वही अन्दर होता है। इसलिए किसी से भी कोई गलती हुई है, कुछ भी हुआ, ड्रामा पूरा हुआ। अभी तो सम्पन्न-सम्पूर्ण बनने की घड़ियां हैं। ईश्वरीय परिवार है ना। बाबा ने हर एक को चुन-चुन करके अपना बनाकर रखा है। भले थोड़ी माया आती है, आखिर उसे कौन खत्म करेगा! महारथी ही करेगा ना।

प्रश्न:-162- आपके तीन बार ओमशान्ति बोलने का क्या अर्थ है?

उत्तर:-162- मैं तो तीन बार ओम् शान्ति करती हूँ। पक्का हो गया है तीन बार। एक मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ। दूसरा मेरा बाबा सर्वशक्तिवान, कहते हैं तू मास्टर सर्वशक्तिवान है। तीसरा ड्रामा कहता है, धीरज रखो। बाबा की दृष्टि सदा सुखकारी है। एक सेकण्ड भी बुद्धि कहीं नहीं जा सकती। लंगड़ा चलने लग पड़ता, अंधा देखने लगता, ऐसी है बाबा की मुरली और दृष्टि। बाबा हमारी माँ और बाप है।

प्रश्न:-163- किस इन्द्रिय की बहुत-बहुत संभाल करनी है?

उत्तर:-163- रूहानियत में अपनी सुरक्षा है। कई प्रकार की सेवायें बाबा कराते हैं पर करने वाला निमित्त भाव में रहता है। वो बाबा-बाबा करता है। बाबा को बच्चों की प्रालब्ध बनानी है क्योंकि बाबा कहता है, मैं राज्य में आऊँगा नहीं। निमित्त बनकर सतोगुणी बनना है, फिर हर बात सहज हो जाती है। हमारे में सच्चाई, धैर्य, नम्रता, मधुरता चाहिए। दिल भी साफ हो, तब मजबूत है। माया

चींटी की तरह भी आती है। माया चींटी महारथी को भी गिरा देती है। हाथी के कान में भी चींटी जाती है तो बेहोश कर देती है। कान में चटपटी, खटपटी बातें आईं, बस। कानों को बड़ा संभालना है।

प्रश्न:-164- दादी जी, आपकी मानसिक, शारीरिक ऊर्जा का राज़ क्या है?

उत्तर:-164- कितने रास्ते हैं शक्ति के? रास्ता साफ होगा तो शक्ति आयेगी। मधुबन से निकल रही थी तो देख रही थी, अगर अपने ऊपर अटेन्शन नहीं होता तो बाबा शक्ति नहीं देते। याद इतनी हो जिससे स्थिति सदा अचल-अडोल हो। परिस्थिति अपना काम करे, स्थिति अपना काम। परिस्थिति आती रहेगी, अनेक दृश्यों के रूप में। कोई आकर्षण, उलझन न हो, सुरक्षित रहना है। कोई भी दृश्य सामने आये, मैं आगे बढ़ती जाऊँ, यात्रा पर हूँ। कहीं नहीं देखना है, पीछे भी नहीं देखना है तो बाबा मदद करते हैं। पीछे देखूँ तो बाबा कहते हैं, यात्रा पर नहीं हूँ। कितना भी माथा मारो, कहीं से भी शक्ति नहीं मिलेगी पर बाबा से मिलेगी। बाबा सबको एक ही दृष्टि से देखते हैं। आँखों में सच्चाई और प्रेम नहीं है तो शक्ति नहीं मिल सकती है।

प्रश्न:-165- हमारा सुन्दर सुरक्षा कवच कौन-सा है?

उत्तर:-165- मीठे बाबा ने हम सबको नम्रता का कवच पहनाया है, यही कवच हमारी सुरक्षा कर रहा है। सभी यह कवच पहनकर रहना, इससे ही ब्राह्मण परिवार में सुरक्षा है, इससे ही सबका स्नेह और सहयोग मिलता है। सबकी विशेषतायें देखते, सबको स्नेह सहयोग देते, सरल स्वभाव रख सबकी दुआयें लेते चलो। दुआयें ही समय पर बहुत साथ देती हैं। कोई भी भूले-चूके भी बद्दुआ न दे। न कभी किसी की टक्कर में आना, न कभी किसी के चक्कर में आना। कोई गाली भी दे, अपमान भी करे तो आप सेन्ट बन जाना। कोई न कोई स्वभाव हर एक में ऐसा है जो खुद को भी परेशान करता है तो दूसरों को भी परेशान कर देता है। कभी किसी स्वभाव वश नहीं होना। भावना वश न तो किसी के पीछे बहना और न किसी से वैरभाव रखना। सबसे समान प्यार रख

सबको सम्मान देते चलो। कभी किसी की कमियां नोट करके अपने मन को भारी नहीं करना। अपने को बहुत-बहुत सम्भालना। कोई की बीती बातों को अन्दर रिवाइज नहीं करना, उन्हें कभी मुख से रिपीट भी नहीं करना। कर्म में आना तो दूर अन्दर में रिवाइज भी न हों, इतना ध्यान देना होगा। प्लीज इन्टरनेट की माया से बचकर रहो। आजकल कई ब्राह्मणों में यह ऐसी माया लगी हुई है जो रात-रात को जागकर भी मायावी चित्र देखते हैं। टाइम वेस्ट, मनी, एनर्जी सब वेस्ट.. फिर अमृतवेला क्या करेंगे! अपने आपको इससे बचाओ। अपने आपको इन्टर (अन्दर) जाकर देखो और स्वयं पर स्वयं कृपा करो।

प्रश्नः-166- पुरुषार्थ में बल कैसे भरें?

उत्तरः-166- समय नजदीक है। समय और स्थिति का ध्यान रखो तो पुरुषार्थ में बल बढ़ेगा। फल खाने से बल मिलता है। पुरुषार्थ से फल मिलता है। फल मिलता है तो बल मिलता है। मेरे को फल मिला पर दूसरों को क्या मिला? मेरे को फल और औरों को बल मिले। संपूर्णता मेरे गले का हार है, बड़ी बात ही नहीं। संपूर्णता अब सबके पीछे खड़ी है, इतना समय नजदीक है। समय के साथ-साथ प्राप्ति को स्पष्ट सामने रखो तो उलझन व आलस्य नहीं आयेगा।

प्रश्नः-167- हमारी आयु भी बढ़े, विकर्म भी विनाश हों – इसके लिए क्या चाहिए?

उत्तरः-167- हमारी आयु भी बढ़े, विकर्म भी विनाश हों – इसके लिए चाहिए योगबल। पहले बाबा, यज्ञ फिर है संगमयुग, निमित्त सेवा भाव से अपना भाग्य बना रहे हैं। भाग्य विधाता, वरदाता सदा मेरे साथ है। एक बार बाबा ने मुझे कहा था, बच्ची गुणदान अच्छा करती है। तो ज़रूर जब गुणों का धन होगा तब तो दान करेंगे। अवगुण देखने से विकर्म हो जाते हैं। पहले वाले विकर्म तो विनाश हुए नहीं हैं, अवगुण देखने से नये विकर्म शुरू हो गये। किसी के अवगुण देखना, सुनना, मुख से बोलना, यह ब्राह्मणों के लिए सूक्ष्म पाप है। सारी विश्व सेवा अमृतवेला और मुरली से शुरू हुई है। सेवा में निमित्त भाव

और नम्रता भाव रहे। निमित्त भाव में अभिमान की फीलिंग नहीं आ सकती। कभी भी कोई अपमान की फीलिंग आई माना अभिमान है। वह देही-अभिमानी नहीं रह सकते। देह के संबंध से थोड़ा भी लगाव है तो विदेही कब बनेंगे! भगवान को कहते हैं चित्तचोर। उसने मेरा चित्त चुरा लिया माना मेरे चित्त में कोई बात न रहे। भले मेरी बुद्धि अच्छी है लेकिन चित्त में कोई पुरानी स्मृति है तो मन-बुद्धि-संस्कार कैसे होंगे! मनमनाभव-मध्याजीभव तो नहीं हो सकते। हमारे शब्दों में इतनी ताकत हो जो किसी का जीवन बन जाए। बाबा के जो वरदान और चरित्र हैं, उनसे हमारा जीवन बना है। किसी ने पूछा, तुम बाबा को कैसे याद करती हो? मैंने कहा, मैं याद नहीं करती हूँ, वह मुझे याद करता है और अपनी याद कराता है। बाबा की इतनी सारी रचना देखकर लगता है, वही सब कुछ कर-करा रहा है। मुझे संकल्प उठाने की भी ज़रूरत नहीं है। सब अपने आप हो रहा है, तो साकार से इतनी अच्छी पालना मिली है, उस पर फिर अव्यक्त की छाप लगी है।

प्रश्न:-168- श्रीमत पर चलने की शक्ति कब आती है?

उत्तर:-168- बाबा कहते, बच्ची, बाप के डायरेक्शन पर चलने वाला भी बहादुर चाहिए। श्रीमत पर चलने के लिए तो सतगुरु से सच्चा योग चाहिए। मम्मा हमेशा कहती थी, बच्ची, शिक्षा कभी खराब नहीं होती। शिक्षा सदा सम्भालकर रखनी चाहिए। मम्मा, मम्मा तभी बनी, जो बाबा ने कहा वह मम्मा ने किया। बाबा के समर्पण से, बाबा के साकार पार्ट से, यज्ञ अभी चल रहा है, यह मेरा दिल अच्छी तरह जानता है।

कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति जानने के लिए बाबा ने बड़ी अच्छी बुद्धि दी है। मुझे अपनी बुद्धि नहीं है। दिव्य दृष्टि दाता, दिव्य बुद्धि दाता मेरे बाबा हैं इसलिए कभी कोई के चक्कर में नहीं आई हूँ, भगवान ने बचाकर रखा है। मैं उसकी कितनी महिमा करूं। मुझे दुनिया में ब्रह्मा बाबा का डायरेक्ट नाम प्रत्यक्ष करना है।

बाबा कहते, बच्ची, सी फादर, फालो फादर। जब यज्ञ में नई-नई आई थी तो एक बार बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारे से कोई कुछ बातें करे, तो तुम उनकी बातों में नहीं आना। बाबा ने इतना बचाया है। बाबा कहते हैं, मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ लेकिन अन्दर हमारे क्या है, वह सब जानते हैं।

मैं किसी की कमी देखेंगी तो किसी को मेरी अच्छाई दिखाई नहीं पड़ेगी, यह भी कर्मों का सूक्ष्म हिसाब-किताब है। किसी की कमी देखी, किसी की अच्छाई देखी तो मेरी दृष्टि कैसी होगी इसलिए हमें तो हर एक की विशेषता देखनी है। कमी वा अच्छाई पर प्रभावित नहीं होना है।

प्रश्नः-169- बुद्धि का ईश्वर प्रति समर्पण किसे कहते हैं?

उत्तरः-169- संगमयुग पर अन्तिम जन्म में बाबा ने हमारी बुद्धि को अपनी तरफ खींच लिया है। हमें अपनी बुद्धि ऐसे महसूस हो कि बाबा ने दी है, मेरी नहीं है। मेरी होगी तो अभिमान वाली होगी। बाबा कहते हैं, मैं बुद्धिवानों का बुद्धि हूँ। आज दिन तक प्रभु की लीला देख रहे हैं, बुद्धिवानों की बुद्धि का कमाल है। बाबा ने किसी भी आत्मा को बुद्धि दी तो उसमें ज़िम्मेवारी उठाने की क्षमता आ गई। सेवाओं की वृद्धि में साक्षी होकर देखो, हमारी बुद्धि कहाँ तक योगयुक्त है? पहले ज्ञान पूरा धारण करते हैं तो योग लगता है। बुद्धि को स्वच्छ, शान्त, श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प वाली बनाना है। अगर मेरा हाथ बाबा के हाथों में है तो सफलता हो जायेगी। कई कहते हैं, हम शुभ भावना तो रखते हैं परन्तु हमारी बुद्धि को खींचने वाला भी तो चाहिए लेकिन तुम देते जाओ तो वह आपे ही खींचेगा। हमें कौन समझा रहा है, कौन सुना रहा है, इसमें अटेन्शन बुद्धि को देना है। सारी बात बुद्धि की है । जब योग नेचुरल है तब राज़युक्त, युक्तियुक्त रह सकेंगे। कई अपनी बुद्धि बहुत चलाते हैं। कहेंगे, इसको ऐसे चलना चाहिए, इसको ऐसे नहीं चलना चाहिए। अरे, तुम माथा क्यों मार रहे हो! क्या बाबा ने तुम्हें ज़िम्मेवारी दी है? हमारी जवाबदारी है, खुद को बदलना। हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। ऐसे नहीं, जग बदलेगा तो हम बदलेंगे।

कई बार बुद्धि निकम्मी बातों में बहुत चलती है, फालतू बातों में, सोच में समय गंवाते हैं। ईश्वरीय संबंध में आकर सबसे प्यार से चलना है। पहले स्व, फिर बेहद सेवा है।

प्रश्न:-170- बुद्धि में स्व-दर्शन चक्र क्यों नहीं चलता रहता?

उत्तर:-170- हम औरों को देखने की बजाय अपने को देखें। औरों को देखने से अपने को देखना भूल जाता है। बाबा की कुछ शर्तें हैं – जब स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे तब परदर्शन से मुक्त होंगे। ज़रा भी परदर्शन होगा तो स्वदर्शन चक्र नहीं चलेगा। स्वदर्शन चक्र, ज्ञान-योग की पराकाष्ठा, कमल फूल समान न्यारा-प्यारा – जिसके पास ये सब अलंकार हैं उसके लिए हर कार्य सहज है। कारण बताकर कार्य को मुश्किल नहीं करते हैं। हमारी और कोई ज़िम्मेवारी नहीं है सिर्फ अपने को सम्भालना है। बाबा-मम्मा यज्ञ के मालिक सदा ही निश्चिंत रहे हैं। प्रैक्टिकल करके दिखाया है। कभी बाबा ने यह नहीं कहा कि यह ऐसा है, यह ऐसा है..। जो मम्मा-बाबा की भाषा है, हम भी वही प्रयोग करें। हम किसके बच्चे हैं, अगर कर्मों से नहीं दिखाते तो माँ-बाप का शो कैसे करेंगे। पालना, पढ़ाई जो मिली है उससे सेवा कर रहे हैं, अपना भाग्य बना रहे हैं। त्याग से भी भाग्य, सेवा से भी भाग्य। जितनी त्यागवृत्ति है उतना भाग्य है। कहीं आँख नहीं डूबती है, यह भाग्य है। संगठन में हाज़िर होना भी भाग्य है।

प्रश्न:-171- दीपावली पर्व के लिए आपका क्या सन्देश है?

उत्तर:-171- दीवाली में दीपकों की जगी हुई माला कितनी सुन्दर लगती है, कितनी खुशी होती है। भले ही हरेक की लाइट में थोड़ा-थोड़ा फर्क होगा। ऐसे हम भी जब एक-दो को देखें तो जो हमारे सामने आये वह लाइट (हल्का) बन जाये। ऐसा कौन-सा संकल्प है जिससे सफाई भी करें और कमाई भी करें? घर में भाई कमाई करते हैं, मातायें सफाई करती हैं। ऐसे ही एक तरफ स्वयं ही स्वयं की सफाई का काम भी करो और दूसरी तरफ कमाई भी करो। यह समय बहुत कमाई का है, पर एक ही समय पर दोनों काम हों, ऐसा कौन-सा

संकल्प है? मुझे करना है... यह संकल्प दृढ़ हो। पुरानी बातों की सफाई भी करनी है, सफाई के बिगर सच्चाई की कमाई की कीमत का पता नहीं पड़ता है। आत्मा के ऊपर अनेक जन्मों का मैल चढ़ा हुआ है। अब परमात्मा ने अपनी समझ दी है कि कोई न कोई तरीके से सफाई करते रहो क्योंकि सफाई के बिना खुशहाल नहीं बनेंगे। कमाई के बिना खुशहाल नहीं रहेंगे। इसलिए सच्ची दीवाली मनाने के लिये दिन-रात स्वप्न, चाहे संकल्प में सच्ची कमाई करते चलो। इसके लिए अन्तर्मन में शान्ति की ज्योत जगाओ, साथ-साथ ज्योत से ज्योत जगती रहे, ऐसा संग और सहयोग दो क्योंकि संग का रंग लगता है। अभी भगवान हमारा साथी है, हम अकेले नहीं हैं। दुनियावी सम्बन्ध में होते बन्धन-मुक्त हैं क्योंकि बाप से सम्बन्ध होने से बन्धन-मुक्त, जीवन-मुक्त हैं। जीवन जीते हैं पर मुक्त हैं। तो इतनी अच्छी संकल्प की क्वालिटी हो।

प्रश्न:-172- भगवान से बातें करनी हों तो क्या करें?

उत्तर:-172- भगवान से बातें करनी हैं तो और बातें सुनना बन्द कर दो। भगवान जो सुनाता है, वही सुनो, वही बोलो। बाकी और कोई बातें न करनी हैं, न सुननी हैं। जो यह ध्यान रखता है वह भगवान से बातें करना सीख जाता है। भगवान उसकी बातों को सुनता है, उत्तर भी देता है।

प्रश्न:-173- ईश्वरीय पढ़ाई की मुख्य तीन धारणाएँ कौन-सी हैं?

उत्तर:-173- आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार – तीनों को अपने में देखो। जैसे चार सबजेक्ट हैं, वैसे ये तीन धारणायें हैं। आज्ञाकारी सदा ही हल्का रहता है, भारी नहीं होता है। जो श्रीमत पर चलता है वह थकता नहीं है। बाबा जो महावाक्य उच्चारण करते हैं उन्हें कान सुनते हैं। इन बातों को भूल और क्या बातें याद करें! दौड़ का घोड़ा अपनी लाइन में चलता है। घोड़े कैसे दौड़ते हैं, टक्कर नहीं खाते हैं। ध्यान है, मुझे दौड़कर पहुंचना है, पीछे नहीं रहना है। आज्ञाकारी वह बनता है जो वफादार है। एक बाबा दूसरा न कोई। आज्ञाकारी

और वफादार स्वत: ईमानदार होता है। एक कौड़ी भी इधर-उधर नहीं करेगा। आज्ञाकारी के सिर पर बाप का हाथ है। वफादार है तो बाबा को विश्वास है कि कहाँ भी इसकी बुद्धि लटकेगी, चटकेगी नहीं। जीवन-यात्रा में बुद्धि कहाँ लटकी है या मेरे पीछे कोई लटकता है, तो आदत खराब है। लटकने वाले पर बाबा को दया नहीं आती है, क्षमा नहीं करता है। बाबा कहते हैं, याद अव्यभिचारी हो। पतिव्रत, पितावत में रहे। कैसी भी परीक्षा आये, पितावत में आज्ञाकारी है, सतीव्रत में ईमानदार, वफादार है। जितना ज्ञान की गहराई में जाएँगे, उतना योगयुक्त रहेंगे। बाबा के शब्द सिर्फ दोहराने नहीं हैं। उन पर हमें चलते हुए देख सबके लिए चलना सरल हो जायेगा। ईमानदार हैं तभी ट्रस्टी बन सकते हैं। बाबा ने माताओं को ट्रस्टी बनाया, खुद न्यारा हो गया। बाबा भी विदेही और ट्रस्टी रहा। कारोबार, संबंध में ट्रस्टी, मेरा कुछ नहीं है। बाबा में तिनके मात्र भी मेरापन नहीं है।

प्रश्न:-174- आशीर्वाद और दुआएँ कब मिलते हैं?

उत्तर:-174- गीता में भगवान ने कहा है, तुम्हें मैं दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि देता हूँ जिससे तुम मुझे जान-पहचान सकते हो। तो बुद्धि को, दृष्टि को देखो, कितनी दिव्य बनी है? किसी भी विषय में नम्बर कम न हों तो बाबा की आशीर्वाद मिलती है। फिर लाइट रहकर माइट खींचते हैं, लाइट हाउस बन जाते हैं। हाँ जी कहा, काम हो गया। हम कुछ नहीं करते हैं, सबका सहयोग करा रहा है। एक है आशीर्वाद, दूसरी हैं दुआयें। दोनों इकट्ठे हो गए। जिसकी सेवा की उसकी दुआयें, बाबा की आशीर्वाद इसलिए मेहनत नहीं है। दिल से, प्यार से सेवा करते दुआयें मिल रही हैं। हिम्मत हमारी, मदद बाप की, सहयोग सबका। सदा श्रीमत पालन करने वाले को प्यार भी मिलता है, आशीर्वाद भी मिलता है और दुआयें भी मिलती हैं। फिर बाबा के बाजू में बैठो तो शक्ति आती है। सामने बैठो तो कैसी स्थिति है! भाग्यवान हूँ, किसके सामने बैठी हूँ! बाबा ऐसी दृष्टि दे रहे हैं जो शरीर ही भूल गया। बाजू में बिठाया तो शक्ति आ

गई, अशरीरी बन गये। फिर है सकाश। बाबा की सकाश कितना बड़ा कार्य करा रही है। सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है। मैंपन के अभिमान से और मेरा-मेरा से मुक्त हो गये हैं। कइयों के संकल्प, वाणी या कर्म इच्छा, ममता वाले हैं। इच्छायें रखना अच्छा नहीं है। ज्ञानी तू आत्मा माना ही इच्छा मात्रम् अविद्या।

प्रश्न:-175- किसी का भी ध्यान हमारी देह में ना जाए, क्या करें?

उत्तर:-175- बाबा कहते हैं, बच्चों को लगावमुक्त बनना है। अगर थोड़ा भी लगाव किसी व्यक्ति, वैभव से है या किसी का हम में मोह है तो यह भी हमारी कमी है। अभी तक मैं देही-अभिमानी स्थिति में नहीं हूँ, तभी उसका ध्यान मेरी देह में जाता है। तो देही अभिमानी स्थिति में रहने से बाबा याद रहेंगे। दूसरा कोई मेरी देह को याद नहीं करेगा। अगर कोई मेरी देह को याद करता है तो बुद्धि वहाँ खिंच जायेगी, फिर याद में मेहनत करनी पड़ेगी। तो कोई भी देहधारी मेरी बुद्धि को खींचे नहीं। सेवा कितनी भी करो, बुद्धि सालिम रहे। एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में सिवाए एक बाबा के और कुछ भी याद न हो। कोई भी कारण हो, कोई भी परिस्थिति हो लेकिन, बाबा की शक्तिशाली याद परिस्थिति को दूर कर देती है।

प्रश्न:-176- सच्चा व्रत कौन-सा है?

उत्तर:-176- भक्ति में व्रत का बहुत महत्व है। कोई-कोई व्रत बहुत अच्छा रखते हैं। हमारा व्रत है पवित्रता का, श्रेष्ठ संकल्प का व्रत है। ऐसा व्रत हमारी वृत्ति को सदा के लिए बदल देता है। पवित्रता से वृत्ति शान्त हो जाती है। ज़रा भी पवित्रता की कमी है तो सच्ची शान्ति का अनुभव नहीं होगा। जैसे बाबा ज्ञान, प्रेम, शान्ति, पवित्रता के टावर हैं, ऐसे हमें भी टावर बनना है। टावर ऊंचा होता है, ये चारों बातें भी हमको ऊंच ले जाती हैं। लेकिन नींव है पवित्रता इसलिए बाबा हम सबको व्यर्थ संकल्प की अपवित्रता को भी समाप्त करने की शिक्षायें दे रहे हैं। सदा शुद्ध संकल्प हों। संकल्प में स्वच्छता, नि:स्वार्थ

भाव और सेवा में निष्काम भावना हो।

प्रश्न:-177- आगे बढ़ने के लिए संगमयुग का पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर:-177- कोई किसी की शिकायत करता है तो मैं सुनती नहीं हूँ। उनको भी पता है, यह सुनेगी नहीं। मैं कहूँगी, उसकी विशेषता देखो। तो यह अभ्यास करके निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति बनाना समझदार का काम है। पुरुषार्थ क्या है? सच्चा रहना, हल्का रहना, मीठा रहना। सच्चा और हल्का माना कोई बोझ नहीं। मैं किसी के लिए बोझ हूँ या मेरे ऊपर कुछ बोझ है तो हल्केपन का अनुभव नहीं होगा। अभी अच्छा करेंगे तो कल अच्छा ही होगा, ड्रामा में नूँधा हुआ है, कराने वाले बाबा बैठे हैं। कोई भी काम एक्यूरेट होता रहे तो बेफिकर बादशाह हैं। हाँ, मेरी स्थिति ऐसी हो जो आज भी बाबा देखे तो मुझे प्यार करे। सभी ईश्वरीय परिवार वालों से प्यार पाऊँ, यह फिकर हो। तो ऐसी स्थिति बनानी है, नहीं बनी है तो दिन-रात यही काम करो। यह लगन से होगा। जहाँ थोड़ा भी लगाव होगा, सफलता नहीं होगी। न मैं किसकी शिकायत करूँ, न मेरी कोई शिकायत करे, यह स्थिति हो।

प्रश्न:-178- मतभेद क्यों होता है?

उत्तर:-178- सच्चाई एकता में ले आती है। थोड़ा भी भेदभाव या मतभेद है तो सच्चाई नहीं है। तो सच्चाई से एकता में आ जायें। एकता के लिए समझें कि हम एक बाप के बच्चे बहन-भाई हैं, तेरा-मेरा नहीं है। मैं पदमापदम भाग्यशाली हूँ, जो मेरे को न कोई सेन्टर है, न कोई ज़ोन है, न कोई स्टूडेन्ट है, फ्री हूँ। मैं टीचर भी नहीं हूँ। बाप, शिक्षक, सतगुरु वे हैं। पहले बाप का सच्चा बच्चा बनूं। सच्चा माना पक्का, कभी संशय न आए। निश्चयबुद्धि विजयन्ती। यह क्यों हुआ, क्या हुआ.. कोई क्वेश्चन नहीं। ऐसे निश्चयबुद्धि, सच्ची भावना वाले पुरुषार्थी मनमत, परमत के प्रभाव, दबाव से मुक्त रहते हैं। श्रीमत बंधनमुक्त, जीवनमुक्त बना देती है। श्रीमत वन्डरफुल है। श्रीमत से योगी फिर सहयोगी।

प्रश्न:-179- बाबा किन बच्चों पर कुर्बान जाता है?

उत्तर:-179- किसी की कोई भी समस्या हो, उसका समाधान हमारी उपस्थिति से हो जाए। समस्या भारी कर देती है, समाधान हल्का कर देता है। ऐसी स्थिति बनाने की लगन हो। ऐसे बच्चों पर बाबा कुर्बान जाते हैं। उन्हें बाबा से बहुत अच्छी फीलिंग आयेगी। भले बाबा सभा में सुना रहे होंगे पर ऐसे लगेगा, मुझसे पर्सनल बात कर रहे हैं। एक भी शब्द मिस नहीं होगा।

प्रश्न:-180- रूहानी शक्ति जमा करने का तरीका क्या है?

उत्तर:-180- मेरा जी चाहता है, शान्त रहूँ, शान्ति से काम लूँ। बाबा से प्यार और शक्ति जो मिली है वह काम कर रही है। बाबा के प्यार में शक्ति है। बाबा का समझदार बच्चा वो जो प्यार और शक्ति से काम ले, इस दुनिया की आवाज़ों से पार रहे। दु:खधाम से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, दु:खधाम हमारे लिये खत्म हो गया। शान्तिधाम से सुखधाम फिर शान्तिधाम... यह रिहर्सल करते रहो। कभी भी कोई भी बात का ज़रा भी दु:ख महसूस हुआ तो शान्तिधाम की शान्ति अन्दर काम नहीं करेगी इसलिए न दु:ख लेना, न दु:ख देना। अगर दु:ख लेंगे तो फिर वही देंगे भी। आवाज़ में वो प्यार और शक्ति नहीं रहेगी। कुछ भी हो जाये, दु:ख न हो। बाबा के प्यार की शक्ति आज तक काम में आ रही है। एक बाबा से ही प्यार करें तो शक्ति जमा होती है, काम आती है।

प्रश्न:-181- आप अपनी आत्म-अभिमानी स्थिति का अनुभव सुनाइये?

उत्तर:-181- वृद्ध होते हैं तो स्मरण शक्ति कम हो जाती है, मेरी तो स्मरण शक्ति अच्छी हो गई है। भाषण नहीं कर सकती हूँ। मैं लेखक भी नहीं हूँ पर हिम्मत बहुत है। इसमें मदद भगवान की है। पहले हिम्मत हमारी फिर मदद उसकी। मुझे शरीर से न्यारा, प्रभु का प्यारा बनने में शक्ति बहुत मिली है। शरीर के जो सम्बन्धी हैं ना, कोई भान नहीं है। न उनको भान है, यह हमारी बहन है या...। इसको कहा जाता है आत्म-अभिमानी। ब्रह्मा बाबा के द्वारा जब मैं सुनती थी तो मैं नोट्स नहीं लेती थी, ध्यान से सुनती थी, फिर

अनुभूति से शक्ति मिलती गयी। जीवन की सच्चाई क्या है, वो बात पक्की हुई और रूहानी जीवन-यात्रा शुरू हो गयी। कोई बात मुश्किल नहीं। सोचने से मुश्किल है, सोचने से छोटी बात बड़ी हो जाती है, फिर मुरझाना शुरू हो जाता है। परन्तु हमको भगवान ने सिखाया है, बड़ी बात भी छोटी कर दो। कुछ नहीं है, नहीं सुनो। कुछ नहीं है, यह अभ्यास चाहिए। तो कमाल है आत्म-अभिमानी रहने की।

प्रश्न:-182- आपके दिल में क्या है, आपके उद्‌गार जानना चाहते हैं?

उत्तर:-182- अभी जी चाहता है, बाबा का हर बच्चा और बातों से मुक्त हो करके, हर समय, हर संकल्प में बाबा क्या कर रहे हैं, करा रहे हैं, यह प्रभु-लीला देखे। सेवा क्या है? प्रभु-लीला देखना। अहो प्रभु! आपकी लीला...। हे भगवन्! आप मेरे भाग्यविधाता हो! मैं क्या बताऊं, किन शब्दों में बताऊं...। बस, जी चाहता है, बाबा, आपके लव में लीन हुई रहूँ। थैंक्यू बाबा, थैंक्यू मेरा ईश्वरीय परिवार। जी चाहता है, बाबा जो इतने उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ा रहे हैं, सब मेरे भाई-बहनें ऐसे उड़ते रहें क्योंकि अभी चढ़ती कला का समय भी पूरा हुआ, अभी उड़ने की घड़ी है ना, इसलिए उड़ते रहो, उड़ाते रहो।

प्रश्न:-183- दवा क्या है, दुआ क्या है?

उत्तर:-183- स्व-चिंतन करना, यह दवा है। सबके लिये शुभचिंतक रहना, यह दुआ है। मैंने देखा है, धीरज का बहुत महत्व है, जितना धीरज धरो तो मन स्वत: शान्त रहता है, धीरज मीठा बनाता है। दिल में कोई बात नहीं, दिल साफ है तभी जीना अच्छा हो सकता है। भगवान ने जो सच्चाई सिखाई है उससे सब काम सहज हो जाते हैं। मैं कोई गुरु नहीं हूँ जो चेले बनाऊं, बाबा ने कोई चेले नहीं बनाये हैं। परमात्मा मेरा बाप है, मेरा टीचर है, सतगुरु है। जैसे सिखाया है उस पर चलने से बहुत बल मिला है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है इसलिए मेरे से कोई गलत काम हो नहीं सकता। मेरा साहेब मेरे ऊपर राज़ी रहे, जब यह लक्ष्य है तो ऐसे लक्षण आते हैं।

प्रश्नः-184- भाग्यवान की निशानी क्या होगी?

उत्तरः-184- बार-बार श्वासों-श्वास अभ्यास चलता रहे कि मैं आत्मा हूँ। मैं आत्मा हूँ तो बाबा की हूँ। पहला पाठ, मैं आत्मा हूँ, दूसरा पाठ, मैं बाबा की हूँ। दोनों का सम्बन्ध है। चेक करना है, ऐसी याददाश्त है? याद मेरी स्वाभाविक है या करनी पड़ती है? भाग्यवान वो जिसको किसी का अवगुण न दिखाई दे। यह अपना रिकार्ड हो। चार्ट है योग का, रिकार्ड है सम्बन्ध में आते हुए गुणग्राही बनकर रहना क्योंकि अभी मुझे सर्वगुण सम्पन्न बनना है। बाबा कहे, जो ईश्वर के गुण हैं, वर्से में ले लो। बाबा ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर हैं। बाबा सागर है तो तुम उसका स्वरूप बन जाओ।

प्रश्नः-185- महिमा योग्य बनने के लिए कौन-सा महीन पुरुषार्थ चाहिए?

उत्तरः-185- यह क्या करता, यह क्या करता... इस चिंतन से मन-बुद्धि मुक्त रहें क्योंकि उसमें हमारा क्या जाता है? वह क्या करता है, यह देखना बड़ी भूल है। फलाने ने यह किया, वो किया... यह बताना तुम्हारी ड्यूटी नहीं है। जो हो रहा है, अच्छा है, जो होगा, अच्छा होगा, यह अन्दर में गारंटी है। मैं तो प्रभु-लीला देख रही हूँ। कैसे बाबा ने इतनी सुन्दर रचना रची है! हरेक को खटिया, कुटिया मिलती है, खाना मिलता है, बनाने वाले बनाते हैं, खिलाने वाले खिलाते हैं। बाबा ऊपर में बैठ यहाँ-वहाँ सब देख रहे हैं। बाबा की दृष्टि में इतनी ताकत है, जो हमारी वृत्ति-स्मृति भी श्रेष्ठ बनती जा रही है क्योंकि बाप, टीचर, सतगुरु है। जब से शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा का रथ लिया, तब से ब्रह्माबाबा को तो यही लगन रही कि जैसे शिवबाबा ने मुझे उच्चतम बनाया है, ब्रह्मावत्स भी बनें। महिमा योग्य बनने के लिये महीन जिगरी पुरुषार्थ चाहिए। समय निकाल के एकांत में बैठ एकाग्रता से योग करो, सारा समय व्यस्त नहीं रहो। किसी भी कार्य के लिए कोई निमित्त बनता है तो उसे उसका बहुत अच्छा फल मिलता है, पहले भी, बाद में भी। इसके लिए अन्तर्मुखी हो एकाग्रता की शक्ति से खुद को और बाप को पहचानो, उसके बिगर यह नहीं होगा।

प्रश्न:-186- सर्वशक्तिवान की शक्ति किस रूप में हाजिर रहती है?

उत्तर:-186- ज्ञान, योग, धारणा और सेवा, इन चारों में से किसी में भी कमी न हो। मैं एक-एक मिनट या कुछ सेकेण्ड भी बीच-बीच में शान्त रहती हूँ। हमारी ऐसी पीसफुल लाइफ सदा कैसे रही है? जब सर्वशक्तिवान का बच्चा हूँ तो कार्य-व्यवहार में, सम्बन्ध में बाबा हमारा साथी है, आठों शक्तियाँ भी साथ हैं, हाज़िर हैं। अष्ट शक्तियाँ मेरे सामने हाज़िर न रहें तो किसके सामने होंगी? ऐसे ही वैल्यूज़ हैं। सर्वशक्तिवान की शक्ति वैल्यूज़ के रूप में मेरे सामने हाज़िर रहे, यह शान है। अपनी किसी नेचर (स्वभाव) के वश नहीं रहना। जैसे रात को देर से सोना फिर सुबह को समय पर न उठना, यह शोभा नहीं है। ऐसे जीवन की कीमत नहीं है। अमूल्य जीवन तो अभी बनेगा। बाबा कहते हैं, प्रत्यक्षफल यह है कि योगी की चाल-चलन सेवा करती है। सेवा में इतना व्यस्त नहीं हैं जो प्रैक्टिकल चेहरे-चलन से सेवा न करें। साक्षी हो देखें तो बाबा का हर एक बच्चा कोई न कोई सेवा करता है। मैं कुछ नहीं करती हूँ परन्तु खुश होती हूँ, सब कर रहे हैं।

प्रश्न:-187- शिव बाबा से प्यार का सबूत क्या है?

उत्तर:-187- जितना बाबा से कनेक्शन होगा उतनी करेन्ट आती है जैसे बिजली की करेन्ट एकदम पकड़ लेती है। हममें इतनी करेन्ट हो जो कोई भी नज़दीक आये, उसको भी करन्ट आ जाये। ऐसे जो शब्द हैं ना, उनकी गहराई में जाते हैं। कनेक्शन बुद्धि की लाइन क्लीयर करता है। मेरे प्रति किसी आत्मा की असन्तुष्टि है और मैं उसकी परवाह न करूँ, तो यह भी भूल है इसलिए सब सन्तुष्ट रहें। **सिर्फ सफाई, सादगी, सच्चाई की नकल करो, इसी से कशिश होगी।** बाबा से प्यार माना जो बाबा ने कहा है, वही किया है। अभी भी जो बाबा कहते हैं, वही करना है, यह बात अच्छी तरह से दिल में याद आ रही है। मैं आत्मा शरीर में हूँ, कैसी हूँ, कैसे यहाँ पहुँची हूँ, सम्भव नहीं लगता था, सम्भव हो गया, कुछ सोचे बिगर। बार-बार गुलजार दादी के शब्द याद आते हैं, जो

बाबा ने कहा है वही किया है। कैसे करूँ? या यह क्या करते हैं? यह कभी ख्याल नहीं आया है, तभी सेफ हूँ, साफ हूँ।

प्रश्न:-188- कोई नाराज न हो, इसके लिए क्या करना है?

उत्तर:-188- सारा दिन प्रभु को क्या पसंद आता है? वो समझो, वो करो, तो स्वत: आपको और दूसरों को अच्छा लगेगा। न अच्छा लगता है तो भी बिचारों का दोष नहीं है। कोई भी कारण से, कोई किसी से नाराज़ न हो जाये, उसके लिये शुभ भावना रखनी है। किसी भी तरीके से मुझे प्रभु पसंद बनना है। मेरी अपनी पसंद कुछ नहीं है। जो प्रभु को अच्छा लगता है वो सबको अच्छा लगेगा। उसमें भी कोई सतोगुणी होगा तो पूरा अच्छा लगेगा, रजोगुणी होगा तो थोड़ा लगेगा, तमोगुणी होगा तो नहीं लगेगा। इसमें मैं क्या करूँ? बाबा क्या करते हैं। ऐसे ही बैठे हैं जैसे पहले से बैठे हैं, समझते हुए भी ज़रा भी बाबा के चेहरे पर फर्क नहीं पड़ता है। तो करनकरावनहार बाबा का पार्ट वन्डरफुल है।

प्रश्न:-189- दुआएँ लेने के लिए क्या करें?

उत्तर:-189- मनुष्य को दो रोटी ही तो चाहिएँ, सादा कपड़ा पहनना और शिवबाबा के गुण गाना। सिर्फ गुण नहीं गाना पर ऐसा गुणवान, गायन योग्य बनना है। बाबा कहते हैं, मेरे बच्चे औरों की कमज़ोरी देखने में होशियार हैं, पर अपनी कमज़ोरी देखने में कमज़ोर हैं। चलो, जो बीता सो ड्रामा। सीख रहे हैं, सम्पूर्णता को पाने के लिए। अब से आगे शुभ चिंतन में रहना है, यह हमारे लिये दवाई है। अपने लिये अच्छी-अच्छी बातें चिंतन में ले लो, बाकी कोई चिंता नहीं करो। सबके लिये शुभचिंतक बनो। ईश्वरीय स्नेह का सहयोग दो तो दुआयें मिलती हैं। हमारा जीवन ऐसा हो जो औरों को भी अपना जीवन बनाना सहज लगे। त्याग और तपस्या के साथ कोई भी कार्य, कितना भी करो पर खुशी से करो, बोझा नहीं है। भगवान के घर का खाते हैं तो सेवा तो करनी ही है पर सी फादर, फॉलो फादर। धीरज सिखाए बिना मन शान्त नहीं होता, चूँ-चूँ करता ही रहेगा इसलिए मन को पहले सुधारना है। प्रेम से सबके साथ

व्यवहार करना है।

प्रश्न:-190- अलबेलेपन का कारण क्या है?

उत्तर:-190- घर जाने का समय है इसलिए अब कोई अलबेला न रहे। अलबेलापन छोड़ें, इसके लिए बाबा को कहती हूँ, कुछ करो ना बाबा। अलबेलेपन का भी कारण है ईर्ष्या, स्वमान की कमी, एक्यूरेट पुरुषार्थ करने की भावना नहीं है। तो यह ख्याल रहता है कि अभी नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे। समय थोड़ा है, पुरुषार्थ में नियमित रहना, यज्ञ मर्यादाओं अनुसार चलना तथा ईश्वरीय स्नेह से सहयोगी रहना भाग्य है। कारोबार में आते भारी न होना, यह भी भाग्य है। कोई बात है तो उसे बता के यानि स्पष्ट करके हल्के हो जाओ और कभी किसी के लिए भी ना उम्मीद न बनो। यह तो कभी नहीं सुधरेगा, यह ख्याल भी न आए, यह पाप है। संकल्प शुद्ध, श्रेष्ठ, हिम्मत वाला, उमंग वाला हो। हर एक का पार्ट अपना है। संगमयुग में, परिवर्तन होने के इस समय में चाहे तो कोई क्या से क्या बन सकता है, सबकुछ सम्भव है। मैं ज्ञान सूर्य का बच्चा 24 ही घण्टा चमकता हुआ सितारा हूँ। ऐसा सितारा ग्रहचारी उतारने वाला होता है, यदि नहीं चमकता है तो कुछ ग्रहचारी है। जैसे चन्द्रमा की चढ़ती कला, उतरती कला होती है, हर एक पूछे, मैं कौन?

प्रश्न:-191- पुराने स्वभाव-संस्कार से क्या नुकसान है?

उत्तर:-191- मैं निवेदन करती हूँ कि अपना कोई स्वभाव-संस्कार थोड़ा पुराना है तो उसे प्रयोग नहीं करो। आप उसे प्रयोग करते हो तो दूसरे की अच्छी भावना को प्रयोग नहीं कर सकते हो। अगर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी होंगे तो बदलने का ख्याल आयेगा। जो त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी नहीं हैं उन्हें, मुझे बदलना है, यह भावना नहीं है। यह बदले, ऐसा भाव दु:ख की लेन-देन करने वाला है। अच्छे वायब्रेशन रखो, अच्छी भावना रखो, उसका भण्डारा भरपूर हो। किसी का नाम, रूप, देश कुछ दिखाई न पड़े, कुछ याद न आये, यह नेचुरल स्थिति बनाओ तो ऐसी सेवा बाबा को अपने आप प्रत्यक्ष करेगी।

प्रश्न:-192- कौन-से एक शब्द में बहुत बल भरा है?

उत्तर:-192- सेवा करते स्थिति बनाने की अन्दर लगन हो। ज्वालामुखी योग माना अन्दर ही अन्दर ऐसी लगन हो जो मेरी स्थिति मज़बूत बने। कभी भी किसी भी कारण से परन्तु, किन्तु नहीं बोलें। स्थिति मज़बूत बनाने की अन्दर में जो भावना है उसे बाबा पूरी करते हैं। और तो कोई दुनियावी इच्छा है ही नहीं। मेरे को इच्छा यही है कि स्थिति अच्छी हो। बाकी यज्ञ मेरे बाबा का है सो मेरा है। सेवा दिल से, प्यार से करेंगे, कोई के भाव-स्वभाव में नहीं आयेंगे, सोचेंगे भी नहीं। किनारा नहीं करना है पर न्यारा रहना है। बात पूरी हुई, सेकेण्ड में आगे बढ़ो। मैंने देखा है, सच्चाई और प्रेम की भावना, कर्मयोगी अच्छा बनाती है। ज़रा भी सच्चाई में कमी न हो। गहराई में जाकर देखना है कि सच्चाई मेरे पास है? दिल में सच्चाई है तो साहेब राज़ी है। बाबा उन्हें निमित्त बनाके कई कार्य कराता है। स्वयं के पुरुषार्थ में, सेवा में सच्चाई से काम लेना है। और सब बातों को भले भूलो पर सच्चाई के इस एक शब्द को अच्छी तरह सुनो, समझो क्योंकि इसमें बहुत बल है।

प्रश्न:-193- सन्तुष्ट रहने में कौन-सी शक्तियाँ साथ देती हैं?

उत्तर:-193- बाबा ने नये साल में सदा सन्तुष्ट रहने की गिफ्ट दी है। सदा सन्तुष्ट वो रहता है जो रूहानियत में रहता है। सदा शान में रहता है, परेशान नहीं होता है। कितना महीन, सदा अतीन्द्रिय सुख में रहने वाला रास्ता बाबा ने दिखाया है। तो सदा सन्तुष्ट रहो। सन्तुष्ट न रहने का कारण सहनशक्ति नहीं है। सहनशक्ति तब आती है जब धीरज है। बाबा ने कहा है, सन्तुष्ट रहने में सब शक्तियां साथ देती हैं। पहले-पहले धीरज और सहनशक्ति बड़ा साथ देती हैं, फिर समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति – ये सब शक्तियां सन्तुष्ट रहने में मजबूत बनाती हैं। जब से बाबा के पास आये हैं, मरजीवा जन्म हुआ है, अलौकिक जन्म की खुशी है, उसमें सन्तुष्ट बहुत हैं। कोई भी कारण हमारी खुशी को गुम न करे।

प्रश्नः-194- मुश्किलें आसान करने का आसान तरीका बताइये?

उत्तरः-194- बातों को समेटके पवित्रता की शक्ति को बढ़ाते चलो। सेवा भी संकल्प की शुद्धि (पवित्रता की गहराई) से करो तो हल्के रहेंगे, खुश होंगे क्योंकि बिना सेवा के खुशी कहाँ से आयेगी? इस पुराने शरीर को भी भगवान ने पवित्रता की शक्ति से चलाया है। अन्तिम जन्म में बाप की श्रीमत पर चलने से हमारी अन्त मति सो गति अच्छी हो रही है। बाबा को नज़रों में रखते हैं तो और कोई बात नज़रों में नहीं आती है, बाबा को दिल में रखो तो और कोई बात दिल में नहीं आती है क्योंकि बाबा का बनने से एकदम दृष्टि, वृत्ति ऐसी हो जाती है जो और कुछ अच्छा नहीं लगता है। कितनी भी सेवा करो पर ऐसे नशे में रहो कि मैं कौन हूँ? किसकी हूँ? उसके अन्दर का हाल बहुत अच्छा है। कभी क्या करूँ, कैसे करूँ, टू मच है... ऐसी भाषा बोलने वाले को बेहाल कहा जाता है। बाबा की नज़रों से सब ठीक हो जाता है, जो उसके नजदीक आता है वो भी निहाल हो जाता है, तो ऐसे नज़र से निहाल करने वाले को स्वामी कहा जाता है। सब भाई-बहनों प्रति मेरी भावना है कि सब सेवा करें लेकिन अन्दर ही अन्दर जो बाबा ने हमको अपना बनाके मुसकराना सिखाया है वो भूलें नहीं, उसकी प्रैक्टिस रह न जाए। कोई बात में मुश्किल आयेगी तो भी मुसकराने की प्रैक्टिस से सब मुश्किलें आसान हो जाती हैं। हर समय सेवा करते, मुसकराते रहो। ऐसे बाबा को याद करने से सुख मिलता इलाही है।

प्रश्नः-195- भाग्यवान की निशानी क्या होगी?

उत्तरः-195- बार-बार श्वासों-श्वास अभ्यास चलता रहे कि मैं आत्मा हूँ। मैं आत्मा हूँ तो बाबा की हूँ। पहला पाठ, मैं आत्मा हूँ, दूसरा पाठ, मैं बाबा की हूँ। दोनों का सम्बन्ध है। चेक करना है, ऐसी याददाश्त है? याद मेरी स्वाभाविक है या करनी पड़ती है? भाग्यवान वो जिसको किसी का अवगुण न दिखाई दे। यह अपना रिकार्ड हो। चार्ट है योग

का, रिकार्ड है सम्बन्ध में आते हुए गुणग्राही बनकर रहना क्योंकि अभी मुझे सर्वगुण सम्पन्न बनना है। बाबा कहे, जो ईश्वर के गुण हैं, वर्से में ले लो। बाबा ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर हैं। बाबा सागर हैं तो तुम उसका स्वरूप बन जाओ।

प्रश्न:-196- बाबा की चाहना क्या है?

उत्तर:-196- दुनिया सच की खोज में है, बाबा हमको कहते हैं, सच तो बिठो नच। सच्चे दिल के कारण योगी की दृष्टि महासुखकारी है। हर एक अपनी दृष्टि देखे, बदल रही है? शुरू में कहते थे, ओम मण्डली वालों की आंखों में जादू है। कौन-सा जादू है? हर एक देखो, कौन-सा जादू लगा है? देह, दुनिया को नहीं देखो, दिखाई नहीं पड़ती है। उसका हमारे ऊपर कोई असर नहीं हो सकता। उसे हमें बदलना है। ऐसी दृष्टि हो जो दुनिया बदल जाए। झूठ, हिंसा खत्म हो जाए। यह शक्ति सर्वशक्तिवान से मिली है। बाबा ज्ञान के सागर हैं, अनुभव करो। शान्ति के सागर, प्रेम के सागर हैं, पतित-पावन हैं। कैसी भी आत्मा है, पावन बना देते हैं। सर्वशक्तिवान हैं, अनुभव करो। सर्वशक्तिवान बाप हमको अपना बना करके कहते हैं, रहो संसार में पर मुसकराते रहो। बाबा सब देखते हैं, बच्चे क्या करते हैं। बाबा के पास टी.वी. है, उससे सब देखते हैं। एक बार जिसने बाबा कहा उसको बाबा छोड़ते नहीं हैं। बाबा चाहते हैं, मैं बच्चों को कंधे पर बिठाकर सारी दुनिया को दिखाऊं कि देखो मेरे बच्चे कौन हैं, कितना ईश्वरीय आकर्षण है इन में। यह ईश्वरीय आकर्षण सारी दुनिया से पार ले जाने वाला है।

प्रश्न:-197- बाबा को खुश करना है तो क्या करें?

उत्तर:-197- "मैं" का ज्ञान बड़ा मीठा है, ऐसे ही मैं नहीं कहते लेकिन अन्दर अपने को देखना है। किसी भी पुराने विचार या दूसरों के विचारों से हम नहीं चलेंगे। जो बाबा की श्रीमत है उसी अनुसार चलेंगे। बाबा की बनाई हुई दिनचर्या प्रमाण सुबह से रात्रि तक एक्यूरेट रहना, चलना, करना यह भी हम

सबकी शान है। जैसे याद में भोजन बनायें, वैसे याद में भोजन स्वीकार करें। डायरेक्शन को अमल में लाने वाले की नेचर सुन्दर बन जाती है क्योंकि यज्ञ के डायरेक्शन को प्रैक्टिकल में लाया। हमें अपनी प्रैक्टिकल चलन से दूसरों को सिखाना भी है। जिनके निमित्त हम बनेंगे वो भी फिर ऐसे ही करेंगे। अगर एक्यूरेट चलना चाहते हैं तो कोई बहाना न दें। जो बहाना देता है, बाबा को उससे यह फीलिंग नहीं आयेगी कि यह सच्चा बच्चा, अच्छा बच्चा है। जैसे बाबा सच्चे हैं, ऐसे बाबा को हम बच्चों से फीलिंग आए कि मेरा बच्चा, सच्चा बच्चा है। उस स्कूल में पढ़ाई में कोई इतना होशियार नहीं होता है तो कहते हैं, पीछे जाकर बैठो। यहाँ यह नहीं कह सकते हैं। इतने बाबा रहमदिल हैं, कभी नहीं कहेंगे कि यह निकम्मा बच्चा है। बाबा इतना बच्चों से प्यार करते हैं, तो बच्चे भी बाबा को इतना ही प्यार करें, बाबा के डायरेक्शन को अमल में लायें तो बाबा कितने खुश हो जायेंगे!

प्रश्नः-198- चार्ट में मुख्य बात क्या देखनी है?

उत्तरः-198- हम कहाँ रहते हैं? भगवान के दिल में, भगवान कहाँ रहते हैं? हमारे दिल में। अब इस तरह से अपना चार्ट देखने में खास टाइम की ज़रूरत नहीं है। मेरे को अगर कोई भी प्रकार का बाहर का मान, शान, पैसा कुछ भी मिलता है तो भी मैं बाबा के दिल में ही रहूँ, बाबा मेरे दिल में रहे। नहीं तो संगम पर आत्मा और परमात्मा की यह जो प्राप्ति है वो मिस होती है। बाबा की याद में रहने से, इस शरीर में आत्मा को बाबा चला रहा है। जिस तरह से बाबा ने चलाया है, उसी तरह का हमारा प्रैक्टिकल पुरुषार्थ है।

प्रश्नः-199- बाबा से सर्व सम्बन्धों में कमी होगी तो क्या नुकसान होगा?

उत्तरः-199- अगर ज़रा भी बाबा से सम्बन्ध में कमी है, तो वह कोई के अधीन बनता है या बनाता है, यह गहरी बात है। अधीन नहीं बनना है, एक बल एक भरोसे, एक के सहारे रहना है। दुनिया में रहते हुए, सब सम्बन्ध में रहते हुए, इन्सान का सहारा नहीं पकड़ना है। परन्तु कोई भी इमारत स्तम्भ के बिना नहीं

बनती है, हम कहें, ऐसे ही छत डल जाए, नहीं होगा, थोड़े समय के लिए स्तम्भ लगाने पड़ते हैं। हाँ, एक बार छत पड़ गई, दीवारें बना ली तो फिर उस स्तम्भ को निकाल देते हैं। सिर्फ इतना सहारा (सहयोग) देना या लेना है। निमित्त किसी को सहयोग देना या लेना यह भी समझ चाहिए। योगी सो सहयोगी हो जाते हैं। इसका मतलब कोई को अधीन नहीं बना रहे हैं पर भावना है कि बाबा के बच्चे इतने शानदार बन जायें जो फरिश्तों की महफिल लग जाए।

प्रश्न:-200- सब शक्तियाँ बाबा से लेनी हैं तो क्या करें?

उत्तर:-200- हमारी क्वीन मदर के शब्द हैं, मरना, झुकना, सीखना... ये शब्द सदा काम में आये हैं। मुझे मरना है। ऐसे नहीं, क्या सदा मैं ही मरूँ, हाँ मैं ही मरेंगी। जो बाबा ने सिखाया है वही करना है, इसमें धीरज रखने से कोई भी (व्यर्थ) संकल्प नहीं आता है। सब शक्तियाँ बाबा से लेनी हों तो धीरज धर मनुआ। जल्दी, उतावली नहीं करो। जो भी बातें सुनाई हैं वो न बिसरो और जो न काम की बातें हैं वो न याद करो।

प्रश्न:-201- खुशी कैसे बढ़ती है?

उत्तर:-201- बाबा ऐसे शब्दों में ज्ञान देते हैं जिनसे तीसरा नेत्र खुलने के साथ त्रिकालदर्शी भी बन जाते हैं। जब तक तीसरा नेत्र नहीं खुला है, बाबा के लव में लीन नहीं हुए हैं, तो बाबा के प्यार, बाबा की पालना, बाबा से जो प्राप्ति है उसकी अनुभूति नहीं होगी। बाबा से बहुत खज़ाने मिले हैं, जितने खुश रहो उतना खज़ाना बढ़ता जाता है। ज्ञान का मनन-चिंतन करो तो खुशी होती है और कोई बात चिंतन में नहीं लो। ड्रामा कहता है, अच्छा हो जायेगा। ड्रामा की नॉलेज बाबा दे रहे हैं, हर आत्मा का अपना पार्ट है, एक का पार्ट दूसरे से नहीं मिल सकता, हरेक छोटे-बड़े का अपना पार्ट है, बूढ़े-जवान का अपना पार्ट है। संगमयुग पर "मेरा बाबा" कहने का पार्ट भी हमारा ही है। ऐसा पुरुषार्थ करना है जो बाबा जैसे अच्छे बन जाएँ। माँ-बाप सामने बैठे हैं, अच्छी तरह से देखो, उनका कितना अच्छा चेहरा है। जितना सिम्पल बनो उतना कम खर्च बालानशीन।

हाथ खाली अच्छा लगता है, खिलाने वाले बाबा बैठे हैं। कई कहते हैं, बैंक से इतना ब्याज मिलता है, बहुत अच्छा। पर शरीर छूटेगा तब ब्याज याद आयेगा और यज्ञ में अगर सफल हो गया तो मैं बेफिक्र हूँ।

(गॉडलीवुड स्टूडियो में आयोजित टॉक शो के दौरान भ्राता रमेश शाह द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दादी जानकी और ब्र.कु.मोहिनी बहन (न्यूयार्क) द्वारा)

रमेश भाई – इस स्टूडियो का आपने उद्घाटन किया, इसके पीछे शिवबाबा की क्या योजना है और इस द्वारा भविष्य में किस तरह की सेवाओं की आप अपेक्षा रखते हैं?

जानकी दादी जी – सबकी शुभ भावना से जो यह स्टूडियो बना है, बहुत सेवा कर रहा है और करेगा। सारे विश्व को क्लीयर ऐसा अनुभव हो कि भुलाना चाहें तो भी भूले नहीं, बाकी भुलाने वाली बातों को याद न करें। दुनिया में मनुष्य कई बातें भुला नहीं सकते। हम विश्व के कोने-कोने को यह दृश्य दिखा सकते हैं कि अब समय यह है और इसलिए क्या करने का है। हरेक की आँख खुल जाये और बुद्धि अच्छी बन जाये, यह कार्य स्टूडियो के द्वारा होगा।

रमेश भाई – स्टूडियो का संचालन करने वालों को स्टूडियो की सेवाओं के संबंध में क्या भविष्य योजना बनानी चाहिए?

जानकी दादी जी – सब देशों के दैवी परिवार के यहाँ हाज़िर हैं। वंडर है, ऐसे समय पर उद्घाटन हो रहा है जो सारे देशों के सभी बच्चे हाज़िर हैं। अभी वो देखेंगे कि कैसे सेवार्थ बाबा ने यह साधन दिया है, खूब सेवा करेगा। प्लान बनाने की बात नहीं है, बना हुआ है। मुझे पता थोड़े ही था, ऐसा स्टूडियो बनेगा बाबा की सेवार्थ। कितना सुंदर सीन है और कितना सुंदर यह स्टूडियो है।

रमेश भाई – आपके हिसाब से भारत की ईश्वरीय सेवाओं को बढ़ाने में स्टूडियो का क्या योगदान रहेगा?

जानकी दादी जी – अहम भाव, वहम भाव थोड़ा भारत में ज्यादा है, वह मिटाने का काम यहाँ से होगा। ब्रह्माकुमारीज़ की क्लीयर पिक्चर नहीं है। मुझे एक भाई ने पूछा, यह गहराई का ज्ञान है। स्पष्ट समझ में आये, देखने में आये, उसके लिए क्या साधना करें। हमारे से बाबा ने इतनी साधना कराई है। इस

साधन द्वारा अहम और वहम खत्म हो जायेगा। क्या है, कैसा है, अभी तक वहम है, आंखें खुली नहीं हैं। जैसे हमारी आंखें भगवान ने खोलीं, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनाया, मेरी भावना है, सब ऐसे त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बन जायें। हमारा सारा भारत स्वर्ग बन जाये तो विश्व में सतयुग आ जाये।

रमेश भाई – आपके हिसाब से स्टूडियो की सेवाओं को आगे बढ़ाकर, उसे ईश्वरीय सेवा का मुख्य अंग बनाकर विश्व में प्रसिद्ध करने के लिए भारत के भाई-बहनों द्वारा क्या प्रयास होना चाहिए?

जानकी दादी जी – सारे भारत के भाई-बहनें स्टूडियो की सफलता के लिए पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। अभी तक रोज़ाना 1.5 करोड़ लोग बाबा का ज्ञान टेलिविजन द्वारा सुनते हैं, हमने लक्ष्य रखा है कि 15 करोड़ लोग बाबा का ज्ञान रोज़ टेलिविजन द्वारा सुन सकें। आपका, हमारा काम है योग लगाना, सबका काम है सहयोग देना। सारे विश्व में, भारत में इतनी सेवायें हुई हैं योग और सहयोग से। भाइयों के संकल्प में दृढ़ता बहुत है और हमारा स्नेह भरा सहयोग है। इन दो गुणों के आधार पर, जो कहेंगे, करके दिखायेंगे, आपने तो करके दिखाया है।

रमेश भाई – हमने नहीं करके दिखाया, बाबा ने निमित्त बनाया और आप दादियों ने शुभभावना रखकर हर बात में सहयोग दिया।

जानकी दादी जी – यह ईश्वर के पास गुप्त प्लान था, हमने उसके प्लान को प्रैक्टिकल देखा। पहले हम बहनों को निमित्त बनाया। आज भी बाबा ने कहा, शेर पर कोई सवारी नहीं है पर काम करने में शेरनियां हो, शक्तियाँ हो। आप भाई निमित्त बने हुए हो। पांडव हो। पांडव शक्ति सेना की कमाल है। बाबा ने भाग्य दिया है, आप सेवा करो, बाबा करा रहे हैं।

रमेश भाई – (मोहिनी बहन से) विदेश की ईश्वरीय सेवा में गॉडलीवुड स्टूडियो का क्या योगदान रहेगा? विदेश के भाई-बहनों की इससे क्या आशायें हैं?

मोहिनी बहन – मैं सर्वप्रथम आज के उद्घाटन के लिए आपको बहुत-बहुत मुबारक देती हूँ, ना केवल आपको बल्कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए भी यह बहुत बड़ा कदम है। पहले कल्पना थी, फिर दृढ़ संकल्प हुआ और आज वो प्रैक्टिकल में हुआ, इसके लिए बहुत-बहुत मुबारक। काफी समय से जैसा आपने बताया, दो वर्ष से स्टूडियो का निर्माण हो रहा है, तब से समय प्रति समय संदेश आता रहा और मैं समझती हूँ, सभी देशों में बहुत उमंग-उत्साह है। कई कारण हैं, एक तो यह कि हम सबका यहाँ पर आना होता है। पहले हम रिकॉर्डिंग भिन्न-भिन्न स्थानों पर करते थे। विदेश में भी हमने छोटे-छोटे स्टूडियो एक-दो कैमरे रखकर बनाये हैं। हमें पता चला गॉडलीवुड स्टूडियो के बारे में। पहले तो नाम कितना सुंदर है। हालीवुड, वालीवुड, गॉडलीवुड, नाम कितना सुंदर है। नाम में भी बहुत आकर्षण है और मुझे ऐसा लगता है कि सभी देशों में जो भी आर्टिस्ट हैं, जो भी प्रोजेक्ट बनायेंगे, वो तो चलेगा ही। यह नाम बहुत फेमस होगा, यह नाम पहले किसी ने नहीं सुना, बहुत यूनिक नाम है। हम सबका पूरा सहयोग रहेगा। गॉडलीवुड स्टूडियो वर्ल्ड फेमस हो, नंबर वन हो, इसके लिए विदेश के बहन-भाई काफी प्रयास करेंगे। वहाँ के मीडिया में ईस्ट और वेस्ट मिलकर कुछ ऐसे कार्यक्रम रिकॉर्ड करेंगे जिससे मैसेज फैलायेंगे। आशा रखती हूँ कि इसके लिए हम कुछ शार्टटर्म या लांगटर्म प्लैन बनायें। इसके लिए जिस समय पर, जब भी आवश्यकता होगी, हम पूरा सहयोग देंगे।

रमेश भाई – गॉडलीवुड स्टूडियो द्वारा भारत और विदेश दोनों मिलकर बाबा का नाम बहुत अच्छी रीति से बाला कर सकते हैं। अभी ए, बी और सी तीनों स्टूडियो का कार्य आरंभ हो जायेगा। हमने "एक मुलाकात" कार्यक्रम रिकॉर्ड किया है, जिसमें वीआईपी से इंटरव्यू लेते हैं और वे विश्व विद्यालय के बारे में अपने अनुभव बताते हैं। टी सीरीज के मालिक कृष्ण कुमार ने भी

यह कहा कि ऐसे एचडी वर्सन्स वाले स्टूडियो तो हमारे पास भी नहीं हैं। इस स्टूडियो से बने कार्यक्रम को हम आस्था, साधना, जी टीवी, पीस ऑफ माइंड और अन्य चैनल्स पर दे सकते हैं। हम चाहते हैं कि भारत तथा दुनिया की अन्य भाषाओं में भी, ईटीवी के क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रमों की तरह बाबा का कार्यक्रम भी आना चाहिए।

मोहिनी बहन – मैं आपको आश्वासन देती हूँ, हम गैरंटी करते हैं कि ऐसे प्रैक्टिकल में होगा।

दादी जानकी – भाग्य से ऐसा चांस मिलता है। यह सेवा नहीं है, ईश्वरीय स्नेह का सबूत है। दुनिया देख रही है, स्नेह और सहयोग की यह कमाल है।